मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रुपरेखा

Acc. No. 2188

द्वे लक्ष

डॉ. मोरेकर ग. दीक्षित, Ph. D.
पुरातत्त्व-विभाग
सागर विश्वविद्यालय

913.05421 Dik

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY
New Delhi
निवेदन

मथव प्रदेशीय पुरातत्त्व-विषयक पुस्तक में किये-प्रस्तुति के लिये विषयवस्त्र श्रद्धार्पणी अनुसरण है। कतिपय विचार बनाए तक प्रस्तुति समाप्त जाता था कि इस राज्य में कोई महानपरंपरा पूर्वार्थ बिद्वेश नहीं है, परंतु कुछ अंशों में इसका कारण पुरातत्त्व विभाग की यह वैयक्तिक नीति थी, जिसके द्वारा इस राज्य को दो प्रयत्न मंडलों में विभाजित कर दिया गया था और जिनके एक-से-एक दूसरे बहुत दूर पटना एवं पूर्णा में थे। हाल ही में उपचारयोग्य एवं समीति, पेंटर के विभाग में एक नये मंडल की स्थापना से इस विषय में आधुनिकीय नवीनता हुई।

विचारकों और वृद्धि विभागों के अधिकारियों को अपने क्षेत्रों में अपने कतिपय-भाग के साथ इस राज्य के पुरातत्त्वविभाग के समीचीन कार्य के लिये समय-साधन रहना था। अग्निकयम प्रारंभिक निरीक्षण के उपरान्त कतिपय ने पुरातात्त्विक अवकाशों की हर सष्य वांछा। राज्यसभा चार्ज करते ने पुरातन के हृदय राजवर्गीय एवं उनके ममतावादी पर एक लघु-विवरण प्रकट कर कल्पित राजवंश के संबंध में बहुत कुछ काम किया, कितना उनका कार्य मुख्यतः मिली-राजवंश और मध्यप्रदेश की उत्तरी सीमाओं तक ही सीमित रहा।

मानवाधिकार ने विचारकों के कई विविध विषयों के लिये विविध वर्गों के अधिकारियों को द्वारा इस दिशा में कोई विवेचन कार्य किया गया नहीं तत्काल होता। इस प्रावधान के पुरातत्त्व के सिद्धांत में इसका स्वरूप जो भी भावना है, वह निर्देशन उन विवरणों के नवीनता पहले से है, जो अपने सब्ज अन्य व्यक्तियों के विचार के प्रति छटा है। इसके अतिरिक्त नहीं कि पूर्वकालिक किस्मत मूले हीरानलाल के प्राकाशों में बड़ी समय में इस विषय का प्रकाश-दीप बनाना जाता। इतिहास तथा विरोधी विषयों में पुरातत्त्व के पूर्णांक की श्रेय खिला। इस प्रकार विवाद ने मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व के सिद्धांत में किये बहुत अध्यात्मिक विषय के कारण इस विषय की प्रकृति तथा सामाजिक रूप-रेखा के रूप में अधिक सहायता मिली। उनके कार्य की प्रकृति श्रीमान प्रज्ञान है कि इस पर्यावरण-शाला की अहंकारियों ने फिर-फूंकता के विषय में उनके अधिकार और किसी की जान नहीं था।

विद्यमान के रूप में इसविशेष विषय है कि भारतीय पुरातत्त्व विभाग के प्रथम मुख्य संचालक भी अमिताभ सोहने पत्रकार और उनके जनसंग्रह के लाभ के समय से इसका कार्य के एक महत्वपूर्ण अंश का अनुभव होता है। राजस्वीकरण के प्रमुख जानवरों के प्राचीन गौंड को, जिन्हें उन अनेक गृहायों में प्राप्त तथा किया गया प्राचीन चित्रों के समय की सुदृढ़ आधार पर मिलाया जा रहा। विशेष रूप से ये देश इतिहासकार थे। प्राचीन गौंड के केन्द्र प्रवाह के कारण किवा बहुत दीपक के प्रमुख गौंड को, किसी समय में इस नगरीय राजवंशीय के केन्द्र एवं संचालक गौंडों की अधिक सेवा प्राप्त है।
के वार्षिक विवरण प्रकाशित कर इस कार्य का अन्या आवश्यक है। वार्षिक विवरण प्रकाशित करने की दृष्टि से नामतर सशस्त्र देश में अब भी अवरोध है। किसी न्यूनाधिक रूप में यह कार्य संसाधन में करने वाले अधिकारियों की योग्यता पर निर्भर करता है और संसाधन के संबंधित मुद्रा-विभाग भी दूर है। बहुत से विविधता मुद्रा-वाला जाति के संबंध रखने वाले बैंक प्रस्तावित कर बहुमुखी सेवायें की हैं। इतिहास में, जो अबतक उपस्थित था, पं. जीजानलाल पांडे ने पूरा-प्रादर्श कराया की। उन्होंने समय समय पर बहुत से टैक्स, दान-पत्र एवं अन्य प्रारोध सामग्री प्रकाशित की और यह गर्व का विषय है कि अपनी अवस्था एवं सीमित कार्य-श्रेणी पर भी जो यह कार्य कर रहे हैं। भारत-सरकार ने कलजुरी-शेष दर्शन में अंकित बहुत से टैक्सों का एक विषय प्रकाशित किया उपयोगिता का सुनद्र विषय किया है और इस के लिये प्राथमिक लेखाविद्यालय प्रो॰ मिराजी जी अर्ध-मुद्रा और क्रिया जीयन नमो नहीं हो सकता, क्योंकि उन्होंने पहले ही भारतीय संस्कृति के विज्ञान अंगी विज्ञानता उपलब्ध विद्यालय एवं विभाग पर गवर्त्त-कार्य के प्रकाशन से बहुमुखी सेवायें की हैं। यथात्मक में शारदाभव, दत्तात्रय-गोविन्द-सरिता, मध्यप्रदेश-संशोधन-मण्डल एवं अन्य परिस्थित-वस्तुएं के द्वारा बहुत उपयोगी कार्य हुआ है, यथापि इसका कार्य-श्रेणी सीमित रहा है।

उनके प्रयासों के होते हुए भी, मध्यप्रदेश के पुरातन का वर्तमान रिस्कल अधिक असंतोष है। यथापि इस विषय की स्थान पर्यंत विद्यमान है, परंतु कुछ ऐसी विशेष बातों हैं, जो परिस्थिति एवं निरीक्षण की आवश्यकता रखते हैं। प्राप्त होनेगी इस नेतृत्व के माध्यम से उपस्थित हुए लेखक को जो कलिया क्षुद्रवा कार्यों को विश्वसनीय, गत्यरोगी तथा पथगति प्राप्त हुए हैं, उनके लिये शासकाधिकार अनुशस्त्र है। पाठकों के समुच्चय इस पुस्तक के रूप से मध्यप्रदेश के वर्तमान राजनीतिक सीमाओं ही हेतु लेखक की दृष्टि में रहे हैं, किन्तु मध्यप्रदेश में इस बात के न होते हुए ऐसे कलिया विवरणों के छुट जोने की सम्भावना है। मेरा उदेश्य एक स्पष्ट विषय के उपस्थित करने का है, जो ऐसी प्रारंभिक श्रेणी को आचरण पर उपस्थित निर्देश जा सके, भिन्न भिन्न संख्या आस्था के हेतु लेखन के रूप में किया गया है। समय प्रारंभ के परिप्रेक्ष्य में अनुसूचित प्रयोग बहु देश परिचयप और पर्यावरण प्रारंभ के परिप्रेक्ष्य न कर सकने से भी जानें तथा आश्रय का विषय नहीं। ऐतिहासिक और अन्य मूलों के लिये, इस छोटी पुस्तिका में आ गई हैं, मैं पाठकों से इस क्षेत्र में कार्य करने तथा अपने विषय रिश्ते के द्वारा ऐसे उद्देश्यों के दूर करने का आराध्य करता हूं। बालकुल इस पुस्तक की उद्देश्य ही यह है। पुरातनता, आधुनिक ऐतिह्यों, कमान लोकतंत्र और प्राचीन पुरातत्त्व जीवन में सामर्थ्य के छोटे-छोटे उद्देश्यों का प्रभाव करने को आभारित है और पाठकों का साक्षात्कार करने के प्रयास में कार्य करने की प्रेरणा मिल सकती, तो इस परिप्रेक्ष्य को पुराण तथा सादृश्य का। इस पुस्तक का विलक्षण लक्ष्य है कि इस पुरातत्त्वशिल्प विशेष उपयोगी की उपस्थित प्राप्ति की सामील की ओर इंगित करे और इसी प्रकार उसे जाना का निश्चित करने, संशोधन एवं विकास संबंध है। बड़े दूर की वाण है कि जयध्वनि की सरकार एवं विश्वविद्यालय दोनों ही इस सरकार की ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं और उनकी दृष्टि में पुरातन विभाग के केवल साधन का उपयोग।
पुस्तक के विषय प्रमाणपत्रक भूमिका लिखने की कुछ की है। मध्यप्रदेश में सबं साधन पुरातत्व की कृति से होनेवाले सिपुरियू-उत्तराखण्ड-कार्य के जन्मदिन व शुभदिन है। उन्होंने भी महापूर्व समाजशास्त्र या मनोविज्ञान या धार्मिकता या अन्य शास्त्र या हिंदू धर्म या इस्लाम या भास्कर्य या सागर विविध विभाग या पुरातत्व विभाग का स्थान भी है।

इस पुस्तक के संग्रह कई बातों के विषय में सुझे हनुमत सरकार के पुरातत्व-विभाग के वर्तमान महान्त श्री अमरदास घोष के साथ विचार-विविधता करने का शुभम निर्देश नहीं है। भारत सरकार के पुरातत्व-विभाग के सीतिन इस पुस्तक के कई विषय, जिनके व्यापक विभाग के अधिकारी में हैं, प्रकाशित हो सकते हैं। नागपुर विविध विभाग के अधीश्चर्क डॉ. पंद्रंगन ने वहाँ की तात्कालिक का उपयोग करने में मुख्य तंत्र सहायता दी, जिसके लिए आप उन्हें अपने संग्रह के अन्य अधिकारी श्री रोडे को धन्यवाद देता हूँ। सागर विविध विभाग के डॉ. चित्रणक अभिनवी-शास्त्र के अध्यायारण शास्त्र के द्वारा मध्यप्रदेश के प्रागैतिहासिक पुरातत्व के विविध तंत्रों पर उठाना परमाणु देते हुए हैं। वे सागर के निकट देखी नामक रंग-प्रकाश-प्रकाशन में उन्हें वाह करते हुए हैं। सागर के पाठकों की सुविधा का ध्यान रखकर तत्काल शास्त्रीय पत्थर, जिसमें हमारी भाषाविद्या रही है, का समस्त उपयोग में नहीं किया जा सका। महामहोपाध्याय श्री. वि. मिरामाता का वृद्धि अनुग्रहित हूँ, जिन्होंने मुसलमान अप्रकृतित तारा-शैलों के संघर्ष में मूलनाव और समाजिक प्रदान की। इसीमात्र वि. डॉ. शंकरप्रभाकर पाण्डेय ने भी इस कार्य का संग्रह-विचार-विभाग में मरी वही सहायता की है। अतएव उनका एवं महाकाव्य प्रतिभासाधन संग्रह-प्रकाशन में भी वही सहायता की है। उन्होंने 'आपराज' का विचार तथा 'बालिकार्थ' की मुद्रा प्रकाशित करने में सुझे सहायता दी है।

“भुधा” समाधृत ने काटा विज्ञान का ब्लॉक मेम्बर तथा दार्शनिक, व्यक्तित्व, अकादमिक तथा शिक्षा का आधुनिक रूप से आधारण है। उन्होंने 'आपराज' का विचार तथा 'बालिकार्थ' की मुद्रा प्रकाशित करने में सुझे सहायता दी है। भी. और विज्ञान, पुस्तक ने अधिकारी, पत्रिका, महाराष्ट्र, तथा महार इतिहास संग्रहालय मण्डल, पुस्तक ने भी इसीमात्र प्रसन्न मंडल-पत्रिका का व्यापक एवं कुछ अन्य व्यवस्था के मुद्रा की है। भारत संस्कृति के पुरातत्व विभाग तथा उपर्वन इन महानुभवों तथा संस्थाओं की सहायता के संबंध में इस पुस्तक के प्रकाशित कार्य दर्शन नहीं था। इस पुस्तक के प्रकाशित कार्य से दौरान, घटना दृष्टि बनाए, द्वारा पाँच सी साया का पुस्तक विभाग नहीं है अतएव उन्हें हेतु शंकर तथा संस्थाओं का अधीन राजनी हैं। सागर विविध विभाग के द्वारा भी इस प्रकार से समस्त आधिक सहायता मुख्य प्राप्त हुई है। पुस्तक ने आनंद सुधारणा के व्यवस्थापक वि-या. या.गृह, जिन्होंने सागर विविध विभाग दूर दौरों के कारण अेल्संग्रहित कार्य का भार बहुत हल्का किया है।

पुरातत्व विभाग
सागर विविध विभाग
15 जून 1954

मोरेश्वर मं. दंगेश्वर
भूमिका

मध्यप्रदेश के इतिहास और उसकी संस्कृति के अध्ययन प्रकाश न पडने के कारण हताश होकर कुछ लोगों ने यह धारणा बनाई कि ऐतिहासिक दृष्टि से उक्त प्रदेश का कोई महत्त्व नहीं है। सूर्यास्त एवं मानव-शास्त्र के अनुसार मध्यप्रदेश भारत का कल्याण है जहाँ उत्तर और दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम का समीक्षन स्वाभाविक था। प्राचीन इतिहास की रचनाओं में संदेह करते हैं कि मूर्ख, शासनाधि, गुरु-वाचकता के विकास में मध्यप्रदेश से ही लेन परिवर्तित थे। उन लोगों के चिह्न, लिखे तथा अंग्रेज़ इलेक्ट्रॉन: इसकी साधन देते हैं। यहाँ के कलाकूटि दंग के भारतीय इतिहास में गणपत्य भी प्राप्त कर दिया था। इन संकेतों से यह अनुमान होना चाहिए था कि यहाँ की दिनियों संस्कृति विशेषता एवं मनोरंजकता से विचित्र होती थी। फिर भी दुर्मिलवाती उपवर्तक धारणा दृढ़ ती हो गई। फलतः इस प्रदेश के इतिहास और सांस्कृतिक व्यवस्था की उपेक्षा होती रही। इसके अर्थ कारण हो सकते हैं। जिनका प्राकृति क्रम में विचार करना शायद अनावश्यक और अचरण्डस्ती होगा। तथापि इतिहास दो एक बातों का उल्लेख नहीं उचित प्रतीत होता है। इस प्रदेश में जहाँ की ग्रामीण तथा जमीनदार की अवधि से इसके ऑर्डर और क्राइड का भी किसी ने विशेष ध्यान न दिया। क्योंकि लोग कोई भी बिजेता किसी दिशा में यहाँ पदार्पण करता तिन्कु आंचलि तरह आरक्षित करना कोई विशेष विश्वास न होने के कारण यही सीमा-प्राकृतिक से अधिक दूर जाने के लिए उत्तराखंड न होता था। यहाँ की संभावना अधिक तथा वनजन पदार्थों से यथेष्ट लाभ उठाने के साथ उसकी प्राप्त न थे। इसके सिया यहाँ की जनता भी तितिरी-वितरी और बैतक्कुल्ल थी। यहाँ प्रायः किसी राज्य-वंश के पदार्पण अथवा निर्माण राजकुमार आकर वह जाते और उन्होंने जो कुछ मिल जाता उसी में संतुष्ट हो कर निवास किया। विश्वकोषों या ऐतिहासिक अवधारणाओं से ज्ञात और पीड़ित होकर कुछ स्वतंत्रता प्रदेश की आर्थिक शक्ति की दर्शन लेने थे। प्रदेश के चारों ओर मध्य एवं मध्यप्रदेश की रथयान होते तथा यहाँ की आर्थिक शक्ति की सीमा के कारण कोई ऐसा एक-छत साधारण यहाँ नहीं था। समय समय पर इस पर सीमांतर के आधार आकर्षते रहते थे। विश्व नहीं इन लोगों से वहाँ के आदित्य निर्माणों का सामाजिक समाज और उनकी संस्कृति अभितर सुरक्षित रहती थी। विश्व यहाँ छोटे बड़े अनेक राज्य विभिन्न कितने मध्यप्रदेश के सीमागण का इतिहास तबतु: आधुनिक काल से ही आरम्भ हुआ-सा प्रतीत होता है।

जो कुछ बोध हुए ऐतिहासिक शान प्राप्त करने साधन हमको मिलते हैं। वे भी ऐसे अर्थव्यवस्था का साधारण है के हर दृष्टि के विशेष प्रधान के बिना उन तक पहुँचना कठिन है। इस प्रदेश के शिशु-विश्वास में इतिहास की ऐसी अवधि की गयी है जिसके कारण ग्रामीण इतिहासियों की संख्या यहाँ बहुत कम है और न इतिहास के प्रारंभों का अनुरंग जाना ही सका।

स्वराज्य प्राप्त करने के प्रशासन हमारे आधुनिक शासकों का ध्यान इस और स्वाधीनता आकर्षित हुआ। भी द्वारकापीपार बी मूर्ख धिकता मंडो तथा इसके अधयात्मिक शासन संग्रह के उत्तराह, गुरुमाखबन, संक्षिप्त संस्कृति और स्वार्थ के साहित्य विवेचनायों के उपकरण को, जो मध्यान्तर हीरालाई, भी द्वारकापीपार राजा और भी. भारतीय विकास राजस्थान के प्रसारण करने, विधेयक अधिकार आयोजित किया गया। इतर विषय प्रदेश के शासन के आधुनिक मार उठाने की क्षण के हैं। अनेक विधेयक अभियान के विधेयक संरचन अथवा वार्षिक अन्वेषण का विवरण संरचन में प्रकाशित हो गया है। उनकी विशेष संगीत संगीत रिपोर्ट के प्रावधान प्रकाशन छपने जा रहा है। इन रिपोर्टों की
सामग्री से हमारे शान की तो अवश्य उजार हुई है किन्तु अभीतक मार्क वाली समस्या उत्तर करनेवाली सामग्री हलात न हो सकी। अतः है कि अन्तिम काल में प्रदेश के प्राचीन इतिहास पर तीन प्रकाश पड़ने लगे।

प्रदेश के स्थानी दिशा कम में जबतक इतिहास विश्व की यथेष्ठ स्थान न दिया जाय और शिखर जनता में इतिहास के तरीके अनुरंग उत्तर करने का प्रवाह न किया जाया तबतक सोया गोपालों और अन्याधिकारी की विलय करी रही और अन्याधिकार के मार्ग को स्पष्ट एवं पैदा तथा न हो सकीं। इन विषयों की प्रशंसा ध्वनि के विषय स्थान देनेके आवश्यकता है।

शासन और विश्वविद्यालय और कुछ विशेष तो गरे हैं या करे उसको देखने दिखाई। आवश्यकता यह वात की भी है की हमारे प्राचीन की सामान्य जनता की इसका शान कराया जाय कि यहाँ की ऐतिहासिक सामग्री की वश विरूपीत है। इसी उद्देश्य को सकल हमारे योग के सा। मोरेश दीक्षित ने प्रस्तुत पुस्तक का प्रणय किया है। जो मौलिक सामग्री पुस्तक पुस्तक, गुरुओं, पत्रिकाओं और लेखों में उत्तराधि: विजय पदा ची और दुस्पत्री शही उसकी बुद्धि अपने के स्थान पर संप्रभु कर दिया है। पूर्व-पश्चिम काले कल्चुरी राज्य काल तक की सामाजिक विशेष रूप से और अनुसंधान और मराठ के समय की साधारण रूप से प्रकट की गई है। इसमें प्रसांगिक अव्यावहारिक अवधेय, गुरुओं, विद्यालयों, तालमारों, सा। देव और हार्दिक की तात्कालिक समाचार है। जो नवजन अनुशासनी है उनके लिए मौलिक सामग्री की यथास्थिति और पूर्वी सुधारी न दी जा सकी। यदि ऐसा सम्बन्ध हो सकता तो पुस्तक की उपदेशा बहुत बड़ा जाती और अथवाय सरल एवं मुख्य हो जाता।

प्राचीन ऐतिहासिक सामग्री का संकलन अन्य अथवा काल के अनुसार किया गया है। यह जिस किताब बनो तथा भाषा का अथवाय करना चाहे तत्कालीन सामग्री उसके एक स्थान पर मिल जाय गा। भें यह उस पर उन्होंने प्रकारव जन-पद में प्राचीन सामग्री की सूची देने का निर्देश कर दिया। इस प्रकार की सूची उसलाही प्रकार अपने अन्यद अथवा निस्कर स्थान के अलावा प्राचीन होनेवाली सामग्री की मौलिक जाँच कर सकें जिससे उसके शान और स्थिति की हस्तिया होती रहेगी।

प्रस्तुत पुस्तक में आधारित शान सामग्री का संकलन हुआ है इससे यह न समापन चाहिए कि इसमें मध्यपश्चिमी सभी ऐतिहासिक सामग्री आयों के कुछ श्रेणी न रहा। श्रद्धाली सामग्री और सामग्री की और संबंधव: अभिक अन्याधिका का शान आकर्षित न हुआ होगा। यदि शिखर जन सक्तता अन्याधिकर करे तो बहुत से अधारित बाल शानाओं का पता लग सकता है किसी ऐतिहासिक शैली की खोई अथवा उत्तराधिकार जोड़ी आ सकती है और इतिहासकार यथेष्ठ प्रकाश पड़ सकेगा। प्रदेशवासियों का शान है जो के इस कार्य में निःशोक भाव पै और सहायता दे किसी उनके अपनी ऐतिहासिक विनम्रता और महत्त्व का स्थायी वाद न हो सके।

हिंदी भाषा और उपस्थित साहित्य के प्रेमियों को प्रस्तुत का आदर करना और उनसे श्राम उठाना चाहिए। आशा की द सकती है कि सागरी विश्वविद्यालय के तत्कालीन एवं अन्य योग्य और उपलब्धी अन्याधिका के द्वारा जो नवीन सामग्री प्राप्त होगी उसका स्मारक भाषा संकलन में हो सकेगा। विश्वविद्यालय अन्याधिकार कार्य के आधार पुस्त और बितूत करने की व्यवस्था कर रहा है। वातावरण रिपोर्टों में उनका विशेष निर्देश प्रकटित होता रहेगा।
इस पुस्तक का घृणा साहित्य, माया-विश्वास तथा आचार–विचार के अध्ययन से प्राप्त सामग्री को एकजित करना न था। यदि विद्वान अन्वेषक इस कार्य की पूर्ति करने का प्रयास करे तो, वह परिश्रम स्वतः होगा। प्रायः पुस्तक के दंग की भारतीय मानवों में ही नहीं, युरोपीय मानवों में भी बहुत कम मिलेगी। हिंदी साहित्य में तो यह अपने दंग की अर्थीय पुस्तक है। उसके प्रकाशन का गौरवपूर्ण अथवा मध्यप्रदेश की प्राप्त हुआ है। संभव है कि अन्य प्रदेशों को यह उत्ताह प्राप्त हो और वहाँ भी इसी के प्रकाशनों का प्रवेश किया जाय। हिंदी साहित्य को डाक्टर श्री मोहनबिहार दीक्षित जी ने पुस्तककार, जो यह उपहार दिया है उसके लिए वे वचनपाठ और बयांग्राह के आदरणीय पात्र है। आपहर है हिंदी संसार और विदेशियं: मध्यप्रदेश की संस्थाएं, और जनता इस देश का यथोचित समान करेंगे और उसके लाभ उठाएँगे।

सागर विद्वान

राममसाद त्रिपाठी
उपकुलपति, सागर विद्वान
मेरे समित्र
श्री. प्रभाकर वि. पाटणकर को
जिनके
जीवन धारा से मेरा जीवन प्रभावित
हुआ है।
अनुक्रमणिका

निवेदन
भूमिका
(१) इतिहासपूर्व काल 
(२) मैथि-काल 
(३) शातवाहन काल 
(४) गुस-वाशशाह काल 
(५) राप्तृक वंश 
(६) कल्पेशुरि वंश 
(७) यादव साधारण 
(८) धार्मिक जीवन 
(९) सुफ़्यं 
(१०) हुमे 

पुरातत्त्वेत्ता साहित्य की सूची 
पुरातत्त्वीय स्थलों की सूची 

चित्रों की सूची

चित्रफलक
१ इतिहासपूर्वकाल का व्हाल के हिस्से 
२ विचारित गाहर होंगावाल 
३ वहमाभाषी विभाग शब्दांश 
(१०) सिंघविर के गा.होंगालों में प्राती चित 
(११) 
४-५ मध्यप्रदेश में प्राती होंगावाले गाहरी 
६-७ दादालेख ताप्रापतिदी नया 
८-९ शिल्पकलाकार नया 
१० कल्पेशुरि देवालय 
११ कल्पेशुरि मुद्रा 
१२ यादव कालिन देवालय 
१३ यादव लेख सिके तथा अन्य मुद्राओं 
१४ मुसलमानी वाशु शिल्प 
(१०)
मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा

(१) इतिहासपूर्व काल
पूर्व-पापां-कालीन संस्कृतियाँ (Palæolithic Cultures)

मध्य प्रदेश के पुरातत्व का आरम्भ प्रागैतिहासिक तथा पुरातन पर मानवविवर्त-काल से मानना चाहिए। यह तो सर्वाधिक है कि अपनी आदिम अवधि में मनुष्य और अंतर, क्ष-जन में कुछ अंतर न था। वह परिस्थितियाँ जीवन व्यतीत करता था। वह क्ष-पशुओं के आँके अथवा काल-मूलक का अपने जीवन के निर्देशक तथा साम्राज्य से अंतर नहीं करता था। उसका परिचय कालीन अधिकृत: प्रागैतिहासिक खिंचवान एवं भोजन की संग्रहण थे। शायद वह इसका लोदने और न्यून पशुओं के मारने के लिए वह स्वाद तळों से ऐसे अभी हिंसा करता था, जिनका निर्माण नदियों में प्रास पार्थरों के दुवृक्ष कर, उन्हें अपने आकृति देकर किया जाता था। ऐसी अथवा ल्याक़र के बेठवाये या बिना बेट के रहते थे। आदिम व्यतीत के अतिल-श्रान के विच वर्त-काल को सामर्थ्य प्राप्त नहीं हो सकते हैं किन्तु कुछ भागों के अभिकाश प्राप्त होते हैं। उसके अति-वर्त शान्तियों में मिलकर एवं अभिकाश पत्तरों के उन भंव विहारों से दी होती है, जिन्हें वह स्वाद करता हुआ बाहर छोड़ दिया करता था।

इन भविष्यों का उपयोग के आधार पर प्रागैतिहासिक काल के अवधि की प्रारंभिक लालियाँ भी अवधियों को दो मार्ग में विभिन्न किया जा सकता है।

(१) पुर्व-पापां-काल (Old Stone Age)
(२) उत्तर-पापां-काल (New Stone Age)

अब यह सोचना स्वीकार ही है कि मनुष्य के विकास के इन विभिन्न स्थितियों के बीच बहुत समय का व्यावसाय रहा होगा। मध्यकाल आरे अवधि पूर्व धर्म के अवधि के अवरूप होने से पंख हजार कालों के पांडित्य उसके अव-निर्माण रहने का अनुमान किया जाता है।

पूर्व-पापां-काल के भविष्यों, जो ‘प्राचीन पापां-पापांकाल’ (Palæolithic Implement) कहलाते हैं, यह भारत के अन्य विभिन्न भागों में बिखेरे दिखे मिलते हैं। किन्तु इस मध्यप्रदेश में केवल कुछ ही स्थान ऐसे हैं, जहाँ ही उपलब्ध हुए हैं।

इस युग का विशेष भविष्यों, जिसे विना बेट या ल्याक़र के बेठ के साथ प्राप्त किया जाता था, भवि की ल्याक़र (Hand axe) था। इसे पत्र पदों के दुवृक्ष का धारण कर सकता था। इसके अति-रंग चश्मा-स्वरूप (Scrapers), काल-प्रसाध-प्रसाध (Bouchers) और अवधियों अनुपलक्ष प्रसाधाभी, (cores) जो प्रसाध-स्वरूप हैं, प्राप्त हुए हैं। इन भविष्यों के नाम उन स्थानों के नामों पर पड़े हैं, जहाँ वे सर्व प्रयास अंतर हुए हैं और इसी से उनकी समानता का घोष होता है।
पूर्व-पापाण-काल के मनुष्य का अधिकांश जीवन, उन परिस्थितियों पर निर्भर था, जिनमें वह रहता था। अतएव उनके हिप्यार अर्थबत्ता प्राचीन एवं प्राचीन नदियों की वाटियों में मिलते हैं। लोग की दृष्टि से मयाबेस्वर की स्थानीय नदियों का पर्यवेक्षण भी भौतिक नहीं था। तिथि शासित में यथापूर्व सत्य के भू-रूप-परिस्थितियों के अधिधिकारियों के कुछ द्वारा इस दिशा में कुछ कार्य तो किया गया है, तथापि यह उनका प्राप्त उद्देश्य इस दिशा से बोध न करता न था। इस भौतिक उनके द्वारा दिखे गये विचारों में जहाँ-कहाँ कुछ उलझा इस सम्राट में मिलते हैं और इस युग की जो भी बात हमें विचार होती है, वे उनकी की वाटियों का पर्यवेक्षण है।

इस प्रदेश की सबसे प्राचीन नदी नरसिंह दर से बहत्सी पूर्व-पापाण-कालन का संचालित कुलह्वियों (Hand axes) सन 1872 ई. 0 में नरसिंहपुर के निकट सुरत नामक प्राम में प्राणियों की हिल्यों के सहित पायी गयी है। ऐसी कुलह्वियों नरसिंह की वाटी के उत्तर में देवरी, खुल्लाई नाला, बुरोगा, केड़वार, बखुरा, संप्रामुर के पटर पर तथा दमोह के समीप भी पायी गयी है। सन् 19.29 ई. 0 में येल-सैंक्रिज-अभिनव के द्वारा ऐसे हिल्यों के समीक्ष तथा सूत्र-स्तरों के अध्ययन करने का विशेष प्रस्ताव किया गया था। वहाँ गाउँ और नरसिंहपुर के बीच में उभरते समय उन्हें बहते से हिल्या अपने मूल-स्थानों पर पिते थे। बनारस-हिन्दु-विद्वानों का कार्य उससे श्री मनोजलाल मिश्र ने भी हिल्यों के मिट्टे है। कुछ नमुनों का संचालित किया था। इस दुर्गापुर सागर-विशेषविद्वानों के द्वारा सन् 1953 ई. 0 में हिल्यों नामक प्राम के समीक्षु है। कुछ क्षेत्र में ची हिल्यों को नमाया था।

विद्वानों में वैशेषिक और ची हिल्यों के अपने स्थानों पर पूर्व-पापाण-कालन कुछ हिल्या प्राप्त हुए हैं। इन वर्णों में से हिल्यों निकटता विशेष निकटता है। पूर्व-पापाण-कालन के चित्रित गायड़ों में ची हिल्यों के बीच में रामबाबु श्री मनोजलाल मिश्र का भी ऐसी ही पाँच कुलह्वियों प्राप्त हुई थी। नागपुर-संप्रामुर में नागपुर के समीप किल्ले और मंडल के बीच में नसे मानवां से प्राप्त हुए दो हिल्या सुरक्षित है।

ये छेढ़ कुछ ही उदाहरण हैं। इन उदाहरणों के अतिक स्थानों में भी गल्प-काल का आवश्यकता है। विशेषता इस विचार से कि हमें, हमारे सबसे प्राचीन उन पूर्वजों के संस्कृतिक जीवन का अध्ययनात्मक प्राप्त हो सके, जो पूर्व-पापाण-कालन संसार में रहते थे।

उत्तर-पापाण-कालन संस्कृतियः
( Neolithic Culture )

पूर्व-पापाण तथा कुन्य-विधान आदि का वेदेष्ट समय होते ही पूर्व-पापाण-कालन आदि मानव पति का अपेक्षा अकुल समय के लिये किसी एक ही स्थान पर स्थित होकर जीवन-यापन करने लगा था। उधित व विशेष रूप में अधिक समय के लिये किसी एक ही स्थान पर अपना ची विवाह न बना सका, क्योंकि उस्तं वह प्राप्त हुआ कि उसकी कुन्य-भूमि किसी-किसीसे जीतने-पापने तो करते लगा था। किन्तु वह विशेष रूप में अधिक समय के लिये किसी एक ही स्थान पर अपना ची नवास न बना सका। क्योंकि उस्त वह प्राप्त हुआ कि उसकी कुन्य-भूमि किसी-किसीसे जीतने-पापने तो करते लगा था।
हथियारों के समान तोड़-रोककर न बनाये गये थे। इन नये हथियारों की आकृतियाँ पहले हथियारों की आकृतियों की अपेक्षा अधिक धूर्णी और रंगी-रोशक थी।

वस्तुतः उत्तर-पावण-काल के हथियार मध्यक्षेत्र में तो अपेक्षा संस्कृत में प्रात हुए हैं, किंतु यहाँ के उत्तरीय सौम्य स्थानों, मिंडौर की चारी तथा बौद्ध जिले में अधिक प्राप्त होते हैं। यह ननोहस्ताल विद्या ने हॉलोगार्ड से उत्तर-पावण-कालीन हथियारों (Celts) के प्राप्त होने का उल्लेख किया है और भारत-सरकार के मू-गर्म-पिरोश-विचार के संस्कृति मंत्रालय में भी कुछ ऐसे हथियार उल्लिखित हैं। इनमें से अधिकतम हथियार तहसील, सागर के निकटवर्ती गढ़ी मोहित, वहल का, तिहरा, गोमध, हुम्ब, रूढ़िवाल और कटनी के प्रायः सुन्दरका नामक स्थानों में प्राप्त हुए हैं। नंदगांव में अहुंडी के पास 'बेनी' टिला से एक छेद किया जा रहा पत्तर का शिरीर (Perforated Hammer stone) प्राप्त हुआ है, जो उत्तर-पावण-कुंभ का विशेष हथियार माना जाता है। ये हथियार इसे कुछ की यह भारत दिल्ली के मानते हैं। अनुमान इसे से कम से कम 5000 वर्ष से भी और पहले के हो सकते हैं। अथाहि मध्यक्षेत्र में उत्तर-पावण-काल पर बहुत कम कार्य किया गया है।

---

लघु-पावणांक्र
(Microlithic tools)

उत्तर-पावण-कुंभ में तकालीन मानव के द्वारा प्रायः विशिष्ट विभाग के बहुसंख्य हथियारों से उनकी नव रचना-शैलियों का परिचय मिलता है। ये अब अत्यावश्यक हैं। चाँद के फल के अखाड़े लेवे अन्ध (Long blades), अंत-फलक (Arrow-heads) और छेद करने के अख या दिशर (Burins) इत्यादि हथियार स्वाभाविक पत्तर जैसे अंतक (Agate), गोमध (Carnelian), गार (Quartz) और घूमो संदेश पत्तर (Chalcedony) से बनाये जाते थे। इन हथियारों के संबंध में यह एक विशेष बात है कि वे हम सभी स्थानों में, जहाँ उनका अभ्यास शिक्षा था, अधिक संख्या में उपलब्ध होते हैं।

मध्यक्षेत्र में इस काल की संख्या का सबसे अधिक अनुमान रचना का नवनाम 'बेडा शिमला' नाम की पहाड़ी है। मेघावट और नमेदा की कोई बड़ी बहुत से नवनाम तंत्रों में, जो सब संस्कृत ज्ञानि रेगुर (Regur) से बने हुए हैं, ऐसे अभ्यास मिलते हैं। नमेदा के उपनन-कार्य में भी बहुत से नमेदा प्राप्त हुए हैं। ये पावणांक्र पत्तरों के रूपान्तर प्रायः सभी विद्वान ग्रहण में मिलते हैं। कई स्थानों में तो ये बहुत संदर्भ ठंड से चित्रित किये गये अन्य ग्रहणों के साथ उपलब्ध होते हैं। पत्तरों की 'डीरी-डी' नाम दि सुन्दर में इन अलावों के साथ एक अन्य-पंजार भी प्राप्त हुआ था। बहुत से कई धाराओं ऐसे हथियार (Pigmy Flakes) जिनका उल्लेख कई आलोचकों ने पहले किया है, वास्तव में ऐसे सूचक-पावणांक्र हैं जिनका तत्व उन समय बिता न हो सका था।

अन्यत्र उचित परिचय के अभाव में केवल मध्यक्षेत्र के उत्तरीय जिलों में ही उनका पता चल पाया है। अभी तक उनके विषय में कोई भी विशेष उल्लेख विद्वान में नहीं मिला है।

बैद्ध रायगत भाषागत की बोलावालों से यह प्रकट होता है कि इन अलावों का उपयोग इस्तेमाल समस्त के आरम्भ तक होता रहा था, किंतु इसके काल का निश्चित रूपसे निर्णय नहीं किया जा सकता।
चित्तित-गहर
(Rock Shelters with Paintings)

मध्य प्रदेश में विन्यादि-चहाने छोटे छोटे गुफाओं के बनाने के लिये अभिक उपयुक्त हैं। प्रागैतिहासिक काल में, आदिम मनुष्य स्वभाव के इसी ही गुफाओं में आश्रय प्राप्त करता था। वह कभी कभी तो प्राकृतिक गहराओं ने और कभी कभी खोदकर बनाने हुई गुफाओं में आश्रय प्राप्त किया करता था। और बहुत कुछ कार्य न होने पर अपने अंतराल-काल के यापाने से वह अपनी डिस्क्रेशनस्ट्रू गुफाओं में कभी तो अपने देखे हुए प्राकृतिक दृश्यों और कभी गुफाओं के चित्र चित्रित करता था। मध्य प्रदेश में ऐसी बहुत सी गुफाएँ मिलती हैं, जो पुरातत्त्व के विद्वानों के अध्ययन के अनुसार अनुसंधान के लिये विशेष महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार की बहुत सी गुफाएँ पत्थरी स्थान के निकट हैं। इन गुफाओं में से लमबा चार्ज गृह योग तो ऐसे हैं जो विभिन्न प्रकार के चित्रों से सुसज्जित हैं। और यह चित्र करते हैं कि वे चार्ज गृह के मानव स्वयं के स्वयं स्वभाव के रूप में चित्रित करते हैं। ऐसी एक गुफा होंगामाबाद में है, जिसमें तपस्याधीन 'जीर्ण' का एक चित्र है। पत्थरी के तीस या चार्ज गृह योग चढ़ते हैं, जिसमें तपस्वी, सीता, मुक्तिक इत्यादि अपने चित्रों के निकट ऐसे कई चित्र हैं। इन चित्रों के अंतर्गत जो गुफाओं में चार्ज गृहयोग स्वयं स्वभाव के रूप में चित्रित किए जा रहे हैं, उनके पिताजी तथा सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इन गुफाओं के निर्माण समय के संबंध में मानाता है कि वे समय की सुखद या संघर्ष के स्वभाव से निर्मित नहीं किया जा सकता। अनुमानित है कि वे समय के उत्कर्ष से अनुसंधान का काल की भी नहीं है, तब उससे वह कोई चर्चा ही क्या है?

इन गुफाओं के जो विवरण श्री मनोरमन गोपाल को मंडिने ने दिये हैं, वे महत्वपूर्ण हैं। श्री. गोपालने उनके काल-निर्धारण के सम्बंध में बहुत उपयोगी चित्र किया है। महत्वपूर्ण स्थान है कि इन गुफाओं के विवरण के कारण, वर्तमान अनुसंधान के पक्ष के लिये इनके सर्वाधिक संचार पूर्ण करना है।

इन गुफाओं में विवरण श्री मनोरमन गोपाल को मंडिने ने दिये हैं, वे महत्वपूर्ण हैं। इन शान-स्थानों में राज्य के निर्माण के अंतर्गत गुफाओं के जो निर्माण किये गये हैं। इन गुफाओं में कालिक ऐसे शिखर में, जो विशालकाय चार्ज या जो दृश्यात्मक रूप में निर्माण किये गई हैं। इन आवासों के रचना के लिये चुनौतियाँ दीवालों की स्थापना पर विशाल प्रस्तर-खंड के प्रयोग में निर्माण किये गये हैं। इन आवासों की स्थापना करते हुए चुनौतियाँ दीवालों के स्थान पर विशाल प्रस्तर-खंड के प्रयोग में निर्माण किये गये हैं। इन आवासों के भीतर राजा एक दीवाल में बनाये गये एक चित्र द्वारा जीवन स्तर के साथ संयुक्त रूप से शासन स्थापना करते जा रहे थे। इस से उल्लोक इतिहास तथा अन्य प्रतिष्ठित केंद्रीय घटनाओं के बारे में सब कुछ जाना गया था।

1. शान्त्र एक बहुत खूब दिलाकर है जिसमें ताम्र, लोही तथा टन उपयोग अपने समय में सम्बन्धित होती है भि
इस संस्थान के मिठी से प्रशंसक डूंग देते थे। यह भी यहाँ उल्लेखनीय है कि प्रस्तार-निर्माण ऐसे शिकारवात में प्रस्तार-अंपोशित-विश्वास प्रायः स्वतंत्रता ही रहता था, यथाप्रयत्न पुरातत्ववेता इससे सहमत नहीं थे। ऐसे इतिहास का शाश्वत दक्षिणी भारत, विशेषता प्रदर्शन राज राज्य में काशी की संस्कृति में उपलब्ध होते हैं। ऐसे शाश्वत दक्षिणी भारत में काशी का प्रसार तक प्राप्त होता है। अनुमानत: इस परम्परा का प्राचीन-मध्ययुगीन कदम दक्षिणी भारत में हुआ था और विभिन्न से सिर्फ यह प्राप्त उत्तर भारत को और प्रसिद्ध हुई थी। मया प्रदेश में इस प्रकार के जो शाश्वत सिर्फ़ ही सकते हैं। वर्तमान राजस्थानी तात्कालिक आदिवासियों में अथवा इस बुद्धिविश्वासपूर्ण शाश्वत-प्राप्त-रूप में प्राप्त पाया जाता है। यथाप्रयत्न इसके मूलवस्त्र को विस्तृत ही सा कर देते हैं।

हैदराबाद: राजमहल कुणास-तंगाबद्ध के अन्तर्गत में बुद्धिविश्वासपूर्ण कुछ ऐसी ही शाश्वत प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार वाड़ा, डोंग, तिरुनो मिठी और मंदिर के निकट भी ऐसी ही विस्तृत शाश्वत शाश्वत का विस्तृत भू-भाग में समाप्त होते हैं। इसलिए जब इनकी गोत्य अधिकारी सत्तापूर्ण रूप से नहीं हो सकती। यहाँ तक कि इसी गोत्य के उपरांत निरंतर भी अधिकारी नहीं किया जा सकता है।

नागपुर जिले में ऐसे अप्रत्यक्ष स्वास्थ्य है, जिसमें जनपा, काम, उच्च, तीन नागरी और लोगों के शाश्वत सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें और उनके द्वारा का इतिहास के शाश्वत की अर्थसंबंधी शाश्वत-स्वास्थ्य के क्षेत्र कई एक भूमिका उठाया है। वास्तव में इनके मूल्य समुद्र ताज़ातिमी और वानिक नामक प्राय में प्राप्त होते हैं तथा मंदिर जिले में ऐसी कुछ भूमिकाएं उन्हें पूरा करता, तत्काल, लोगों और यह में भी है। इस मूल्यों के विश्व से उत्तर नीचे सीमा के दो प्रांतों के नीचे सिर्फ़ में सरकार के प्रस्तार-रूपों से बनती हैं। उन नीचे में क्षेत्रों की तरीक़े में तक अभी तक पूरा जाता नहीं हो सकता है।

बेहतरीन में सन् १९५५ में पुरातत्व-विश्वास के द्वारा खुदे हवाली दी गयी बैकाशिक उपलब्ध-कार्य में यह स्पष्ट कर दिया है कि बुद्धिविश्वास कल्याण अवशेषों की यह परम्परा ऐतिहासिक काल में भी चलती रही।

मया-प्रदेश में पुरातत्वीय काल के यह एक नितांत नवीन कार्य-क्षेत्र है। यहाँ अभी तक अभी तक इसके कार्य को भी सुन्दरवन्तक कार्य सुचारू रूपसे नहीं हुआ था। इसलिए इस कार्य का उच्च विश्वास व्याख्या दे न की आवश्यकता है।

**तातारात्र (Copper Implements)**

गंगा की ठहरी के बहुत से स्थानों में तांबे के ऐसे हथियार उपलब्ध हुए थे, जिनका उपयोग स्वतन्त्रता स्वतंत्रता अपनी सम्पूर्ण स्वतंत्रता में करता रहा होगा। बालिकाव में घुंघरियों का साथ-साथ उल्लेखनीय है। यह प्रामाण्य प्रदेश में तातारात्र-संकल्प की सीमाएं में से एक स्थान स्थान है। इन हथियारों में तांबे की विभिन्न आकृतियाँ वाली सपाट कुलाड़ियाँ (Flat celts) तथा बाँधी से बनी हुईं इनसे ऐसे वस्त्र, जिनके उपयोग के बिना में निश्चित रूप से नहीं करा जा सकता, उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार की कल्याणी के जकलिया के निकट प्राप्त होने का भी उल्लेख किया गया है।
(२) मौर्य-काल

मैथिल-प्रदेश में इतिहास का प्रारम्भ व्यतीत: मौर्य-काल से माना जा सकता है, जिसका समय ४०० ईसा के पूर्व से लेकर २०० ईसा-पूर्व तक है। इस प्रांत में मौर्य कालिन कुछ शिला-लेख और ऐसे प्राप्त हुए हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस राज्य में ऐसी अन्य ऐतिहासिक संप्रति पर्याय रूप से अन्वेषित हो सकती है। इस राज्य में मौर्य कालिन इतिहासांकेन्द्र का पुकार केला तो है कितृ अधाराय यहाँ एक-तू-एक-बी बेचव जितना कार्य ही हुआ है। संभव है कि भारतीय मौर्य कालिन इतिहास की कलियार अनुपम शुरुआत केदार काठियाँ प्राप्त भी हो सके। इसलिये यहाँ गणराज्य की महत्व प्राप्त करता है।

भारत के महान समाज अरोक्ष के गौण-दामिक-शिला-लेख (Minor-Rock Edicts) जबलपुर से तीसरे शताब्दी के दूसरे दर्जे में लिखे गये हैं। इस शिला-लेखों का समय २२२ ईसा से पूर्व माना जा सकता है। तत्कालिन एक अन्य लेख जो ड्रेसिट नामक स्थान से प्राप्त हुआ था, जो लगभग तीन हजरत २२२ ईसा से पूर्व काल में प्रचलित अक्षरों में अर्कित है। बिपुरी नामक स्थान के उत्तर में उत्तरी चिम्बिकारसित मुक्तांत्र (Northern Black Polished Ware) तथा खंड सुबंधों से समन्वित मौर्य-कालिन भू-स्तर इसने मोदे हैं कि उनके आँख-प्रकाश के निरोधाय से मौर्य-कालिन मनुष्यों के मूर्तिविधा बीमार का अनुमान किया जा सकता है। यह अन्य स्थान ठीक है कि बिपुरी स्थान में तत्कालिन भवन-भाषाशृंखला नहीं मिलते। तत्कालिन उनके लेखों पर मूर्तिका-राशि ऐसी मिलती है जिससे अनुमान किया जाता है कि वे भवन संविधान के कहीं बेवजी से नहीं होगे। साहित्य राज्य-राज्य नामक पहाड़ी की गुफाओं में अरोक्ष कालिन रंग-रंजित और उत्तरी दोनों प्रकार के लेख प्राप्त हुए हैं। चूँकि दक्षिण भारत में अरोक्ष के केंद्रिय शिला-लेख अवधारण प्रस्तावित है, इसलिये इसके मानने में कोई विशेष आयाता नहीं हो सकता कि सम्मत मैथिल-प्रदेश विश्व के मौर्य-साम्राज्य के अन्तर्गत था। इसी प्राप्त को पीछे करते समाज अरोक्ष ने अपने शिला-लेख दक्षिण-भारत में बड़ी किये थे। अन्य स्थान शासक-शासित मैथिल-प्रदेश से अरोक्ष का दक्षिण-भारत में जाना स्थापना नहीं प्रतीत होता। यह मान सकता है कि मैथिल-प्रदेश किसी अन्य शासक से शासित रहा हो और वह शासक समाज अरोक्ष का अधिकार रहा हो अथवा मैथिल प्रदेश उन्हें समाज का एक माह विशेष रहा हो। मैथिल प्रदेश के यह भाषाशृंखला ऐसे बिखेरे हुए मिलते हैं कि वे एक हद से बढ़ते दूर दूर हैं। इस प्रकार वे विविध बिखेरे हुए अवस्था से प्रतीत होते हैं। यद्यपि यह अरोक्ष-कालिन अन्य उपदेशात्मक शिला-लेखों का प्राप्त होने का बहुत अधिक आशा तो नहीं है, तथापि उन उत्तरी चित्राकारिता मुद्राओं के समन्वय से, जो विशेषतावर्ता मौर्य-कालिन निम्नित है, कदाचित् यह त्योहार जो बुनोकार की उपन्यास से अवस्था होता है। इसलिये इन शिला-लेखों के आधार पर ऐतिहासिक भाषा का अधिकार करने की अतिशय आवश्यकता है।

प्राचीन गण-राज्य की मुद्राएँ

समाज अरोक्ष के कुछ ही समय के परपार, मैथिल-प्रदेश में स्वतंत्र गण-राज्यों का आविष्कार होता हुआ दिखायी देता है। ऐसे नगर-राज्यों में से एक पंजी (प्राचीन परीक्षित) नामक राज्य भी था और उसके अपने सिके भी प्रचलित थे। पंजी में धर्मदाल के नाम से अंकित सिके भी मिलते हैं। ऐसी दशा में यह अनुमान करना सर्वायं सृजित है कि वहाँ का राज्य-पाल संभवतः धर्मदाल रहा होगा और उसके परपार दृष्टि देखिक रुपक-राज्य स्थापित हो गया होगा।
आहत सुद्राँः

(Punch-Marked Coins)

आहत-सुद्रा-प्रथा सब प्रकार के भारतीय सिक्कों की प्रवत्ती में सबसे प्राचीन है। ये सिक्के तीन कितने अथवा तीन के दोनों से बनकर या दुवाकार बनाये जाते थे और इन पर एक और तीन अवस्थाओं में पार्श्व चिह्न और दुसरी अथवा कमी का एक अथवा एक से अधिक भी चिह्न अंकित किये जाते थे। आवश्यक एक चिह्न दूसरे चिह्न के ऊपर अथवा इसके इंटरियर में माखन व अंकित था तथा उसकी चिह्नित किया जाता था कि दोनों चिह्न मिलकर अस्त्र से ही हो जाते थे। यदि चिह्न कुछ ऐसे हुए थे कि एक दूसरे को आच्छादित न कर सके तो त्यस भी रहते थे। जब भी कमी चिह्न सिक्के के जितने पर ऐसा लगा जाता था कि उसका एक अंश अंकित हो पाता था। बहुत ऐसे सिक्के कुछ चिह्न भी मिलते हैं। ऐसी वस्तु में चिह्नांकन-विचारण पर कुछ निधनशीलक नहीं कहा जा सकता।

ये सिक्के सामान्यतः अवस्थाओं पार्श्व चिह्न सी से वर्गीय ईसा के दौरान से विभिन्न लोगों द्वारा विभिन्न तरीकों के साथ चलते रहे। इसके प्राकार इनका शुरूयाद: शुरूआत हुई। फिर भी लगभग चार से ईसा के समय तक इनकी धर्म-प्रचार विचार होते थे। इसके आधार-प्रकार में सबसे संबंधित। कुछ पढ़ा-पढ़ा हुआ भी प्रतीत होता है। मूर्ति-कालीन आहत सुद्राँण यथा: दुलुकार और प्रतिवेदन रहते थे। उनमें अपेक्षा कुछ मोटी सुद्राओं मूर्ति-कालीन के प्राचीन होते ही ईसा से पहले तक पड़ते हैं। इन सुद्राओं पर लगभग पार्श्व चिह्न सी प्रकार के चिह्न अंकित थे। चिह्न और केंद्र से इन चिह्नों में भी अतिरिक्त प्रताप होता है। कुछ चिह्न तो किसी क्षेत्र में और कुछ चिह्न किसी क्षेत्र में विशेष चिह्नित थे। इससे तवाल्कारी भारत के भौगोलिक भाग-विभाजन का भी अनुमान निकाला जा सकता है, किन्तु निश्चित रूप से इनके सूचक मत्तत्त्व का निधनशीलक नहीं कहा जा सकता।

मध्य प्रदेश में आहत सुद्राओं के कई संस्करण मिले हुए हैं परंतु इनके आधार पर उनका वर्तमान सम्बन्ध नहीं है। अतः अधिक आहत सुद्राओं के प्राचीनत्व की तात्कालिक पुस्तक में दिखे गए मान-चिह्न में स्थान कर दी गई है। सबी स्थान अविश्वस्य: मूर्ति-कालीन नहीं है। उन सिक्के प्रवृति विश्वकोश से प्राप्त हुए हैं। प्राप्त क्षेत्र मालूम पता है जिसका वाहन चिह्न से प्राप्त हुए हैं। इस क्षेत्र से प्राप्त होने वाले सिक्के में चिह्न नहीं मिला है। यह चिह्न विद्धान के अन्तर्गत है। दूसरा क्षेत्र उत्तर में त्रिपुरी और एरण नामक धर्मों का है। इस क्षेत्र की
ढ़े हुए सिके

(Cast Coins)

सम्प्रदाय अशोक के शासन के पश्चात, तांबे और ब्राज के ढ़े हुए सिकों का प्रचलन प्रारंभ हुआ। इससे पूर्व इन धातुओं के ढ़े हुए सिकों का प्रचलन कम था। इसी के साथ सिकों के आकार-प्रकार में भी अंतर हुआ। तांबे और ब्राज के ये नये सिके साँचे में ढ़े हुए जाते थे और बहुत बड़ी संख्या में तैयार किये जाते थे, क्योंकि इनका प्रचलन केवल इस समय उत्तरीय भारत में बहुत विस्तृत हो गया था। दक्षिणी भारत में इनके प्रचलन का विषय संदिग्धता ही है। वे तक्षशिला जैसे अनेक प्राचीन स्थानों के सिकों की मौत की सी वर्ष इसा पूर्व तक ही के समय को दंगित करते हैं। मध्य प्रदेश में, ऐसे ढ़े हुए सिके की प्राप्ति के मुख्य केंद्र एरण तथा निजुरी नामक स्थान हैं और अभी हाल ही में होंगाबाद नगर के निकट जमुनियाँ तथा विहिया नामक प्रांगणों से भी ऐसे कुछ सिके प्रकाश में आये हैं। बहुत से सिके आकृति में उजान अथवा एरण नामक स्थानों के सिकों के समान है।

उत्तर मौर्य-काल से शातवाहन-काल तक

उत्तर मौर्य-काल से शातवाहन शासकों के प्रारंभ तक के समय का ऐतिहासिक स्थान संदर्भ है, परन्तु पौरी नामक प्रांगण से प्रात प्रारंभिक (तीनीय शताब्दी ईसा से पूर्व) नामक कुछ शासकों के दो एक सिकों से, जो पत्र-चिट्ठी या-ददा प्रात होते थे, उस काल के इतिहास पर उत्तम प्रकाश पड़ जाता है। इससे अन्तर्दृष्टि और कोई भी अन्य साक्षात् ऐसे उपबन्ध नहीं है, जिनसे इस काल के इतिहास का यथार्थ परिचय प्राप्त हो सके।
(३) शातवाहन-काल

मध्य प्रदेश में कालीय अवशेषों से सातवाहन युग की स्थिति का भी भाव होता है और यहाँ से प्राप्त अवशेषों में रेखित तथा तलकालीन देख समझित हैं। वास्तव में इन देशों का सातवाहन-वंश के राजाओं के इतिहास में कोई भी सीख संबंध सा नहीं है। वे सातवाहन ऐतिहासिक भाव में सहायक अवस्थाओं होते हैं, क्योंकि ये रेखा बस्तुतः समकालीनता मात्र प्रकट करते हैं।

गौतम-पुजूर सातकर्ण्य के नामिक गुप्ता के शेखावासर विद्यमा का प्राप्त उनके अधिकार में था। कई विद्वानों के विचार से तो विद्वान प्राप्त दी सातवाहन राजाओं का मूल-प्रदेश था, जिसमें यह मंत्र सर्वसाधारण नहीं है।

सिके:—निजी-आकार व शातवाहनवंशीय प्रारंभिक शासक सिरे सातकर्ण्य के जो सीते के रूप में रेखा और सातवाहनकालीन मुद्रायुग प्राप्त हुए हैं तथा नभवता कर्तव्य ज्ञानियों नामक प्राप्त राजा से जो सीते रेखा है, उनके आधारपर यह निर्देश माना जा सकता है कि जबपुर के चुरिल स्तर प्राप्त हुआ की प्राचीन शातवाहन के लेखन की लगभग सातवाहन वंश के अवशेष हैं शातवाहन के अधिकार में था। जबपुर के मित्रों में भगवान शातवाहन के अधिकार की पुर्वी होती है। भारतीय काल में शातवाहन के अधिकार की पुर्वी उद्देश्य होती है।

विगत शातावदी में चाँदा तथा सन् १९५६ हि० में मंगलखंडी के मित्रों पर तलकालीन शातवाहन राजाओं को सीते के रूप में शातवाहन शासकों के दो ब्रह्म के नाम के गवेषण से वर्तमान महाभारत पर प्रकाश पड़ता है। पहले शान पर पुलिस माया यह शातवाहन राजा के तात्र-सिके प्राप्त हुए हैं। परंतु तहला शान पर सातवाहन शासन के इतिहास पर अध्ययन प्राप्त हुआ वर्तमान शातवाहन राजाओं के अधिकार से उन नामों का उद्देश्य मिलता है। जो पुराणों में वर्णित तुल्य-पुण्य तथा वंश-परम्पराओं में नहीं मिलते। शिवराज से प्राप्त गौतम-पुजूर सातकर्ण्य की रजत मुद्राओं पर राजा की मुबाकत की अवधि होने से भी बाद के पक्ष पर यथेष्ट प्रकाश पड़ता है।

श्रीरंगी सातवाहन-सिके एरान, उन्नतियों तथा महाभारत के रूप में देखे रहते हैं, तथा अन्य परम्पराओं के रूप में संबंध रहते हैं। परंतु परम्परी सातवाहन राजा तथा शातवाहन के शासकों को एक तरह से हस्तिक रूप में होने उन शान का संबंध दर्शित भारतीय परम्परा के रूप में उजने से सप्ततया प्रकट होता है।

स्मारक:—शिवराज के उद्देश्य के कारण से शातवाहन तरीके से प्राप्त दो अवशेष ठूले विद्वानों के प्राप्त हुए हैं, और केवल दो द्वितीया अवशेष ऐसे प्राप्त हुए हैं, जो शातवाहन युग के अवशेष के हाल सिद्ध हैं। विद्वान के अनुसार अर्थव्रुत चाँदा नामक जिन्हें मनाने तथा अर्थव्रुत नामक नामक शासन के निचले पत्र पर नामक शासन में गुप्तार्थों मिलते हैं। इन गुप्तार्थों में किसका प्रारम्भ का स्मारक-किरंड़े-कुटुंब कोई वर्तुल श्रवण नहीं शाफ होती। ऐसी दशा में इसके रचना-काल का निर्धारित भाव से सम्मत बाणी-सितारे निर्मित शिलालेखों के ही आधार पर हुआ है। यथाप्रसंग ये शिलालेख सन्यासी संस्कारसंपन्न रूप में नहीं पड़े पक्ष के रूप में होते हैं।

इस युग द्वारा संपन्न अन्य विश्वास कुछ विद्वानों द्वारा शिलालेखों से प्राप्त होते हैं, जिनमें (१) भार तथा महाभारत के द्वारा का शिलालेख, तथा (२) न काल राजां गण मुंजी नामक शासन में कुमार-वर्द्ध का लेख है। इन दोनों शासनों का समय इनकी प्रथम शताब्दी है। दूसरी शताब्दी से संबंधित तीन शासनों में, (३) जयवर्ष, तथा (४) वासिष्ठ-पुजा शिलालेख का तीनों नामक शासन का लेख है। इतिहास नामक शासन के अन्त-स्वभाव से, जो आदि ही यह-गुप्त है, इसी दृष्टि
रोमन सिक्के और पदक

शातवाहन युग की एक बहुत कही विशेष बात यह है कि इस युग में भारत का व्यापारिक संबंध अन्य
बाहरी देशों और विशेषतया रोम के साथ में था, क्योंकि मध्यप्रदेश में बांदा के निकट तालाब तथा बिलासपुर
और चकरवेड़ में रोमन सिक्के पाए गये हैं। संबंध के अभाव में इन सिक्कों का यहाँ अभाव होना असंभव
था। इन रोमन सिक्कों के अतिरिक्त पहले ही मिट्टी का एक रोमन पदक (Bulla) कोरोला के समय
बोलघर में मिला है। इसी प्रकार तिरुपुरिय की बुद्राई में भी ऐसा ही रोमन पदक और रोमन मुद्राओं भी
अत्यधिक शातवाहन स्तर में प्राप्त हुए हैं।

क्षत्रिय सिक्के:—पश्चिमी क्षत्रियों का उल्लेख जिसे बिना पत्रकार शातवाहन शासकों का चिह्नण शूर्य
नहीं समाया जा सकता। क्षत्रियों के सिक्के मुख्यतः सिन्नी जिसे उपलब्ध हुए हैं। योगसमन के
पुत्र रुद्रसेन का एक सिक्का सिन्नी में मिला था और उसके सिक्कों का एक संचय ६२६ चैत्र
१९२५ में सिन्नी के निकट सोपुर से प्राप्त हुआ था। इस संचय में रुद्रसेन प्रथम से लेकर रुद्रसेन द्वितीय
के सिक्के निहित हैं, जिनका समय शकाखण्ड १२१ से ३०० तक है।

(४) गुस्त—वाकाटक—काल

गुस्त—साप्ताहिक भारतवर्ष में सबसे गौरवशाली माना जाता है। साहित्य, संस्कृति, कला, भूर्ति—क़ला,
बाल्लु—क़ला आदि के क्षेत्रों में इस समय बहुत ही आवश्यकताएँ प्रगटि हुई। इसी कारण गुस्त—क़ला को “स्वर्ण—
युग” कहा जाता है।

गुस्त—कालिजन बहुत सी गुस्तों, बहुत मंदिर और शिला—लेख मध्यप्रदेश की उत्तरी—सीमा और वायुयथीक
सीमाओं से बहुत दूर तो नहीं हैं, किन्तु हैं वे प्राय: बाहर ही। मध्यप्रदेश के अन्य लोक तथा पूरे नामक एक
स्थान ऐसा है, जहाँ इसका अपवाद मिलता है। अर्थात वहाँ गुस्त—वाकाटक अवश्य उपलब्ध है। यह नगर प्राचीन
काल में ’श्रीमण’ के नाम से प्रसिद्ध था और इसे प्राकृत साहित्य समाज समुद्रुप हो आया। स्थिरमनगर
वे कदाचित काल में यह नगर समुद्रुप के प्राचीनों में, ब्रह्मा कृष्णकाम के तिथि
निर्मित किया गया था। उस समय के कई अवशेष, अब भी यह उपलब्ध है।
समुद्रगुट के बाद बुद्धगुप्त (४७४-५००) और मान्यतोङ (५१०-५२०) के समय के लेख में वहाँ उल्कायें हैं और तल्कारीविनायक मंदिरों के म्नामवेश भी अत्यंतव देखा जा सकते हैं। पुराण से विश्लेषण में १२ मील दूर मन्द चक्षु की सीमा पर पश्चिम-काला चिन्ह एक स्मारक है जहाँ गुताकाल लेख और पीढ़ि-कला के कुछ अवशेष अधिक दिखाई मिलते हैं।

युग-काल का एक मंदिर जबलपुर के समय निगमों में भी अब तक बना हुआ है। सप्त छत के बने हुए तत्वावधि कड़्ड़ी के पास रोड़, स्कॉर्पियों, चूर्ण और चुंबक पर हैं। यह बालभुज-काल का चिन्ह देखने में भी अधिक दिखाई मिलता है।

अन्य वस्तुओं में युग-काल के दो सुद्रा-लेख (Seals) नागपुर के पास ट्रायेक्स और पार्षदिवाली में पाये-गये हैं। युग-शास्त्री के सोने के सिक्के हृदय के समय स्त्रियाँ, वैदिक तहती में पट्टन, होंकोत्तर महीना में हरदा और जबलपुर में सिकद रहे। रायपुर जिले में बैराज़ा से प्राप्त "श्री महेन्द्रविजय" ऐसे अंकित सिक्के कुमारगुप्ता के माने जाते हैं। ये सिक्के उत्तरोत्तर तदनुसार रेपोस्स (Repousse) हैं और यह उत्तरोत्तर-क्षेत्राधि युग-काल की सुद्रा-लेखा नवीकरण का एक चिन्ह होता है। इसी विषय पर आधारित विषयों का यह विचार है कि ये उत्तरोत्तर समय वस्तु मुख्य के आधार पर समान अपरिवर्तनशील रूप में दी जाने वाली प्रक्रियाओं हैं। गुरु-राजमंडिर के प्रकाश तथा इस विषय का उपयोग नाथ-बंधन तथा शरभमज के राजमात्र के द्वारा हुआ है। यहीं यह भी कहा सुमारे है कि इस उपयोग-विषय के द्वारा निर्माता निश्चित किये गये सिक्कों के एक पट्टार पर तो विषय मध्य उठे हुए और सिक्के रहते हैं, किन्तु उसे पट्टा पर नाथ ही विषय मध्य उठे और सिक्के को देखे हुए रहते हैं। इस प्रकार के सिक्कों के उत्पादक सिक्कों के दोनों पट्टार पर समान रूप में विषय न होता है।

कुमारगुप्त के भी चोरी के दस सिके हिन्दुर देश में पाये गये हैं।

बालकटक-वंश

बालकटक-वंश के महाराजा गुतागुप्त समय के वैवधिक संबंध से संबंध थे। ये वही शासित शासन थे। इनका राज्य विस्तर तथा मनो प्रभाव के सील सु-भाग घर पर सेलिया हुआ था। यद्यपि उनके लिए लेख उत्तर में अच्छा राज के जगत और नामबन की तरह नामक प्राम से लेकर अनंतर श्रेणी तक के सिक्के क्षेत्र में प्राप्त होते हैं, परन्तु मन्द चक्षु अन्तर्गत केवल एक दूसरे लिख बालकटक जिले के देवनाथ प्राम में लिखाया है। इस सिक्का के वहीं अवकरण तात्पर्य तो चक्षु है। तथा मन्द चक्षु में प्राप्त हुए हैं भें यह वही सिको-लेख न प्राप्त हुए हैं।

इसी वंश के दो प्रसिद्ध शासनों में से एक तो वालिक (प्राचीन वस्त्राम) और उसके निकटवर्ती क्षेत्र पर तथा दूसरी मनो विस्तर पर प्रमाण करती थी। वालिक-शासन के केवल दो ही तात्पर्य प्राप्त हुए हैं और समी शिलालेख अनुसार चक्षु की गुफाओं से ही मिलते हैं। वस्त्राम के अंतिम तात्पर्यों में वर्णित अन्य स्थानों का पता लगाया अस्यांच है, विनत्र व लाभों समान वालिक के आलाप में ही सिक्ठे थे। बालकटकों की प्राप्ति गुफा के संबंधि प्रमाणी गुदा के दो ही तात्पर्य, अनुसार द्रविडी के हरे तात्पर्य और बालकटक में स्मारक एक बालिका दान-प्राप्त प्राप्त होते हैं। इस प्रकार द्रविडी इस वंश का नई से प्राताती शासन माना जाता है। बालकटकों के दो सभी लेख संकल्प में हैं किन्तु वस्त्राम के केवल एक प्राचीन शासन विश्वास का एक ही तात्पर्य प्राप्त में उल्कायें निलित हैं।
प्रभावति गुण के तात्पर्यों में “सुप्रतिष्ठित” नामक एक आदर अथवा प्रार्थना या भूमि-भाग का उदेश्य मिलता है। अन्य तात्पर्य ‘राम-पारम्पुर’ (वर्तमान रामपुर) से दिया गया था।

प्रवर्तक द्वारा के तात्पर्यों में भविष्य से प्रवाहों का उदेश्य किया गया है, जो सिन्नी, बनी, इलाहापुर, बालापुर, हिंदुबादा और मंदिर किलों के अन्तर्गत हैं। इन उद्देश्य स्थानों में से भविष्य से स्थानों का परिचय निहित खाने का रूप से प्राप्त हुई सामग्री के आधार पर दिया जा सकता है, यथावत् बिस्तर प्रवाहों के भौगोलिक विकार के यथार्थ धारा का प्राप्त करना कठिन है। कलिग्राम प्राचीन प्रायों में भाषा के रूपांतरण दौरान दृष्टि हो जाने के कारण नामांकर अवस्थनों हो गया है यदि भी उन प्रायों का अस्तित्व नूतनाकृति रूप में अवधारित कुछ हेजर-फेर के साथ मिलता है।

प्रवर्तक की तीन राजवंशियों की। एक जी नवयुग में, जिसने इस समय नगरीय कहते हैं, दूसरी पर्वत में थी, जिसका इस समय कोई भी पता नहीं है और तीसरी राजवंश प्राचीन में थी। राजवंश का यह नाम समान के ही नाम पर रखा गया था। यह नगर इस समय मंदिर किले के अन्तर्गत अभावरण समय में पवनार के नाम से सिंच है। दोनों नामों में यह प्राप्त नामांकर हुआ है यह अलकौनीय है, बिशेषतः भाषा वैज्ञानिकों के लिये।

दुर्भाग्यवश वाचकविक वंशवान राजवंश के भविष्यवाद से प्राप्त नहीं हुए हैं। पवनार नामक स्थान से प्राप्त होनेवाली कुछ बहुत सुरूवातियाँ बालाकोट-वाला को जान पड़ती है। इन मूर्तियों के अन्तर्गत अवश्य अवश्य विशेष काश्मीर अनुपात से हैं और ये मूर्तियाँ राम-कवादित रात्रि हैं। इसलिए ऐसा अवश्य होता है कि उन काल में रामनाथ का काल का अविकल प्राप्त-प्राप्त हुआ था।

भारतवर्ष के सर्वाधिक किताबों का कालवर्ष वाचकविक प्रवर्तक के आधार में रहते हुए अपने अन्य कारणों और नाटकों की रचना करते थे। ये बहुत कालवर्ष हैं, जिनका दर्जन संसार के कालों में स्वरूप है और जिनके नाम- एवं काला काव्य विशेष में भी सम्मिलित हैं।

पवनार की कीमत इन मूर्तियों से अर्थित और कोई भी अन्य तो मूर्तियाँ ही मिलती हैं और न कोई ऐसी अन्य बनाए ही प्राप्त होती हैं, जिनके बालाकोट वंशवान राजवंश के काल को शासन-सूत्र का विशेष परिचय प्राप्त हो सके। प्रवर्तक कहते ‘सेतुकोट्’ अथवा ‘रामवंश’ नामक प्राप्त भाषा-प्राप्त इस वात का प्रमाण है कि भगवान कर्ता और साहित्यवाद के आधार पर यह नहीं समझा है कि वाचकवित वंशवान राजा भाषानिवर्तमान भी रहे थे। उनके काल में इसीसे साहित्य की भी श्री-व्रत हुई है। वाचकवित वंशवान राजवंश का इतिहास बहुत अधिकार के हेतु प्राप्त हुआ है। आवश्यकता अव यह है कि पवनार तथा नगरवन स्थानों के अवस्था तथा मनोबोध के साथ सिलिया जाय। भाषा यह है कि ऐसा करने पर इतिहास का बहुत उपयोगी सामग्री प्राप्त हो सकेगी।

पृढ़ १४ पर दिये हुए मानचित्र में वाचकवित के प्राप्त-स्थान दिये गए हैं।

नल-वंश

नल-शास्त्रीक वाचकविकों थे समकालीन थे और इनका आधिपत्य बनारस-क्षेत्र पर था। इस वंश के अर्थपति, महादीशन, राधाराम आदि शास्त्रीयों के काल तात्पर्यों, शिलाचित्रों तथा सूक्ष्मों पर भी मिलते हैं। अर्थपति का एक तात्पर्य संकेतित नामक ग्राम में हाल में ही प्राप्त हुआ है।

नल-वंशीय महादीशन में बहुत प्रसिद्ध शास्त्र थे। उनका एक तात्पर्य विद्याधिकृत शिलांकुंज तथा एक शिलाचित्र बनारस राज्य की सीमा पर सिलिया पोटागारु प्राम से प्राप्त हुआ है। संभवतः उन्होंने अनिष्ठ
अन्य गुल-कालीन वंश

उपरोक्त निर्देश वंशों से अतिरिक्त गुल-कालीन कई अन्य लेख भाषा गद्य में प्रविष्ट था। इन वंशों में राजपूत नवन, परिवार, दंगिन कोशल के पान्डव और चौधरी के राजवंश सममित होते हैं।

परिवार नवन महाराज सेक्सेयम का केंद्र एक दारापात झाड़ू में मिला था, जिसमें जबलपुर की राजधानी के अन्तर्गत बिहार के समीप पट्टारा और दारा (प्राचीन प्रताराक्षक और ढारावर्तिका) नामक प्रामाण के दार उलझी है।

दंगिन कोशल के पान्डव-नवन राजाओं (यह पाण्डव वंश महाभारत-कालीन पाण्डव-वंश नहीं हैं) के कई लेख और दारापात राजपूत तथा बिज्ञान जिलों में प्रख्यात हुए हैं। इन में से सब से प्राचीन बनने वाला प्रामाण का दारापात है, जिसे इस वंश के साथ वाराकांक्ष समाधान के संबंध में होना प्रारंभी होता है। प्राचीन देश का दारापात, जो सारांश प्रारंभ इसी के पान्डववेत्रीय राजा में दारापात और शासन करने रहा, जिसका समय भाज शताब्दी पहले नवनी शताब्दी में चढ़ गया था।

सिपुर से प्रारंभ कई लेखों में महाशिवरात्रि बालूदन का नाम आता है। उनकी माता वास्तुकचा द्वारा सिपुर शासन का प्रारंभक व्यापार-मंडिर बनावा गया था, जिसका एक लेख में विश्व-मंडिर निर्माण करने के लिए एक राजा था। महाशिवरात्रि के नवन दायुंग पर से इस वंश का एक चरण बना है के यह दोनों ये और उनका शासन बहुत समय तक चढ़ता गया।

चढ़ता गया में कई इलाकों के नवन दायुंग उनके समय के प्रारंभ होते हैं। ऐसे दायुंग सिपुर, खरेद, पुजारी पाती और कुछ इलाकों में विभाजन है। लघु रूप का कुछ से इसे दायुंग उद्धोरण प्राचीन देश में है। महाशिवरात्रि के माह ग्राम वाले दायुंग-पत्र से इसी समय चढ़ता गया में बीमारों को राजपूत प्रारंभ होने की भी पता चलता है। इससे यह पता चलता है कि पाण्डु-वेत्रीय राजाओं की नीति सभी धनी के प्रति समान आदर की थी और ये वीर्य-सहीं निष्क्रिया भी थे। महाशिवरात्रि, सिपुर, आरंग, दुरुष्यार, दुरुष्यार, दुरुष्यार आदि स्थानों में प्रारंभ बीमार मूर्तियों प्रारंभ इसी समय की प्रारंभ होती है। विशेष उलझनाथ वाल यहाँ यह
है कि न केवल प्रत्यय की ही पूर्वित्यां वर्तन स्त्री-सम्पूर्ण-स्नात-पीताल की स्वित्याः भी सिरपुर में प्राप्त हो गयी हैं। पाण्डव-बंधा के बड़े लेख लिख की विद्या से उत्तर-पूर्व काल में लिखे जा सकते हैं।

शारभुपुर का शासक-वंश

शारभुपुर नामक स्थान एक राज-वंश की राजधानी था और यह राजवंश शारभुपुरा रायवंश कहा जा सकता है। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि शारभुपुर नामक नरेश ने इस स्थान को अपनी राजधानी बनाया था और इसी लिखित इसका नाम भी उसके नाम पर रखा गया था। यह तामिल राजधानी संभवतः मेहर श्रेष्ठ की पूर्वी सीमा के निकट उद्घाटित राज्य में थी। शारभुपुर-नरेशों का राजा नामक राजा रायवंश तथा रायपुर क्षेत्र में नल-वंश के प्रवाल रहा। महाराज नरेन्द्र का एक तामिल मारापुर में शिक्षा प्राप्त हुआ था। इस वंश के महाराजाज का एक तामिल आरंगा में और महानुदेवराज के पौधा राज्य के वैदिक बैबिया, आरंग, सिरपुर, रायपुर तथा सारांगड़ राज्य में उपविष्ट हुए हैं। इन तामिलों में उदिवित सभी श्रेष्ठ बालोदा वहाँ तथा वैदिक के समान हैं। महानुदेव के वातावरण महादेवराज का एक तामिल सारांगड़ राज्य में ठाकुडेहाया ग्राम से प्राप्त हुआ है। इस वंश के एक अन्य राजा महाभारत का भी राजा चला है, जिसके तामिल में उदिवित स्थान भी सारांगड़ राज्य में है।

इस वंश के महाराज प्रसादुमान के वर्धी के शिके सारांगड़ राज्य में महानदी के तट पर साइकेपा पाली नामक प्राम नहीं है। वे नहीं। उन्हें मुद्रित नहीं हैं।

गुप्त तथा गुप्ता तर्क कालीन अन्य जो लेख मिले हैं उनमें से अभिनव गौन है, केवल एक तामिल उदिवित है, क्योंकि इसमें महाराज मेमेमें का नाम अनकित मित्र था। इस तामिल पर जो समय अनकित है वह कुछ ऐसा है कि प्रथम उसे २८२ गृह संवत सम्मान गया था, किपु जो शीघ्र निधित किया गया है उसके अनुसार १५२ गृह-शत किया गया है। इस तामिल में शासक के वंशाधि का परिचय नहीं दिया गया है, किबु उनके कुछ की † राजावधि-तृतीय कहा गया है। इसी तामिल में जो स्थान उदिवित है उन्हें यवाःसंभव रायपुर जिले में ही होना चाहिए। यद्यपि इसका कोई निधित प्रमाण नहीं है।
(५) राष्ट्रकूट वंश

राष्ट्रकूट वंश के अनुसार विद्रोह प्राप्त पर दो ही वंशों से अभिकालित तक राष्ट्रकूटों का राज्य रहा।
इस वंश की कई शाखाएं थीं। कभी कभी तीन या तीन से अब्जिक शाखाओं को यहीं पर शासन करती थीं और उनमें प्रायः सबसे प्राचीन शाखा बैंकूल को निकटवर्ती क्षेत्रों पर राज्याधिकार रही। यह बात बैंकूल तथा अकोला जिले से प्राचीन तीन दान पश्चिम (जिनमें से एक बनावट रही) से स्थान बदल होती है। ये दानपत्रों नवराज अन्तर्गत नाम का नाम का दानपत्र के द्वारा अंकित कार्य गये थे। इनका समय इस्लामी सन् ६५२-७१६ के आसपास है। एतिहासिक एक दानपत्र, जो संभवतः उसी वंश के राजा स्वामीराज द्वारा दिया गया था, राष्ट्रकूट के निकट नगर पर स्थान बदल हो गया। यह स्मारक है कि इस नगर से दूसरे दानपत्र पश्चिम और प्राचीन हो जुड़े हैं। जिनका उल्लेख उपर निचला है इन दानपत्रों में वर्णित था। स्थान बैंकूल और अकोला जिले के आसपासा तथा राष्ट्रकूट के समय स्थित है।

इस वंश का प्रमुख कार्य स्थान ही होता है। किंतु विद्रोह तथा विद्रोह में सातवाहन के समय राजपत्र के साथ-साथ राजवंश की शाखा से समय रहनेवाले पाँच तालाब और तीन शिलालेख ऐसे प्राचीन रहे हैं, जिनसे यह प्रतीत होता है कि इस राज-पत्रपत्र-शाखा का अर्थ-चिह्न शासन इस प्राचीन पर दो सौ बस्तियाँ तक रहा। मौद्रु मंदिर में प्राचीन लिखित प्राचीन का तात्पर्य सबसे प्राचीन है, जो नादिपुरी मंदिर, आदिकुलि मंदिर (४) में दिखा गया था और जिसमें पूर्व-मंदिर के एक पुजारी को दान का उल्लेख है। राष्ट्रकूट वंश के सबसे अभिकालित राज्य गोविंद तुमकुर के चार दानपत्र उल्लेख हैं, जिन में अभिकालित तथा अकोला जिले के कई गाँवों का उल्लेख आता है। उनमें से तीन दानपत्रों में हार्यालिङ (हैदराबाद राज्य) के निवासी एक ही दान-पत्र का उल्लेख किया गया है। इस दानपत्र का नाम औषधिपल्ल था जो संभवतः दातानाथ कर्नल राजकीय था। इसी राजकीय को अभिकालित जिले में और भी गाँव मिले थे।

राष्ट्रकूट वंशों के शासन के अन्तिम समय में इस वंश का प्रमुख-प्राचीन उत्तर की ओर भी बढ़ गया था, किन्तु अन्तिम मिसाल का नाम चिन्तुवाड़ा जिले के नीलकंठी शिलालेख में है। उसी की प्रवासियों द्वारा एक शिलालेख में राष्ट्रकूटों का उत्तरी सीमा पर, मैद्रास की परम्परा में लगभग साल में उत्कृष्ट दौड़ पूरा उत्तर नामक राज्य पर स्थान बदल हो गया था। उसका अन्य दानपत्र नन्दिकर्षा (वर्तमान नगरपालक) से दिया गया था।

परवर्ती राष्ट्रकूट शासकों के वैधकालिक संबंध निपुल के कल्पनारियों से हुए थे और कई कल्पनारियों राष्ट्रकूट राजवंशों को विवाहित हुए थे।

राष्ट्रकूट राजवंश की एक (मामुर) शाखा पश्चिम वंश के निकटवर्ती प्राचीन पर शासन करती रही कहीं जाती थी, किन्तु अनुसंधान से यह प्रकट होता है कि यह शाखा प्राचीन: बनावट राज्याधिकार स्थापना जिले से संबंधित थी और इसी काल से २० रूपये दिये हुए मध्य प्रदेश के मानचित्र में इस शाखा के अभिकलित स्थानादि को इस दिन नया दिखाया गया जैसे वे स्थानादि मध्य प्रदेश के अन्तर्गत नहीं आते।

राष्ट्रकूट वंश के एक अन्य राजा गोविंदनेत्र का उल्लेख लगभग बारहवीं शताब्दी के बाद नाबन्द राजनीति में स्थित जैन-मुरिझ-नेबे से प्राचीन होता है। संभवतः वह निपुल के कल्पनारियों राजवंश का सामान्य था।
राष्ट्रकूट शासकों के सिक्के अभी तक प्रायः नहीं हैं। उनके समय में प्रायः “इंडो-ससानियन” सिक्के प्रचलित थे। इन सिक्कों में से कुछ इन्हें मध्य प्रदेश में भी प्रायः होते हैं और उन्हें इस समय ‘ग्रिथिया का पैसा’ कहते हैं। गुटा तथा गुटाकाल में मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र में ‘शंख-लिपि’ का प्राहर्भव हुआ था। इस लिपि का पत्र बहुत असाध्य है। राजनी, पूर्ण, कारिकल्लाई, पचमत्ती, भावक तथा सिंगरों में शंख लिपि में उल्कोण लेख प्रायः होते हैं। कई विद्वानों के मतानुसार शंख-लिपि केवल गुटा-काल में ही प्रचलित थी।

राष्ट्रकूट-काल की सूर्य-कला तथा स्थायल-कला के विषय में हमारा ध्यान बहुत सीमित है। दक्षिण में राष्ट्रकूट वंश की प्रधान शाखाकों के स्थायल-कलावशेष अवशेषाक्षर: उपलब्ध हैं। परन्तु पुरातत्त्वाधिकारियों के दायरे में उपलब्ध पाठ हैं और खोज की प्रतीक्षा करते हुए अभी तक सिद्ध हैं।

(६) कल्चुरि-वंश

मध्यप्रदेश में कल्चुरि नाम जन्मित्वियों, लेखों और पुरातत्त्वियों के द्वारा सर्वाधिक है। मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग में कल्चुरि-काल की आरंभिक मुख्यियों बिपन्न थीं। और जबलपुर, दमोह, कटनी तथा वोंथुगाँव जिलों में ऐसे कोई गौत्र नहीं है, जो इस समय की कला से अलग हो और जहाँ कल्चुरि-कालन दूर न कहता है। इसी न क्षेत्र में सामान्यतः यह भी जाना है।

कल्चुरि राजवंश की दो शाखायें थीं, जो अपने को नामांकन सहायता से उत्पन्न बनाने का (१) ट्रिपुरी और (२) रत्नपुर में राज्य करती थीं।

कल्चुरि राजवंश की प्रथम शाखा के केक्कुल में नहीं शाधारणी इसी के अन्तिम काल में जबलपुर के उत्तर की ओर फैले हुए ट्याग काल में पुरातत्त्व व तनाथ का क्षेत्र को अपना अधार बनाया दिया था। उनमें से सबसे बड़ी पुरातत्त्व शाखा का उत्थान हुआ और नवगांव का पार्श्वभाग के क्षेत्र को बनाया दिया था। उनमें से एक सबसे बड़ी शाखा का उत्थान हुआ और नवगांव का पार्श्वभाग के क्षेत्र को बनाया दिया था। उन्हें जबलपुर के वोंथुगाँव जिले में शाखा के रूप में उत्थान हुआ। तब से रत्नपुर, वंशिक शाखा के द्वारा रत्नपुर का नाम से विद्यमान हो गई।

प्रायः लेखों में त्रिपुरी-शाखा के लगभग पद्धक शाखाओं का उल्लेख मिलता है। ऐसे लेख अनंत तीस से लगभग प्रायः हैं, जिनमें से अधिक तालुकाएं हैं। कल्चुरि लेखों के कार्यकालीन समय में संक्षेप भी बहुत है।

यद्यपि त्रिपुरी शाखा की राजवंशीय रूपमें थी, किंतु कल्चुरि वंश के प्रारंभिक राजकीयों के लेख मुख्यतः किव्यप्रदेश के रूप में राज्य तथा रत्नपुर, दमोह जैसे जिलों में, जो मध्यप्रदेश की उत्तरी सीमा पर है, मिलते हैं। तालाद़ुलाई, छोटी देवी, गारद आदि के भूमिका में यह वंश के सबसे प्राचीन देख प्रायः लगा है, जिससे इस प्रकार कल्चुरि वंशियों का रूपमें जाना होता है। राष्ट्रकूट राजकीयों के

इन सिक्कों और पुरातनता अवशेष थीं, किंतु अभी चक्र के इन सिक्कों का सांगा ऐसा बिंदु गया कि इस सिक्कों ने छोड़ा और गौत्र सा प्राप्त हुआ। इसीलिए उसे लेकर इस नाम से पुकारने लगे। ये सिक्के चौदी तथा तौंबे के हैं।
मुख्य वंश के साथ त्रिपुरी शासन के कल्पकों के राजाओं ने वैवाहिक संबंध स्थापित किये थे। अधिकांश त्रिपुरिय लोगों ने रागुकुट वंश के साथ विवाह किया था, यद्यपि राजवंश की सामाजिक प्रतिष्ठा उच्च रह गई। इस वंश की राज-महिलाओं के नाम भी कुछ विचित्र है, जैसे अल्पनदेवी, नीहलदेवी, तेसरालदेवी आदि।

त्रिपुरी-शासन का सबसे प्रसिद्ध शासक सत्राक नाम था। जनशक्तियाँ, लोगों, साहित्यिक विचारों तथा लोकगीतों के द्वारा यह जाना जा सकता है कि अपना लोकनरीण उसने विवेचन राजाओं पर आक्रमण करके उनसे अधिकार करने में सफल था और अपने नवज-न्यायों को विलुप्त-क्षेत्र बनाए थे। त्रिपुरियों से यह स्पष्ट है कि उसके शासन काल में कल्पक-राजाओं का भीमसेन कितना सबसे अधिक था। उसके प्रभाव का अभाव अधिकांश राजा के हाल में भी विशाल साम्राज्य था। हार्दिक नाम और नाम धर्म का समाज का विशेष व्याप संसार था।

कल्पक-राजाओं के प्रतिनिधित्व के माध्यम से पातुप-राजस-संभाव, प्राचीन-साहित्य-संबंध होने वाले जैसे और जैन धर्म का समाज के विशेष रूप में उल्लेखनीय है। राजधानी जैसे कि इसी वंश के अभाय में प्रभाव हुए। राजधानी का ‘काल्पकरी’ नामक प्रसिद्ध नाटक कल्पक-राज्य के प्रोक्षण से ही रचा गया था।

इस वंश ने मुख्य-कल्प को भी प्रसिद्ध-प्रोक्षण देकर दिखाया गया। तलाओं का मुख्य-कल्प में शासन रूप-स्थापना के साथ समान से समान वादाओं के भी मुख-स्थापना का पुष्प प्राप्त किया गया है तथापि मुख्य-कल्प में मार्ग-भावना-चित्रित की और समाज के कहानियों की श्रेय से विवेचन प्रयास नहीं किया गया। प्राचीन मुख्य-कल्प के निर्णय नियमों के आदर्श पर विवेचन निर्निर्णय की गई है किंतु वे प्रायः निर्णय और मात्र उल्लेखनीय विशेष रूप में नहीं हैं। परंतु यह मानना पड़ेगा कि इस समय का मुख्य-कल्प के सामाजिक विचार का श्रेय वस्तव में कल्पक-राजाओं को ही है। कल्पक-राजाओं मुख्य-कल्पों से यह स्पष्ट है कि इस मुख्य-कल्प पर गुण-कार्य के मुख्य-कल्प का अधिक प्रभाव है। किंतु यह निर्णय रूप में बहुत जा सकता है कि कल्पक-राजाओं में मुख्य-कल्प का कुछ रूपों का है। कल्पक रूप में अंतिम अवधि से विवेचन प्रयास किया गया है और भावना-चित्रित के लाभ का बढ़ता अनुभव सम्मुह नहीं है। क्योंकि कल्प का उपर्युक्त मार्ग-भावना व्यंजन में ही अधिक है, तो यह रूप-संबंध में निर्णय विशेषता का चारण रहा है। भवना-चित्रित के लाभ का बढ़ता अनुभव सम्मुह नहीं है। क्योंकि कल्प का उपर्युक्त मार्ग-भावना व्यंजन में ही अधिक है, तो यह रूप-संबंध में निर्णय विशेषता का चारण रहा है। भवना-चित्रित के लाभ का बढ़ता अनुभव सम्मुह नहीं है। क्योंकि कल्प का उपर्युक्त मार्ग-भावना व्यंजन में ही अधिक है, तो यह रूप-संबंध में निर्णय विशेषता का चारण रहा है। भवना-चित्रित के लाभ का बढ़ता अनुभव सम्मुह नहीं है। क्योंकि कल्प का उपर्युक्त मार्ग-भावना व्यंजन में ही अधिक है, तो यह रूप-संबंध में निर्णय विशेषता का चारण रहा है।
बारहवीं शताब्दी ईस्वी के अन्त में इस वंश का भी अन्त हो गया। इस वंश के लेखकों में एक विशेष संदर्भ का प्रयोग किया गया है, जिसे 'कल्जुरी-चौड़ी' संस्कृत कहा जाता है। यह संस्कृत २४१, ई. में कालिक मास से प्रारम्भ होता है।

कल्जुरी-चौड़ी के एक पूर्व शासक कुमारराज के चौड़ी के सिके बिस्मिल के कई स्नायू में पाये गये हैं।

मिरुपी-शास्त्रांक के केसर एक शासक गंगेयदेव के सिके का पता चलता है। वे सागर, जबलपुर वैसे मध्य प्रदेश के उत्तर जिलों में तथा उत्तर प्रदेश के भिजाृपुर आदि दक्षिणी जिलों से प्राय हुए हैं। वे सोने, चौड़ी तथा तांबे के हैं। तांबे तथा चौड़ी के सिके लघु-सुद्रों की अपेक्षा कम हैं।

कल्जुरी वंश की रतनपुर शाखा

कल्जुरीयों की रतनपुर शाखा को कई से छोटे पुत्र कल्जुरीराज से प्रारम्भ होती है, जिसे कोनो महल में पुर्णास के आस्थाय का प्रेमी नवीं शताब्दी ईस्वी के अन्त में प्राय दिया था। इस शाखाकी म्यार शासकों का विवरण प्राय होता है और खूब विचार से उनका राज्य महानादी के उत्तर कल्जुरी जिले में बना दिया गया था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि राजपुर के भागों पर उनके साम्राज्य का अभिकार रखा होगा। इसी का २२ से लेकर २२४ तक की एक शताब्दी में इस वंश के २८ लेख प्राय होते हैं, जिनमें १३ तामपत्र तथा १५ विलासङ्ग हैं। उनमें से अधिकांश (दस) इस वंश के प्रभावशाली शासक पृथ्वीदेव द्वितीय के हैं।

चौड़ी को और चौड़ी (चौड़ी) शासकों के आर्कमों को विफल कर यह शाखा कल्जुरी जिले में बदल हो गई। इस वंश के शासक तथा साम्राज्य अपने जन-हित के कार्यों के लिये जिन में संडर, स्तोत्र, उपवन तथा विहार आदि का निर्माण मुख्य है, प्रसिद्ध थे। इस प्रारूप-साम्राज्य का अनुष्ठान अभी तक इस रूप में भी नहीं दिया जिस रूप में इसी वंश की मिरुपी-शाखा का अनुसूचित साम्राज्य का अनुष्ठान श्री राक्षसदास बनाने के प्रयोग है।

इसके बाद से स्मारक, जिनके उपवन नारे के बारे प्रकाश में लाया जा सकता है, कल्जुरी जिले के क्षेत्र-प्रदेश में बदल से पड़े हुए हैं।

जानकर्तार, पृथ्वीदेव द्वितीय तथा राष्ट्रदेव द्वितीय के चौड़ी के सोने के सिके उपबन्ध होते हैं। भी, पृथ्वीदेव द्वितीय के राज्य के चौड़ी के सिके का भी पता चलता है। इसी वंश के अंतिम शासक प्रतापमूढ के चौड़ी तांबे के सिके ओरते हैं। ये सिके मुख्यतः कल्जुरी, राजपुर, सारंगपुर, चारसागर राज्य तथा कुछ उत्तर-प्रदेश के भिजाृपुर जिले में प्राय होते हैं।

पूर्व २२ पर दिये गये मानचित्र से लेखों तथा सिके के प्राप्त-स्थानों का परिचय प्रायिक मिरुपी-शाखा क्रिया भाग के रूप में शीर्ष ही प्रकाशित हो रहा है।

"भारतीय-संस्कृत-संग्रह" (Corpus Inscriptionum Indicarum) के चौरह भाग के रूप में शीर्ष ही प्रकाशित हो रहा है।
(๗) यादव साम्राज्य

इतिहास से यह विदित होता है कि इसा को म्यारहवी-बारहवी शताब्दी के मध्य में विद्रोह का अभिकार भाग देवगिरि के यादव शासकों के अभिविलय में था। बारहवी के काक्तीय राजाओं को परास्त करने के प्रयास कर पायद शंभार नगरी दिल्ली और रामचंद्र के शासन-काल में इस बंदा का साम्राज्य उच्च की ओर विद्रोह में फैला और इस शेष प्रथमत: सिंहव के सेनापति खोलेक को है।

यादवों के निम्नलिखित शिलालेख मध्य प्रदेश में प्राप्त हुए हैं:

(१) हेमादि का वारी-टाकली शिलालेख, शक १०९८
(२) सिंहव के राज्य-काल का महादुर शिलालेख, शक १११३
(३) यादव कुमार के काल का मण्डल काव्य शिलालेख, शक १६७७
(४) यादव रामचंद्र का रामेक शिलालेख, शक १२२२
(५) यादव रामचंद्र के समय का गांटा शिलालेख, शक १२२७
(६) यादव रामचंद्र का लादी शिलालेख

इन्हें अन्तिम अवधि प्रदेश की दक्षिणी दीर्घावर उनके बाद नामक स्थान में यादव रामचंद्र का शाक संवत १२२२ का एक अवय त्राव में मिला है।

बारी टाकली का त्राव एक मन्दिर के निर्माण का उलेख करता है। महादुर शिलालेख महाराज सिंहव के शासन-काल में संबंधित है। पूर्व महाराज नाम में लिखित नामावली के शिलालेख में तत्त्व एक विशेष मन्दिर में पुष्पादि अर्चनोपाल दी कामें में व्यवस्थापित एक विशेष मन्दिर में एक निकटस्थ पत्र पत्रों, जो तीन के समय के तेहथूलक्षित हैं, नाम महराज रामचंद्र के कई महत्त्वपूर्ण दानों का उलेख है। लादी का शिलालेख सेतास्थानक रूप से नहीं पड़ा जा सकता।

यादव सिंहव का सेनापति खोलेक अमरावती का निवासी था। हैदराबाद राज्य के आचे नामक प्राम से प्रात लेख में उसके कई दानों का उलेख किया गया है। उसके द्वारा अवकार में विशेष मन्दिर के निर्मित करने के बारे की बात जाने का अर्थ है। पण्डित (पूजी) नदी के तत्त्व पर इसी निर्मित नदी पर एक नगर (आधुनिक खोलेक) का भी समय का था। इसी प्रकार वर्तम (वार्षिक) नदी के क्रियान्वयन में अस्थायी, तथा कुपोषाद का आदि समानोपयोगी स्थानों का उत्सव का द्वारा निर्मित करना जाने भी कहा जाता है। इस शिलालेख का लेखन-काल शक संवत १३५० है।

विद्रोह में यादव शासकों के विशेष उल्लेखनीय कला-कार्य हेमारातों मन्दिर हैं, जो अर्कोला, बुलढाणा, व्यत्यात, वार्षिक, वक्त, नंदगुर तथा मंदारा जिलों के विश्वसन क्षेत्र में बनकर हुए हैं। संभवतः इस समय यादव साम्राज्यके विशेष हीकर नरमध्य के उस पार अवधि छत्रीसागर प्राप्त तक न हुआ था और बालावाड़ क्षेत्र में लादी तथा भीर, जहाँ हेमारातों मन्दिर मिले हैं, इस साम्राज्य के तीन मास्त तथा हेमारातों का कला का ही महत्त्वपूर्ण है।

पृष्ठ २६ पर दिये गई नामालिक में विद्रोह के अविश्वास हेमारातों तथा मन्दिर स्थापत्य का दिया गया है। इन स्थानों में से लोकार, मेदौर, सांताउँ, भीर, बारी-टाकली, सिसर तथा ग्राम पेड़ के मन्दिर स्थापत्य और शिला-कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।
हेमाकंप्ति मंदिरों के संबंध में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि ये मंदिर बड़े बड़े शिलाओं को काट-छेँटकर निकालें गये खुदीयाँ प्रस्तर खंडों को एक दूसरे पर रख कर बनाये गये थे और उनमें कहीं भी चुनौती का जोड़ नहीं है। मंदिरों की भीतरी छोटी पर प्रथम उभरे हुए कम्प्लेक्स की तरह थे। उनके बीच अलग-अलग: यादगार हैं। कभी उन खंडों के मयम्म हवा बाहर रहे गये हैं। मंदिरों के बारों और शरदुंग दुर्गे प्रसार और मंदिरों की चारों दीवारों में आये बनावट विविध प्रकार की मूर्तियाँ स्थापित की गईं हैं। इन मंदिरों में प्राप्त: शिव-मूर्तियों का बहुत है। कुछ मंदिरों में देवी और विष्णु की मूर्तियों में हैं। उन्हीं मंदिरों में कहीं-कहीं कुछ जैन मंदिर भी हैं।

इन मंदिरों से अतिरिक्त इतनी धारा भी बनी हुई यथाशालागत, बापिया, मठों आदि के संरचन भवन भी उद्घोषित हैं और तक्षाल ध्यान काल के अंते उद्घोषित हैं।

यादयों के राय-काल में महात्मागुरु प्रसार जो एक महात्मागुरु प्रसार जो धार्मिक सम्प्रदाय है, का धार्मिक आन्दोलन क्रिया तीर्थ-गति से चला। इसके प्रवर्तक थे चक्रवर्ति, जो महाराज इरण तथा रामचंद्र के समकालिक थे। इस सम्प्रदाय का साहित्य विशेष संरचनात्मक लिपि तथा पूर्व मान्यता भाषा में लिखा गया है। इनके से एक प्रथम में जो 'स्वामी-पोषा' के नाम से प्रसिद्ध है, विद्वान के महात्मागुरु वर्ग का मौलिक वर्णन दिया गया है।

यादयव राजाओं के सोने के सिक्के में प्रदेश के यथाशालागत प्रतिक जिन्हें कल्पन नामक स्थल से प्राप्त हुए हैं।

(8) धार्मिक जीवन

बौद्ध-धर्म

बौद्ध धर्म जो कभी मयम्म प्रदेश में पूर्णतः समाप्त सा हो जुका है, शातवाहन काल में अपनी सामान्य उन्नत दशा में था। यह बात जिनकी जुड़ता ने प्राप्त दूसरी शातवाहन के बौद्ध-विद्वानों तथा तक्षालीन पत्र और मान्यक के सिद्ध मुद्राओं द्वारा स्पष्ट होती है। इसके पाँचवीं तथा चौथी शताब्दी के भागीदार बौद्धों के महायान शाखा के अनुसूचियों की संख्या सबसे अधिक हो गई। सिसुपुरु, तुतुरियाँ, तेवर, गोपाल-पुर, तिलाना छात्र, भेड़ाकटा तथा इन आदि स्थानों के अन्तर्गत की प्रमुख, पर्याप्त, विशेष, तारा आदि मूर्तियों प्राप्त हुई हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय प्राप्त में बौद्ध धर्म की महायान शाखा का परीक्षण प्राप्त हुआ था।

व्यापक १०० इस्पेक्टर में महाराजीकोण हिरण्य शाक्त प्राम द्वारा स्पष्ट तथा उनके स्थान समय में उल्लभ एक दूसरे प्रदेश में कर्म की नामक स्थान में पृथ्वी एक बौद्ध-विद्वान के शाक्त प्राम जीते जाने का उल्लभ है। यह अनुमान दिया जाता है कि यह स्थान विष्णुपुर जिन्हें के अन्तर्गत, महाराज की ईशाय दिशा में ११ मील द्वारा स्पष्ट अधिक तरोड़ नामक प्राम हो सकता है। किन्तु इस का निश्चित दिन तक से अभी सकता है।

सातवीं शताब्दी के पश्चात् कल्पना-काल के अन्तर्गत मयम्म प्रदेश में बौद्ध धर्म की प्रतीति हो गई।

सिसुपुर में प्राप्त कल्पनाधीन पीतल की बौद्ध मूर्तियाँ अपने अत्यधिक काल की व्यवस्था के कारण महत्व रखती हैं। यह उद्घोषित है कि इन मूर्तियों पर स्विंघी प्रमाण प्रस्तुत रूप से उपलब्ध होता है।
जैन केन्द्र

धार्मिक तीर्थ-यात्रा के कई महत्वपूर्ण जैन केन्द्रों में से कारांजा, मुक्तिगिरि, रामेटेक, कुंभापुर, खोलपुर, वरेटा और मेलेकिरि-सुमेद थे। कल्याणी समय का बहुत सी जैन मूर्तियाँ तो मन्दिर प्रदेश के उत्तरी भाग में थीं, किंतु पाण्डव-पाण्डव-काल की जैन मूर्तियाँ ठीकसाड़ में फैली थीं। सबसे दक्षिण-पूर्वी की भाँड़ की मूर्तियाँ यहीं से उपलब्ध होती थीं। उपरिवर्तित अर्थ केन्द्र साधारण अनुभव के अवसर से आमतौर पर उनके निवास में रहती थी। जो जैन मूर्तियाँ प्रात हुई, वे मन्दिर महावान, पार्षदकार, चन्द्रमां, मंगल, आदि नामक तथा उनकी उपासना की प्रणाली पूर्ववर्ती थीं। अन्य विशेषता के लिए राजनाथ सिंह नवीन, सुमेद और सुभाषित भक्तिवादियों के मन्दिरों में प्रात पार्षदकार और विवेकानन्द की बात सुनवाई, जो आग्रहपूर्ण संदर्भ में संचालित है, पुरातत्त्व और कला संबंधी विकासाधनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

प्राचीन देवताओं में विद्भर् निर्म (किशोर: अनुपल) नामक मंदिर में स्थित अत्यन्तर्जातिक ख्याति का लक्ष्य है। जैन मंदिर के महत्त्वपूर्ण स्थान है।

वैदिक धर्म

इतिहास के प्रारंभ से ही धर्म सभी भारतीय में वैदिक धर्म का प्रभाव ध्यान देना चाहिए। मन्दिर प्रदेश भी इसका अवधार नहीं है। प्राचीन धर्म में देवताओं, मूर्तियों आदि से विवेकानन्द के धर्म के कल्याणों अवसर के रूप में प्रात होते हैं। सुशासनित होने से इसके संघ में विश्वासाधारण विवाह करने की आवश्यकता नहीं है, किला विवाह दृष्टि से निम्नलिखित व्यायामों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मन्दिर प्रदेश में प्राचीन धर्म, वैष्णव या भौतिक पंचों का जीवनरूप समारक प्राचीन काल है। धर्म के विकास के दृष्टि से यहाँ मूर्ति-वृत्त से संबंधित अर्थ अर्थक के रूप में देखा जाता है, जो बीती वर्ष सुकृत है, के अनियमित अन्य सामाजिक विशेष रूप से उपलब्ध नहीं है। शात्रवाहन काल से संबंधित विवेचनों में सकती राजा गांवुपुरी स्थान से प्रात प्रत्येक के रूप में सुकृत है, तथा बुधवार में प्रात नये शिवरेखा, जो इसी की दूसरी शताब्दी में उन्नीत हुआ था, में विषू का देशवादक का उद्देश्य मिलता था। यह देशवादक भारत में बहुत प्राचीन सा माना जाता है। प्राचीन समय का भारत शासन महादेव के पवनी लेख माधवाङ्गो को उद्देश्य करता है, जिसके द्वारा संस्कृति: माधवाङ्ग की पाठकों को उद्देश्य है। यह लेख उस्मानी नहीं था कि पाठकों की प्राण-प्रणाली का भाषांतर प्रदेश के संग्रह प्रकाश है। इस प्रणाली का अन्य उद्देश्य वाक्यात्मक लेखों में विशेषता तथा राम का पाठकों के विषय में प्रात होता है।

गुनों के समय से विषय के वर्ग-वर्ग से प्राप्त की प्रात दौरा तथा भारत के अन्य भागों में समानता अवस्थित की दिशा के दिशा पहुँच है। इसका अनुसरण कल्याणी काल में भी होता रहा और माधवायणी, मोहनी, रामायण, बिहारी, तनाव, मदनपुर तथा हरा आदि के शिरों से प्रात शिवार्त का उद्देश्य उद्धरण है। वाक्यात्मक-वाक्यात्मक के एक लेख द्वारा विद्यमान अन्य शिरों में प्रतीक का पता चलता है। कल्याणी काल में विस्तार के समय में उनके समानता आदर्श द्वारा सुसंग-पुत्र रेखा के मंदिर के विशेष का उद्देश्य पाया जाता है। संस्कृति: भारत वर्ष में यह अन्येक ही उद्धरण है जिसमें रेखा के मंदिर का उद्देश्य मिलता है। किंतु यह
बात उल्लेखनीय है कि रेकल की कल्चुरी काजीन एक प्रस्तार मूर्ति रीवाँ राज्य में मनोरा नामक प्राम से प्राप्त हुई है। तात्विक की एक मूर्ति त्रिपुरी में भी प्राप्त हुई थी जो अभी नागपुर में भी पहचान जी के संबंध में है।

कल्चुरियों के समय में पालुक्त पंथीयों को राजाराम मिलने से मेघावाट में ६४ योगिनियों के विशाल बुधकार देवतालय का निर्माण हुआ था। पुरातन के लिये नया प्रदेश में यह एक अद्वैत वस्तु है। भारतवर्ष में केवल ऐसे चार या पाँच देवतालय ब्राह्म हैं, जिनमें से बड़े राजीनार, रामभूम सरीराल तथा कोई महादुर के अन्य देवतालय उल्लेखनीय है।

देवियों का अस्तित्व मूर्तियाँ मय ग्रंथाभ्य होती हैं। कालस्वरूप मूर्तियाँ, उनके निचाय आसन पर दिये हुए नाम के कारण अच्छी तरह से पहचानी जाती हैं। बिन्दु उसके शिल्प-शास्त्रीय अथवा प्राचीन विचारण कहीं नहीं मिल सकता। उसका उदाहरण मय ग्रंथाभ्य में कुछ अभाव स्थान से प्राप्त और सर्वनिवृत्त जवामचार महासागर में संरक्षित "वीर कल्चुरी" की मूर्ति है। इसी प्रकार खण्डवा में पश्चिम नामक स्थान पर कई मूर्तियाँ उपलब्ध हैं जिनके नाम निचाय आसन पर लिखे हुए हैं।

मानवता में एक देवतालय विश्व के २४ अवतार वासी मूर्तियों के लिये प्रसिद्ध है। चौरा के समीप मार्कैडी में जितेसु देवतालय का साह्ल शिल्प बना का उद्देश्य उदारहर है।

थोटे के देवतालय के विषय में पाठकों ही वर्णन किया जा चुका है। ये मंदिर भारतवर्ष भर में प्रचार वहुत कम मिलते हैं।

सुधारप्यत गव्येण्य के अभाव से यहाँ-वहाँ चित्रकी हुई यह मौलिक सामग्री अभी तक अभाव सी ही रही है।

(९) गुफायें

पृष्ठ २० पर में दिये हुए मानचित्र से मयग्रंथाभ्य में गुफाओं का बोध होता है। ऐसी गुफायें २५ के लगभग हैं। परंतु यह सूची पूर्ण नहीं है। यहाँ कितनी ही प्राचीनमुखी गुफाओं और गहराई को इस्तीफे उलेख नहीं किया गया है क्योंकि उसके विषय में पाठकों का कोई संशय नहीं हुआ है।

अधारभ रुल गुफाओं नागपुर, चौरा, भंडारा, बैदूल, हीराशंकराम, विजापुर, अकोला, कुलदा, या यंत्रमण मिली जिसमें है और सागर, महाब, जबलपुर, चिन्दवाड़ा तथा सिवनी जिलों में इन गुफाओं की स्थिति को लेते उलेख प्राप्त नहीं हुआ है।

ये गुफाओं अभिावश्यक: नरम लाल पत्थर अथवा विस्फोट यहाँ के काटकर बनाई गई हैं। इन गुफाओं की मूल स्थिति के निश्चय-दाने के लिये कोई साधन नहीं है। यथापि जिलों के हेडेशटियरों में वहाँ वहुत वर्गन प्राप्त होता है, तथापि उनके प्रयोजन तथा रचना-काल के संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता। इन गुफाओं के निकट पुरी आवास को भी में लगते हैं, इसलिये इन गुफाओं की कुछ महत्ता अथवा अपरिहार नहीं है। ऐसी स्थिति में भी यह निश्चय नहीं किया जा सकता कि इन गुफाओं का किस धर्म-सम्राट तथा समाज से संबंध था।
... 31 ...

प्रागैतिहासिक गुफाओं और गुंभिरों के अति शिक्षण सर्गून राज्य में रामगढ़ पहाड़ी की गुफाओं मध्य प्रदेश में सबसे परम्परां है और वे निष्केंद्र मैथिली काल की हैं। माँदक और अकोला क्षेत्र में पताका की गुफाओं भी सातवाहन-काल की हैं। इन गुफाओं का वर्णन पुरातत्त्वविद्वांस भी मानते कर चुके हैं। मध्य प्रदेश की सीमा पर प्राचीन गुफाओं में काराफाइग निकट शिलाहार गुफाओं का उल्लेख किया जा सकता है, जिनमें दस्तरी शान्तवल्ली के लेख भी मिलते हैं।

यह निश्चित नहीं बता जा सकता कि इन गुफाओं में से किसी गुफा को भी उन अन्यों में गुहा-मंदिर (Cave temple) की संख्या प्रदान की जा सकती है, जिन अवयों में अकार, वेदांत आदि अन्य गुफाओं तथा दांविन की जैसी अन्य गुफाओं को "गुहा-मंदिर" की संख्या दी गई है। इस संख्या में किर से गोष्टियन की नवीन रूप में आवश्यकता है।

( १० ) दुर्ग

मध्य प्रदेश में अन्य दुर्ग का विपञ्चन पर विचार है कि अन्य समय स्वीकृति पर है। भारतवर्ष में जनरक्षा की दृष्टि से दुर्ग बहुत प्राचीन काल से ही महत्त्व रखते थे। दुर्गों का उद्देश्य अवश्य भारत के कोलकाता अवश्य जैसे प्राचीन प्राकृतिक मिलते हैं। मैथिली निर्माण के सामान्य अशोक के द्वारा निर्मित गये दुर्ग के निर्माण तत्त्व (Palisade आदिवासी चबूतरा) पाटियार्टु निर्माण उज्ज्वली निर्माण द्वारा निर्मित हुए हैं। भारत सरकार के पुरातत्त्व-विभाग के ओर से शिलालग्न के उल्लेख में इसे की चौथी स्थानीय निर्माण के चलत्तेरा प्राचीन हुए हैं। दस्तरी शताब्दी के उपरात दुर्गों के निर्माण करने और कराने की प्राकृति अविकल चलते गये।

मध्य प्रदेश के प्राचीन दुर्गों के विषय में हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि उन दुर्गों का निर्माण वर्ष में आता है। कल्पनाकृति काल से अनेक दुर्गों के निर्माण कराये जाने के उद्देश्य मिलते हैं। कुलुदरी पुरात्त्व से महाराज की दुर्ग के द्वारा निर्मित कराये गये दुर्ग के मिनार का फळ चलता है। इस काल के दुर्ग राहतगड़, लोविकिया, तत्पुर, सिपुर तथा दुर्ग में बने जा सकते हैं। कल्पनाकृति शासन दुर्ग के निर्माण करते समय प्राकृतिक-शिल्प से लागू जाने में विशेष पद्धा थी।

मध्य प्रदेश के अन्य दुर्गों की चौथी शताब्दी के परवर तक के हैं। विशेष विश्वासवादी तथा समग्र शताब्दी के बीच के ही प्रतिवाद होते हैं। इन दुर्गों में कुछ दुर्गों का (१) अवधी प्राचीन है और कुछ (२) सुमनसान, (३) गोदा, (४) शास्त्रीय राजभाषा शास्त्र, होंगी मुखिया तथा (५) मराठा शासकों द्वारा निर्मित कराये गये दुर्गों आता है।

प्राचीन दुर्गों के विषय में हमारा वांछन बहुत ही कम है। निर्माणकाल के रूप में आता इस सामग्री के आवाज पर पर यह अनुमान किया जा सकता है कि कुछ दुर्गों प्राचीन काल में ही रहे होंगे। मिले निर्माण के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उनके प्राचीन भारतीय निर्मित रूप जो नहीं मिल सकते हैं। सामान्यतः प्राचीन दुर्गों के मूल स्तर परवर शासकों द्वारा वायु परिवर्तित कर दिये जाते थे। अतएव उनके उन मूल रूपों का निर्धारीकरण नहीं किया जा सकता। सुमनसान कालिन दुर्गों में ऐसा परिवर्तन बहुत ही कम हुआ है। वायु: उनमें से अन्य दुर्गों के तत्कालीन साहित्य तथा इतिहास के
प्रंयों में उँचीकित होने, तथा उनके प्रत्येक निरीक्षण करने और अन्य शिलालेखादि से उनके समय तथा उनमें गये किसी परिवर्तनादि का बान ग्राह होता है। दुर्गाग्रत्न अन्य भवनों, मर्गिदें इलाहि के उत्कृष्ट भी उन शिलालेखों में मिलते हैं जो इतिहास-रचना के लिए अतुलन्य हैं।

मुगलमन शासकों अथवा उनके समकालीन अन्य अभिकारियों के द्वारा निर्मित कराये गये हृदय यथार्थ प्रदेश में पत्रमर्मत्व तथा उत्तरी जिलों में अवयप्री बिधवामान हैं। इनमें से विग्राहक बनहापुर, गंगा-लगढ़, नरनाल, असीरगढ़, बांधुर, लेह आदि स्थानों के दुर्गाइशेष प्रमुख हैं। उनकी जिलों में खिमलासा, राहतगढ़, माद्योन, बडीहागढ़ आदि अन्य हृदय-स्थान हैं। इन्हीं दुर्गों में तकालीन मुगलमन शासक गुप्त राजनैतिक मंचनांत्य, युद्ध-सत्तियों तथा अन्य शासन-कार्य करते थे।

मराठा शासकों के दृष्टिकोण में मुगलमन कालीन दुर्गों का ही अनुकरण दिखाई पड़ता है। वे कतिपय छोटे हृदय सिर्फ़ हिंदी की दृष्टि से बनाते थे, जिनको 'गाढ़ी' संहा दी जाती थी। ऐसी गाढ़ीयाँ भी यथार्थ प्रदेश में कुछ स्थान-विशेष पर अवशिष्ट हैं।

अभी तक राजाराजे के आधार पर इतना ही व्यतिक्रम जा सकता है कि गोड शासक हृदय बनाते समय छोटी छोटी पक्ष हृदय का उपयोग बहुत करते थे और जुने का उपयोग भी उनके द्वारा निर्माण कराये गये म्योनों में बहुत होता था। प्राकृतिक स्थिति का नाम उठाने में गोड़ शासक पदुं थे। किंतु उनकी शासन-कार्य में मुगलमन दुर्गों के समान भवन तथा कल-दृष्टि का अभाव तो अत्यन्त होता है।

प्राचीन मध्यमें अनुसार दुर्गों की शिलालेख-संख्या मुगलमन-काल के पद्धार्थ बदती जाती दिखाई पड़ती है। आज के समय में उनकी उपयोगिता नष्ट होने से प्रायः सभी हृदय उठाइ तथा उनके क्षेत्रों में कम सिद्धांतों के निवासस्थान जैसे बने हें मानल होते हैं। स्थापत्य-कला, आलंकार का प्रकोप साधन इत्यादि इतिहास से इन दुर्गों का अहेवन तथा रेखाशास्त्र आदि होने की आवश्यकता प्रतीत होती है। चूँकि कालन्तर में उनमें अधिकांश स्थानों के नष्ट होने का बहुत भय है।
Ancient India: Bulletin of the Archaeological Survey of India.
AR, ASI.: Annual Report, Archaeological Survey of India.
ASR.,: Cunningham, Archaeological Survey Reports, (Vol. I-XXV).
CAI.: Cunningham, Coins of Ancient India.
CMI.: Cunningham, Coins of Mediaeval India.
CIC, BM.: Catalogue of Coins in the British Museum.
IH.Q.: Indian Historical Quarterly.
Ind. Ant.: Indian Antiquary.
JAHRS: Journal of the Andhra Historical Research Society.
JASB: Journal of the Asiatic Society of Bengal.
JBBRAS: Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society.
JBORS: Journal of the Bihar and Orissa Research Society.
JBHU: Journal of the Benaras Hindu University.
JII.: Journal of the Indian History.
JRAS,: Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain.
MASI,: Memoirs of the Archaeological Survey of India.
Medieval Temples: Cousins, Medieval Temples of the Dakhan.
PR, ASI. WC.: Progress Report, Archaeological Survey of India, Western Circle, Poona.
PRASB,: Proceedings of the Asiatic Society of Bengal.
RGSI,: Records of the Geological Survey of India.

काजीन्द्र-सखी: Cousins. List of Antiquarian Remains in C. P. and Berar.
गेजित्य: Gazetteers of the Districts in C. P.
द. म. इ. सा.: दक्षिणपूर्व मध्यपुर्ण इतिहासाची साहित्य, खंड १-४.
म. इ. सा. म. चै.: भारत इतिहास संस्कृतक महाजन पुस्तक का रूपांतरण.
मण्डलकर सखी: List of Inscriptions in Northern India.

Appendix to Epigraphia Indica, Vol. XIX-XXIII

सरकारी नाणक सखी: Lists of Treasure Trove coins published by Govt of C. P.
मध्यप्रदेश के पुरातत्त्वोपयोगी साहित्य की सूची

(१) इतिहास-पूर्व काल (पृष्ठ ३७ से ४२)

(१) पुराने अश्मयुग के हथियार ३७-३८
(२) नये अश्मयुग के हथियार ३८-३९
(३) मुहम्मदीयुग के हथियार ३९
(४) विचारित पर्वतीय शिलालेख-स्थान ४२-४१
(५) वृत्ताकार अश्मयुगीन शब्द-स्थान ४१-४२
(६) तात्त्विक आंधार ४२-४३

(२) मौर्यकाल (पृष्ठ ४२ से ४५)

(आ) शिलालेख ४२
(आ) सुदाँएँ  ४३ अ) आहत-मुदां  ४३ इ) गण राज्यों के सिके ४४ 
(iii) प्राचीन धर्म हटे द्वे सिके ४५ (iv) अन्य मुदाँएँ  ४५

(३) शातवाहन काल (पृष्ठ ४५ से ४८)

(i) शातवाहनकालीन शिलालेख  ४६ (ii) गुप्ताँएँ  ४६ (iii) शुदाँएँ (अ) शातवाहन-पूर्व काल  ४६ (आ) शातवाहन-उत्तर काल  ४७ (iv) सूर-शिके और पदक  ४७ (v) कुप्त मिसके  ४७ (vi) शास्त्र शिके  ४८ (vii) अन्य सामापी  ४८

(४) गुप्त-वाकाटक काल (पृष्ठ ४८ से ६१)

(i) गुप्त संवारों के लेख  ६८ (ii) गुप्त-वाकाटक काल की मुदाँएँ  ४८-४९ (iii) गुप्त शास्त्रों के सिके  ४९ (iv) सपाट छल्ले के मन्दिर  ४९ (v) गुप्तों के समकालीन लेख  ५० (vi) वाकाटक शास्त्रों के लेख (अ) करंगुलम शाखा  ५२ (v) अन्य शाखा  ५१-५४
(vii) वानस्पतिक शास्त्रीय उनके सामग्री के अन्य लेख ५४-५५।
(viii) अन्य सामग्री ५५।
(ix) दक्षिण कोशल के पाण्डवों के लेख ५५-५६।
(x) पाण्डव वंशीयों के सिक्के ५७।
(xi) इट के देवालय ५७-५८।
(xii) शरमपुर के शासकों के लेख ५८-६०।
(xiii) शरमपुर के शासकों के सिक्के ६०।
(xiv) नन्द राजाओं के लेख ६०-६१।
(xv) नन्द राजाओं के सिक्के ६१।

(५) राष्ट्रीय वंश (६६ से ६७)
(१) लेख (१) अचचल शास्त्रीय ६२-६५।
(२) समाप्त शास्त्रीय ६५।
(३) अन्य ६५।
(४) सतानियन सिक्के ६७।
(५) चौक सिक्के में उल्लेखनीय लेख ६७।

(६) कलचुरी वंश (६७ से ८६)
(१) लेख (अ) त्रिपुरी शास्त्रीय ६६-६९।
(आ) रत्नपुर शास्त्रीय ६६-६९।
(२) कलचुरी सिक्के ६९-८२।
(३) रत्नपुर बन चिन्हपत्र ८२-८६।

(७) यादव साहाब्य (८६ से ९१)
(१) यादव लेख ८६।
(२) यादवसंबंधी अन्य लेख ८७।
(३) चंदा के घररों के लेख ८७।
(४) हेमामंडुकी देशस्थल की सूची ८७-९१।
(५) यादव सिक्के ९१।

(८) युनीयन (९१ से ९२)

(९) युनीयन (९२ से १००)
(१) मुसलमान ९२-९४।
(२) मैथा ९५-९६।
(३) गोपुर ९६-९७।
(४) अन्य ९८-१००।
पुराने अदम्युग के हथियार
(Palaeolithic Implements)

इस समय मध्य प्रदेश में प्रागैतिहासिक के अध्ययन की सामग्री बहुत बिखरी हुई है, किन्तु विशेष अन्वय ने विभिन्न साहित्य के निम्नलिखित रूप से दिये दिखाये:-

Records of the Geological Survey of India, VI, 1873.
डी इंस्ट्रुमेंट्स: Studies in the Ice Age etc; 1939.

अध्ययन के विशेष साहित्य

घोष : Prehistoric Exploration in India, IHQ., XXIV (1948), p. 1-18
हर्षपदसारी : " Stone Age in India" Ancient India, No. 3, pp 11-57.
स्वामी : Notes on Jabalpur Neoliths, Proc. ASB., 1865, pp. 77-80
क्लेंफोर्ड : Notes on Jabalpur Neoliths, PRASB, 1866, pp. 230-34.
केम्पे : Proceeding, ASB. 1866, pp. 135-36.
प्रांती : P.R.A.S.B. 1861, pp. 81-85.
बुध फुट : Catalogue of Pre-historic Antiquities, Notes on their Age and distribution, Madras. 1921.

निम्नलिखित संग्रहों में मध्य प्रदेश से प्राप्त प्रागैतिहासिक काल के प्रत्यार विश्लेषित हैं।

संग्रह (कॉड में हरियाली की संख्या निर्देश है)
कलकाता : इंडियन-म्युजियम [ चित्रालेख १, कृ. १ ]
भुट्टा (१.), केम्पे (१.), देवरी (६.), बुधाना (५.), काशीमपुर (२.), कुर्सेठ (१.)
श्रीमच्छ : नरेंद्र तप पर होशंगाबाद के समीप से प्राप्त (२३)
बनारस-हिन्दू-विभवविद्वालय : होशंगाबाद (६)
नगपुर-संग्रहालय : कलकाता (१.), नंदेगाव (१)
सागर-विभवविद्वालय : देवरी (२.), बुधाना (२)
गाइन-संग्रह : भेलाड (२)
मद्रास-संग्रहालय : हूस फुट का संग्रह (१८) कृ. ४०५५-४०७३
... २ ...

वेल-केन्त्रित-अभियान द्वारा होंगांबाड और नरसिंहपुर के बीच के १३ स्थानों की जांच की गयी थी। इन स्थानों में होंगांबाड के निकटतम ७ क्षेत्र, तथा उमरिया, वर्मनघाट, गोसीवाट इत्यादि के स्थल प्राचीन हथियारों के लिये विशेष महत्व-पूर्ण हैं। इनमें इस प्रकार सामग्री नैचु उद्धृत की जाती है।
De Terra & Paterson, op-cit, pp 313-326.

स्थल २ ४ अंबाबिष्कितयुं कुलहारियाँ (Plate XXXII, A)
५ फ्लेक्स (Flakes)
६ फ्लेक्स (Flakes)

स्थल ४ (आदमघड) कुछ हाप की कुलहारियाँ

स्थल ६
१ हाप की कुलहारी, १ हौस, १ कोर, ८ फ्लेक्स

स्थल ७ सुधिमालायुं कुलहारियाँ (संख्या उद्धृत नहीं)

कुलहारियों के प्रारंभ होने के स्थल: उमरिया, वर्मन गाट, गोसीवाट होंगांबाड

हस्त-संस्कार में १ बुर्जी (Plate 12), २ फ्लेक्स, १ व्यापा और १५ कोर विशेष उद्धृत नहीं।

ये हथियार भू-गंभीर-शाख के अधिकारियों के द्वारा उनको प्राप्त हुए थे। हस्त-संस्कार, प्र. १५५; तथा Pl. 12.

होंगांबाड MASI, 24, Pl. XIII a. (१२ हथियार)

सुधिमा, होंगांबाड; R.G.S.I. VI, 1879; श्रावण, Catalogue, Pl IV, 6, 6a.

सेवन, सागर; Shrawan, Catalogue, Pl IV, 7. (संचयक, १, ३)

मोर, देवरी के दक्षिण में; Proceedings, A.S.B., 1867, pp 142-148.

देवरी, सागर, सुर्खचैन नाला में; Proceedings, A.S.B., 1867, pp 142-148. (३६ हथियार)

सिंधियाँपुर के राज; Proceedings, A.S.B. 1867, pp 142-148. (७ हथियार)

सिंधियाँपुर, राजपुर के चढ़नाथाय के समीप; MASI, 24, pl. XII, (२५ हथियार)

(२) नवे अइम्यूग के हथियार

(Neolithic Implements)

संग्रह:

कलाकृति: संडियन-मृत्तिकाम

कमाग क़ी: १५२-१६० बहुमार्ग, और दमोह के समीप, बिलस-संग्रह

१७४ गोपाल, जबलपुर

१८३ दूर, जबलपुर

१६८-१७६ जबलपुर; कैरी-संग्रह

१०७०-१०७३ झुसेबाबा, कटनी के पूर्व में ८ मील पर

१२२८-२६३ जबलपुर; अपनेंद्र-संग्रह १४४२

१८६७-२७८ जबलपुर

२०७६-२०८२ गुडाम, जबलपुर
(३) सुक्ष्मादिमयुगीनाल्ल
(Microlithic Implements)

ये हथियार प्राय: सभी मित्रधिन चंद्रानाथम व मित्र में मिले हैं। जैसे कावर पहाड़, सिंचन्दुर, पचमधी, होंगाकावर।


सिंचन्दुर: मनोहर, व. MASI., 24. (Delhi 1932)


जबलपुर के निकट 'बड़ा शिला' नामक पहाड़ पर ये हथियार अविद संख्या में मिलते हैं; इसके विशेषण के द्वारा देखिये—गार्डन, Holocene in India, Ancient India, No. 6, p. 71.

होंगाकावर के समाप्त तथा तयारी व समयियों के उदंग पर: De Terra and Paterson, Ice Age etc, pl. XXXII, A.

वरिशा: वरिशा की लुड़ड़ी (१९५३) में ये भाग में अन्तिम स्तर में पाये जाते हैं। डारोगी दीप, Tripuri Excavation Report, 1954. [चित्रफलक १, क्र. ४]

(४) चित्रनिहित पर्वतीय-शिलाध्रय-स्थान
(Rock-shelters with paintings)

भारतव पहाड़: पचमधी के समीप २० मील के बीच में प्राचीन पहाड़ी शिलाध्रयस्थानों का एक बड़ा समूह है, जिसमें से बहुत सी गुफाएँ मानव-द्वारा चित्रित हैं। डोरोगी दीप, जन्दीप, मोंटी रोहा, सीनभट, मोंदेश, काजरी चार, बी दाम, बोरी, बनिया बेरी, मेरी पीप, बड़ा महादेव, छोटा महादेव, आदि कई नामों से
ये परिचित किये जाते हैं। कर्नल गॊर्डन ने बहुत प्रतिष्ठा से इसके लिये एक अच्छा गार्ल-दर्शक (Guide) 
बनवाया है। इसकी एक हस्तालिखित प्रति मुख्य श्री. आमलानंद भोपाल, डायरेक्टर जनरल वी. आर्किकल्चरल 
इंडिया, के सौगत से प्राप्त हुई। उसमें कई चित्र-फलकों तथा चित्रों के द्वारा इन शिलालेखों के स्वाम 
सृजित थे। गॊर्डन-द्वारा प्रकाशित निम्नानुसार इन्हें अवधारण बहुत उपयोगी है।
(1) पचमढ़ी : गॊर्डन “Artistic Sequence of the Rock-paintings in the 
Mahadev Hills ” Science and Culture, V, No. 6 
pp. 322-327; No 7, pp. 387-392
578-84
— “Animals and Demons in Indian cave art” Science & 
Culture
— “Rock paintings of Mahadeo Hills.”
Indian Art and Letters, X (1935), pp. 35-41.
— “Caves of Pachmarhi Hills” (Guide) अंग्रेज़ी
— “Indian cave Paintings” IPEK (1935), pp. 107-114

(2) तामिया :
पचमढ़ी से २० मील पर

(3) झलई :
पचमढ़ी से ३० मील पर

(4) सोनमढ़ :
पचमढ़ी से ४५ मील पर

(5) झोरौरी कीप :
पचमढ़ी

ढाँच का उद्धारन ( १९३६ ), N U J., (1935-36), pp. 28, 127

(6) कावा पहाड़ : रायगढ़ से आम्रपाल के सहित १० मील द (गॊर्डन-द्वारा संशोधित)
गॊर्डन, “ Rock Paintings of the Kabra Pahar.” Science and Culture 
V, No 5, pp 269-70

(7) सिंघाणपुर : (रायगढ़ के निकट नावापुरी रेलवे स्टेशन से ३ मील पर) (चित्रकल्प ३, क. ११)
मनोरंजन घोष, MASI, 24,pp 9-14; Plates II-IV, XII b (24 Implements)
गॊर्डन “Date of Singhpanpur Paintings.” Science and Culture, 
Vol. V, No. 3, pp. 142-147

अंडरसन, “Rock paintings of Singhpanpur,” J B O R S, 1918,
pp. 298-306

(8) होशाङबाद : आदमगढ़ खानान (चित्रकल्प २, क. ०)
मनोरंजन घोष, “Rock Paintings and other antiquities of Pre-historic 
& later times” MASI, 24 ( Delhi, 1932 ), ch. V.
pp. 21-22 pl. V, XIII

गॊर्डन “Hoshangabad Paintings.”
अद्वैत “Rock paintings of Hoshangabad.
Nagpur Museum Bulletin, No. 2.
मनोहरलाल सिंह, “On the figure of Giraffe...of Hoshangabad”
J B H U., 9, pp. 25-32
(१०) फूणेरापुर: ह्या से ९ मिलियर पर पैदा पिपिया में हीरानाग-धारा संस्कृति; अभ्यं किश्यत हीरानाग; दोमोड-दीपक पु. ८९ पर उक्तजनित।

प्रायः सभी शिल्पशिर्महिन में सूचक आरच्या के हिप्वट तथा श्रेष्ठ दीप-मण्डल में प्राचीन माननी के अस्तितकार भिन्न है, किंतु इनमें भारत सिंद्र का समय अन्यद्वार तरह से निश्चित नहीं निज जा सकता। उत्कृष्ट, संस्कृति, चिन्तारों का क्रामानुसार नोक्षा के रूप से इसका अर्थ, स्वर में अच्छे बिरने के चिन्ता, वी. वी. वाल, Archaeology in India में Rock Paintings पर परिचय, पु. ४४-५०। गोरूद्र के मतानुसार काथा पहाड़ पर भारत चित्र सबसे पुराने हैं।

(५) बूटाकार अरमयुगीन शब्द-स्थान

नागपुर के समीप २० मील की परिधि में कई स्थानों पर बूटाकार शब्द-स्थान विद्यमान हैं। उनमें से 

बहुत से तो संस्कृति स्मारक हैं। शिखरी तथापि के अंत में मेजर विश्वस के द्वारा कामिया के समीप की दो कीमतों को बोधवशीत तथा उनमें से नौ ही तैयार की चिन्ता के प्रकाशन का उद्देश्य मिलता है। हिलेन्ड के द्वारा भी उनकी लुदारे का प्रमाण मिलता है, किंतु इनके अतिरिक्त अवधि सभी स्थानों के परिसर का अभ्यास सा ही बाहर होता है। पुराने दंडे से बुद्धिवशीत गये इन स्थानों की प्रामाणिकता बहुत ही कम है और उनका अभ्यास स्पष्टतः आवश्यकता प्रतीत होता है।

नागपुर के समीप निम्नलिखित स्थानों पर बूटाकार शब्द-स्थान विद्यमान हैं।

नागपुर जिला:
1. कोराड़ी: कामला के पूरे में कोराड़ी पहाड़ पर; विश्वस का विभाजन
2. कोल्हार: नागपुर से वायव्य कोण में २० मील का बढ़ा विभाजन क्षेत्र; 
3. गोरी: नागपुर में संरक्षित स्मारक-सूची
4. गोरार: कोल्हार के समीप विभाजन क्षेत्र, नागपुर से १५ मील पर
5. जनागणी: नागपुर से पश्चिम में ९ मील पर कोल्हार-सूची 
6. टाबग्लाबर: नागपुर से उत्तर में २६ मील पर; एक का विभाजन क्षेत्र प्राचीन लुदारे से मिट्टी के बर्तनों, वाणिज्य के प्रास पर्यन्त 
7. बनकोट: नागपुर से पश्चिम कोण में १६ मील पर; संरक्षित स्मारक 
8. बेटाराज: नागपुर से पश्चिम कोण में ४ मील पर; कोल्हार-सूची 
9. रायपुर: ६ पृथ्वी, ८ क्षत्र बुद्ध; संरक्षित स्मारक 
10. वाराणसी: नागपुर से वायव्य कोण में २० मील पर; कोल्हार-सूची 
11. बड्डा: कामला के पूरे में २ मील पर; विश्वस का विभाजन(१८५५)

Central Archaeological Library, Book No. D 885
(12) सावरगाँवः—दिसम का 3 मील का क्षेत्र, संरक्षित स्मारक
(13) हिमग्रेंः—नागपुर से नैकन्य में 10 मील पर, संरक्षित स्मारक
(14) उदालीः—

सिवनी जिला:
(15) सेमेका—जैनगंगा-हिरी के संगम पर, सिवनी से उत्तर में 21 मील पर
don't know
(16) विरवनी
(17) कन्दी मण्डिर
(18) सोरार

| cromlechs? | ASI, AR., 1930-34, Plate LXXVII |
| b, c, d, stone circles? |  |

[ दुग्देवतियर के अनुसार, काकाश्त के इतिहास शास्त्र खुदन्ते गये थे और उनके लोगों के औजार तथा मिट्टी के वर्तनों के दुनिया में पाए गये थे ]

मंदिराज़ जिला:
(21) पिपलगंवः, मंदिरा देशक में 25 मील पर, संरक्षित स्मारक
(cromlech) ASI, AR, 1930-34, pl LXXVII, a.
[ विनाशक ३, कः १० ]

(22) तिहोता लैंडी, मंदिरा देशक में 24 मील पर, संरक्षित स्मारक
(cromlech) ASI, AR, 1928-29, Plate IX.

(23) अम्बी दिलीपगंव के समाप (cromlech) कांज़िल-सूची

रायपुर जिला:
(24) सोनामीर : कैलियर जम्मूनदारी में megaliths, कांज़िल-सूची

चाँदड़ जिला:
(25) बाहुली : चाँदड़ से पूर्व में 29 मील पर

20 इतालियाँ जहाँ संरक्षित स्मारक, कांज़िल-सूची
(26) केदार : चाँदड़ से पूर्व में 35 मील पर, 2 cromlechs
कार्यम, ASR, IX, p 140, Pl XXV.

(27) बागनास : चाँदड़ से बायब्ल में, नागरी रेल्यों से उत्तर में 2 मील पर
इटिहास अभ्य, कांज़िल-सूची

(6) ताम्रयुगीन औजार
(Copper-hoards)

(1) मुंगैरिया : बलावत से उत्तर में 20 मील पर स्थित मुंगैरिया नामक प्राम में २२५ ताम्रयुगीन औजारों का एक बड़ा संचय, १८७० ही में अचानक ही मृत्यु हुआ था। उसमें ताम्रयुगीन कुल्हाड़ों, चाँदड़ी की बनी हुई इतालियाँ आकृतियां तथा द्वादश कुल्हाड़ियों (long bar-celts) समावेशित थीं। इनका हस्तकथा Coggin Brown, Catalogue, pp. 146-15 तथा Smith, "The Copper Age and Pre-historic Bronze Implements of India," Ind. Ant. XXXIV, (1905) pp. 229-44 में दिया गया है। [ विनाशक १, कः ५५-८ ]

(2) इन ताम्रयुगीन औजारों के महत्त्व तथा सांस्कृतिक स्वाभाविक परिवर्तन के लिये हमारा भविष्य से उपयोगी है।
Piggott, "Pre-historic Copper Hoards in the Gangetic Basin"
Antiquity, XVIII (1944), pp. 176-182.
R. Heine-Geldren, "New Light on the Aryan Migration to India"
R. Heine Geldren, "Archaeological traces of the Vedas and the Aryan migration to India"
JISOA, IV, (1936), No. 2.

2 मैयूर्य-काल
(अ) शिला-लेख

(1) सम्राट अशोक का रूपनाव-शिला-लेख
(2) देरेक, चाँदी, अशोक का लाल शिला-लेख
(3) रामगढ़ गुफा, रामगढ़-राज्य, शिला-लेख, लगभग १०० ईस्वी के पूर्व
भारताल-सूची, क. ३१२; Ind. Ant., XXXIV, p. 197.

(आ) मुद्रायें

(1) आहत मुद्रायें
Punch-marked coins

आहत मुद्रायें सदृश मैयूर्य-काल के ही अंतर्गत आती हैं। इनका प्रचलन कम से कम चौथी ईसवी की चौथी शताब्दी तक होता रहा। लुटियां की दृष्टि से इन में सभी आहत मुद्रायें सम्बन्धित कर ली गयी हैं, यद्यपि इन में से कुछ मुद्रायें मैयूर्य-काल के पश्चात की भी हो सकती हैं।

(1) गंगा, सामार; १८७४-७५ कालांक-द्वारा प्राचीन मुद्रायें; ASR, X, 37.
(2) विलासपुर, ६ नाचुसूं का संचय, नागपुर-संग्रहालय, १९०७ की सूची
(3) मणिराम में प्राचीन ६५ मुद्रायें का संचय; १८७८; दोले-द्वारा परिकृत, JNSI, X, 75.
(4) बार या बाघर; सारगढ़ राज्य, १९२१
- लेखनप्रसाद पापेद्वे-द्वारा परिकृत: Epi. Ind., XXVII, p. 319.
(5) बबलामार, विलासपुर, १९२१-२२
- २१५ आहत मुद्रायें; सरकारी नापक-सूची
(6) डिगंबराठ, वर्ष १९२४
सरकारी नामक-सूची; Allan, CIC, BM p lii. 56

(7) माठेगाऊं, वारसीम, १९२५-२५ सरकारी नामक सूची

(8) ठाटारी, बिलासपुर, १९२५
छोटी आहत मुद्रायें; Allan, CIC, BM., p. lii. 286-87.

(9) तारापुर, रायपुर
पं. लोचनप्रसाद पाण्डेय के द्वारा परीक्षित; cf JAHRS, III, p. 181.

(10) बिपुरी, जबलपुर १९५२-५३ [ चित्राणक २, क्र. १२ ]
सागर-बिजविहार-पूरा अविभाजन के द्वारा उपलब्ध मुद्रायें; मौर्य-कालीन एवं उत्तर मौर्य-कालीन
अप्रकाशित; दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954

(11) जड़नार, वर्ष १९५३ ई. में प्रात द. ब. महाजन द्वारा सूचना प्राप्त
अप्रकाशित, दीक्षित, JNSI, XVI.

(2) गण-राज्य के सिके

(अ) बिपुरी (आ) एरिक्षियन (ई) भागिला

(ब) बिपुरी की मुद्रायें ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी का प्रमाण [ चित्राणक २, क्र. १४ ]
पं. भगवानलाल इंद्रजी द्वारा, JRAS, 1894, p. 533; pl. No 15.
कालिकम द्वारा, Allan, CIC., BM., p. cxli; plate XXXV, 14-15.
१९५१ विज्ञाता, होंगाराण में प्रात, Katare, JNSI., XIII, 40-45.
१९५३ बिपुरी की मुद्रायें में प्रात (१०) दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954.
हीरालुल-पूरत्तच-सामूल, जबलपुर-संभाल (२)

(आ) परण की मुद्रायें

(१) स्थिरपाठ के नाम के सहित; तीसरी शताब्दी ईसैयाँ [ चित्राणक २, क्र. १३ ]
Cunningham, CAI., pl. XI, 18. Allan, CIC, BM., p. 140; pl.
XVIII, 6.

(२) एरिक्षियन नाम से उल्कीर्ण मुद्रायें ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी
Cunningham, ASR., X, pp. 80-81; pl. XXIV, 16-17.
ASR., XIV, p.149; pl XXXI,17-18.

(३) अनुकूलीर्ण मुद्रायें, विशेष ईसा से पूर्व ३००-२०० वर्ष
Allan, CIC. BM., p 140-144.
जमुनिया, होंगाराण कटरे, JNSI, XIV, 60-61.
बिपुरी, जबलपुर दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954

(ई) 'भागिला' की मुद्रायें ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी
जमुनिया, होंगाराण कटरे, JNSI, XIV, pp. 9-10; pl. II, 13-17.
(३) प्राचीन कल्पना हुए दिखे Cast Coins

इन मुद्राओं का समय निर्धित रूप से नहीं कहा जा सकता; परंतु ऑंचन के मतानुसार उनकी अनुमान: ईसा से पूर्व तीसरी और दूसरी शताब्दी में रखा जा सकता है। Allan, CIC, BM., p. lxxvii

(१) जसुनिया से, Katare, JNSI., XIV, p. 50-51.
(२) जिरूर की १९५२ ई० की सुबह में प्रात, अन्तर्काशन
(३) अन्य मुद्रायें

(२) पांडित, भंडार; दिनमंगा का सिक्का, तीसरी शताब्दी ईसापूर्व मिश्र, JNSI., VI. 9.

(२) अन्य प्राचीन सिक्कों के लिङ्गस्तित्व स्थानों से प्राप्त होने के उदाहरण नागपुर-संग्राहालय की १००७ की सूची में किया गया है, परंतु उनके समय तथा प्रकार के विषय में अभी तक फूरे जाँच नहीं हो सकी है।

वालावाद, चौंदी के २० सिक्के
मण्डारा, चौंदी के ६५ सिक्के
वालावाद, तौंबे के ७ सिक्के, पियर्स-ढारा प्रात, १८६८ ई०
झीससगढ़, तौंबे के १२ सिक्के, १८९४ ई० में प्रात
होलांगावड़, तौंबे के ५८ सिक्के
सिवनी, तौंबे का १ सिक्का

---

३ शातवाहन-काल

(२०० ईसापूर्व से २०० ईसवी तक)

इस काल की सामुद्री बहुत बिखरी हुई है; परंतु निम्नलिखित पंच शातवाहन काल के अध्ययन के लिये बहुत उपयुक्त है।

Rapson, Catalogue of Coins in the British Museum, Andhras and Western Kshatrapas etc. London 1908. Introduction

Bhandarkar D. R. "Deccan of the Satavahana Period"

Ind Ant. XLVII, 59, 149; XLVIII, 77; XLIX, 30.

Bakhle, "Satavahanas and the Contemporary Kshatrapas"

JBBRAS., III (N. S.), pp. 44-100; IV, pp. 39-79.

Gopalachari, Early History of the Andhra Country, Madras, 1941.

कुछ विद्वानों की समस्ति में शातवाहन-शासकों का भूल विद्वेष विद्वेष था, परंतु यह भत्त से विद्वानों को मान्य नहीं है। इसके लिये देखिये, JNSI., III, p. 64 ff.
(i) शातवाहन काल के लेख

(१) युंजी, सकती राज्य: कुमारवंदन का प्रस्ताव-लेख, प्रथम शताब्दी ईसवी मित्राजी, Epi. Ind., XXVII, 48.

(२) पांची, मण्डपा: भार-शास्त्री भाषा भाषा का शिलालेख, प्रथम शताब्दी ईसवी मित्राजी, Epi. Ind., XXIV, 11.

(३) गरण, सागर: नेपाली महाभाषा का लेख, प्रथम शताब्दी ईसवी मित्राजी, Proceedings of the All Indian History Congress, Jaipur. मा. इ. सं. मं. वैभविक, वर्ष ३२, प्र. ३२-३८

(४) दुर्ग, दुर्ग: खबरेद शिलालेख, दूसरी शताब्दी ईसवी हीरानाथ सूजी क्र. २३९

(५) नेवरसाल, बिहासुर: खबरेद शिलालेख, दूसरी शताब्दी ईसवी ASI, AR., 1930-34, Plate LXXVI, a [चित्र-पत्तक ६ क्र. २९]

(६) किरारी, बिहासुर: कालग्राम शीत-लेख हीरानाथ शास्री, Epi. Ind., XVIII, 151.

(७) बोरो, जबलपुर (संपन्नता महाशय भाषाविद्यालय, जबलपुर) शिलालेख का बोरो शिलालेख, दूसरी शताब्दी ईसवी, अध्यक्ष शिलालेख क्र. ३३]

(८) शिलाहार (मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा-पर) गुड़ा का लेख, दूसरी शताब्दी ईसवी मार्गारखर, Epi. Ind., XXII, 30-32.

(९) चुटिकार, बिहासुर, बैश्य खुशिलेख, दूसरी शताब्दी प्राकार नामक श्री द्वारा दिया गया दान का उलेख डॉ. दिनेशचंद्र सरकार द्वारा सूचना-प्राप्त, अध्यक्षकार

(ii) शातवाहन-काल की गुफायें

(१) पालता: अकोला Akola District Gazetteer
(२) कान्त: चंदा Cunningham, ASR, IX, p 124; pl. XXI, XXII.

(iii) मुद्रायें:

(अ) शातवाहन मुद्रायें पूर्व-काल

(१) सिरि सात (सातकर्णी) के सिके जमुनिया: होंशगावाद से प्राप्त, कटरी, JNSI., XII, 94-97.

(२) शातवाहन सातकर्णी प्रथम के सिके बिपुल में प्राप्त: कटरी, JNSI., XIII, 35.

(ब) शातवाहन-खुट्ठे में प्राप्त: दीक्षित, Tripuri Excavation Report, 1954. [चित्र-पत्तक १ क्र. १४]
(२) आप्लक का सिका [ चित्र-फलक ४ क्र. १७ ]
वाणपुर : रायगढ़ में प्राप्त; दीक्षित K. N., JASB, Numismatic Supplement, XLVII, 344; पाप्त, JAHRS, X, 225.

(४) चाँडा संचय : Rapson, Catalogue etc., pp. 21, 42, 48.

(५) तहाड़ा संचय : तहाड़ा, अकोला; १५२५ सिके; १९४० ई० में प्राप्त
गौतमपुर से यहाँ तक के १२ शास्त्र, जिनमें-श्री कुम्भ सातकारण, श्री कन्या सातकारण और
श्री शक्ति शातकारण के नाम प्रथम वार भाष्य हुए हैं [ चित्र-फलक ५ क्र. १६ ]
सरकारी नामक सूची; मित्राधि, JNSI, II, 83-94; IHQ, XVI, 503.

(६) गौतमपुर शातकारण की रजत-मुद्रा
चिप्पी से प्राप्त; कटारे, JNSI, XII, 126-134.

(७) गौतमपुर शातकारण की दूसरी रजत-मुद्रा
चिप्पी से प्राप्त; दीक्षित, JNSI, XVIII अप्रकाशित

(४) रोमन सिके और पदक

(१) चक्रवेदा : विलासपुर दो रोमन मुद्राँ (Aurii) [ चित्र-फलक १ क्र. १८ ]
अरवुड़, JNSI, VII, 8; सरकारी नामक सूची, १९४१-४९, ई०; Pl. II

(२) तहली, चाँडा : १९२९-३० में प्राप्त सरकारी नामक-सूची

(३) रोमन सर्वसंग : विलासपुर में प्राप्त; नागपुर-संघालय १९०७ ई० की सूची

(४) वल्दपुर, अमावास, रोमन मुक्तम पदक, नागपुर-संघालय; अप्रकाशित
[ चित्र-फलक २ क्र. १६ ]

(५) चिप्पी-जवालपुर कच्छ कोल्हापुर (फेजन्स) के पदक
चिप्पी-लुढाई १९५२ ई० अप्रकाशित

(५) कुष्ठिया सिके और लेख

(१) छुआंगार (मेण्डा) वल्दपुर मूर्ति-लेख, नागपुर-संघालय
हीराराज-सूची क्र. ४१ अप्रकाशित

(२) कुष्ठिया सातक कनिष्ठ तथा द्विक्षित के सोने के सिके (१२) हरद्वार, होरंगाबाद, में प्राप्त
नागपुर-संघालय, १९०६ ई० की सूची

(३) पंडरवा, चंद्रपुर, विलासपुर; तांबे के कुष्ठिया-सिके
योधिया मुद्राओं के साथ १९५२ ई० में प्राप्त
पं. लोक निर्माण प्राचीन पाप्त के द्वारा सुधार-प्राप्त

(४) कुष्ठिया बालुदेव का तांबे का सिका
दुरदराज सोनी-सम्म, चिप्पी में प्राप्त, अप्रकाशित
(vi) क्षण विकर

1. सिवनी, छिद्रबाण्डा; हदसन प्रथम का चांदी का जिंका
   आचार्य, JNSI., XII, 167-68.

2. सोपपुर, सिवनी के समीप; हदसन प्रथम से एक हदसन तृतीय तक की 63्व मुद्राओं
   का जुमला
   आचार्य, JASB., Numismatic Supplement, XLVIII, 115.

(vii) अन्य सामग्री

1. नहमास की पार्श्व-सुहर (Seal) प्रथम शताब्दी ईसवी
   नागपुर के मिलकर एक खान से प्राप्त; मिराबें, JNSI., III, 102.

2. शालपुर में प्राप्त चार बिंके
   प्रथम: शालावहन्तर काल के; अलेक, JNSI., IX, p. 31.

5 गुप्त-वाकते काल

गुप्त-काल के अध्ययन ने के दिशा निम्न विचित्र सामग्री अलावत उपयुक्त है।


कि, Gupta Inscriptions, Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. III.

ब्रिटेन, Catalogue of Coins in the British Museum, Gupta Dynasty.

अलेक, Catalogue of Coins in the Bayana Hoard.

राष्ट्रीय बाल्यवत, The Age of the Imperial Guptas.

सार्वतार, Life in Gupta Age; Bombay 1945.

(i) गुप्त सम्राटों के लेख

1. समुद्रगुत्त का परण सिद्धालेख (प्रथम: 120-139 ईस्वी)
   कलकत्ता संस्कृतिवाल में; माण्डारकर-सुरी रूप 132; कि, C. I. I, III, 3.

2. मुद्रगुत्त का परण-स्तंभ-लेख, गुप्त सं. 169 (484 ईस्वी)
   माण्डारकर-सुरी रूप 128; कि, C. I. I, III, 89.

3. माण्डारकर का परण-स्तंभ-लेख, गुप्त सं. 191 (510 ईस्वी)
   माण्डारकर-सुरी रूप 129; कि, C. I. I, III, 92.

(ii) गुप्त-वाकते काल के मुद्रे (Seals)

1. माण्डारकर, नागपुर से 16 मील पर (चांदी शताब्दी ईस्वी)
   मिराबें, JNSI., III, 99.

हेतु "Antiquities from Mahurjhar" शारदास्म वार्षिक, p. 20-25.
(२) पारसिवनी, नागपुर से १६ मील पर (चौथी शताब्दी ईसवी)
मित्र, JNSI., III, 100.

(३)-(४) मदपुर, नागपुर से ३० मील पर (चौथी शताब्दी ईसवी)
मित्र, JNSI., III, 101.

(iii) गुट शाल्कों के सोने के सिके

(१) सकोर, दहा, दमोह; १९१४-१५ में प्राप्त
समुद्रतू, चंद्रगुप्त प्रथम और संदर्भत लगे २५ सिकर का संचय; अभिकलित
दीराजाल-सूची प्र. ६३; दमोह-पीपक, प्र. १०८ [चित्र-फलक ५ क्र. २२]

(२) पश्चिम, सुकताई, बैतूल; १९२८-३० में प्राप्त
चंद्रगुप्त प्रथम का सिका, अभिकलित; सरकारी नामक-सूची

(३) जबलपुर, चंद्रगुप्त प्रथम लगे तीन सिके, अभिकलित
हेंड़ो महेसचंद चौबे, जबलपुर से सूचना-प्राप्त

(४) चंद्रगुप्त ब्रतीय का सोने का सिका
शारदाथम वार्षिक, प्र. ६६ सामानवाली प्रतिमा

(५) चंद्रगुप्त ब्रतीय का सोने का सिका हल्दा से प्राप्त
नागपुर-संहलाल नौ००५ में सूची [चित्र-फलक ५ क्र. २१]

(६) लालराम, राजपुर १९४८ में प्राप्त कुमारगुप्त प्रथम के ५४ सिकरों का संचय
रोडे, JNSI., X, 137; XI, 101; सरकारी नामक-सूची [चित्र-फलक ५ क्र. २१]

चाघी के सिके

(७) हलसेपुर में कुमारगुप्त प्रथम के १३ सिकरों का संचय, १६५९ में प्राप्त
JRAŚ, १८८९, १२४.

(IV) सपाट छत के मन्दिर

(१) वरानाथ, जबलपुर जबलपुर संहेडियर, प्र. ३११
(२) सकोर, जबलपुर दीराजाल-सूची, प्र. ६३
(३) रोणह, जबलपुर दमोह-पीपक, प्र. १०४
(४) तिग्बी, जबलपुर जबलपुर-संहेडियर, प्र. ३०२;
Cunningham, ASR IX, 42-46; PI. IX-XI.

(५) कुण्डा, चन्द्राचे के समीप, जबलपुर दीराजाल-सूची, प्र. ३५'
(६) कुण्डलपुर, दमोह, जबलपुर संरक्षित स्मारक-सूची
कालिचं, ASR XXI, 166, PI. XLII;
VII. ४८.
(V) युगों के समकालीन अन्य लेख

(१) महाराज संस्कृत नाम का बैल्ड-दान-पत्र, ग्राम-संबंध १९६ (५१८ ईसवी)
प्रत्यक्ष-नामकार और द्वार-नामकार का प्रामा का दान
(विलेनी के समीप आस्थित पत्थरी और द्वारा)
मणीदारकर-सुभी, क्र. १२९; हीरालाल, Epi. Ind., VIII, 284.

(२) मीमेशन का आरंग-दान-पत्र, ग्राम-संबंध २८२ (संयोजन १८२) (५०१ ईसवी)
दोषद्वारा और वत्तपितक का नामकार का प्रामा का दान (प्रायः आस्थित दुःख, आरंग से पश्चिम में
2५ मील और आस्थित करते; आरंग से पूर्व में ३० मील पर)
मणीदारकर-सुभी, क्र. १२९; हीरालाल-सुभी, क्र. १३०; हीरालाल, Epi. Ind., IX, 342

(३) आरंग, रायपुर, में प्रात शिलालेख (पांचवीं शताब्दी) रायपुर-संस्कृतमय
हीरालाल सुभी, क्र. १८३; JAHRS, IV, 46-48.

(४) आरंग, रायपुर में प्रात दूसरा जंगल शिलालेख; चौथी शताब्दी;
Cunningham ASR., XVII, 21

(५) स्वामिराज का नगरकंठ-ताहल-पत्र, कठूल सं. २२२ (५३०-३१ ईसवी)
(नागपुर संस्कृतमय में संरक्षित)
निदिष्टवक्त से प्रचलित। स्वामिराज के द्वारा शूल नदी पर स्थित अंकोटिका का नामक प्राम के
दान करने का उल्लेख; स्वत-निश्चय पक्का नहीं;
मिराशी, Epi. Ind., XXVIII, 1-11; व. म. इ. सा., खंड २, पृ. १०८-११५.

(VI) वाकाटक शासकों के लेख

(अ) वस्तस्युल्ल शाखा (ब) प्रमुख शाखा

वाकाटक वंश का ऐतिहासिक महत्व प्रमाण दूसरा काशीप्रसाद जयस्वाल ने अपने History of
India, Lahore, 1938 में बताया। इन पत्रों के संचयन समूह पर आधारित सुधूरदार-अलंकरक हैं
A History of Indian people, Vol. V, देखिये। तथा विशेष विचार मिराशी, "The Vaka-
taka Dynasty of the Central Provinces and Berar", Journal of the Nagpur
University Historical Society, I, p. 8 ff. में देखिये।

कस्तुल्लुम शाखा के विचार के डिक्स, मिराशी, "The Vatsagulma branch of the Vaka-
taka dynasty," Nagpur University Journal, VI, (1940), pp. 41 ff. देखिये।

(अ) वस्तस्युल्ल शाखा

(१) वादीय-ताहल-पत्र, राज-वर्ष ३६
कस्तुल्लुम (वालीम) से, विवादित के द्वारा नांदीक के उत्तर-मध्य में स्थित भाग, लक्ष्य और
उप्रका के समीपवर्ती आकाशमद नामक प्राम के दान का उल्लेख। स्वतः-निर्णय निष्ठित नहीं हो सका।
मिराशी, Epi. Ind., XXVI, 137; सरकार, IHQ., XVI, 182; XVII, 110.

(२) देवसेन का इंडिया ऑफिस-तात्पर्य (अनुवाद)
कस्तुलं (बालीम) से। देवसेन-द्राघा उत्तर मार्ग में नांगर कटक के यथिह ग्राम के दान का उल्लेख
H. N. Randle, Denison Ross Volume, p. 259;
मिराशी; New Ind. Ant., II p. 721

(६) वाकाटक वंश—प्रमुख शाखा

(१) प्रमावती गुटा

(१) भारत-इतिहास-संस्थास्थ-मण्डल तात्पर्य, राज्य-वर्ष १३

सुप्रतिष्ठितार एम में से उड़गुन (आधुनिक हिंगणाट) प्राम के दान का उल्लेख
विशिष्टण (W) = बालीम, हिंगणाटवासे २४ मील पर स्थित
कदापितिन (E) = कन्हान, हिंगणाट से १ मील पर
शारीर ग्राम (N) = ?
सिद्ध विवरण (S) = ?

माण्डलकर-मुचिक्र क्र. १७०४; पाठक और दीक्षित, Epi. Ind., XV, 41.
स्थलनिधिय: मिराशी, मा. ह. सं. म. चैम्सिक, वर्ष २२, प्र. १.

(२) रामगिरि (जम अमरावती) तात्पर्य, राज्य-वर्ष १९
रामगिरि (रामटेक) से। कोहिय मार्ग में स्थित अक्ष नगर (=असतपुर, जिला इलिचपुर)
प्राम बाढ़ों के दमे दान में देने का उल्लेख।

माण्डलकर-मुचिक्र क्र. १७०६; गुटे, J.R.A.S.B., (n. s.), XX, 58.

(२) प्रवर्तक द्वितीय

(१) कोट्चर तात्पर्य, राज्य-वर्ष २ (जांच, हिंगणाट से प्राम)

नादिक्षेत्र (नगर्णपुर) से। सुप्रतिष्ठितार एम में से कोट्चर प्राम के कादक्ष प्राम शाखाको दान देने का उल्लेख

उमा नदी (E) = उमा नदी जोवें से २४ मील पर
चिवाप्पाली (S) = बुल्लेट, जोवें के ३ मील पर
ब्राह्मण वाढ़क (N) = ब्राह्मण वाढ़क
मणुकि प्राम (W) = मणुकि प्राम

मिराशी, Epi. Ind., XXVI, 155; मा. ह. सं. म. चैम्सिक, वर्ष २३, प्र. २०-२७;
चक्रवर्ती, JBBRAS., (N.S.), XXII, 49.
(2) बेलेजार-ताल्स-पत्र, राज्य-वर्ष 11 (बेलेजार, मोरी, अमरावती से प्रापत)
(a) नामदेवभूमि (= नगरभूमि) से। असिम्बुकि में श्रीरुष मार्ग के अन्तर्गत महाशुल प्राम के दान का उलटे।
असिम्बुकि = अहिं, बेलेजार से आस्वेदक कोनः में 10 मील पर
श्रीरुष = सालवंडो कायड़ी प्राम से दृष्टि में 15 मील पर
(b) पाकुण्ड राष्ट्र में दीर्घद्र प्राम तथा महाप्रभुक प्राम के दान का उलटे
पाकुण्ड = ?
दीर्घद्र = दीर्घि, वर्षा नदीपर, अहिं से दक्षिण में 30 मील पर
महाप्रभुक = वाह लाड़की, बेलेजार से वापसी कोनः में 18 मील पर
मिराशी, Epi. Ind., XXIV, 260.

(3) चम्मक-ताल्स-पत्र, राज्य-वर्ष 18 (चम्मक में किशोरसूति से 2 मील पर प्रापत)
श्रीरुषपुर कोष्ठादिर की महानामा पर भोजकर राज्य में महुंदी (आधुनिक चंद्रभागा) के तट पर स्थित चम्मक (= चम्मक) प्राम के दान का उलटे
माण्डकर-सूची क्र. 1705; हीराला-सूची क्र. 232; हीरा, C. I. I., III, 236.

(4) सिवनी-ताल्स-पत्र, राज्य-वर्ष 18
बेनाकट कर्षित भाग में से कर्जवालस्क (आमंत्र ममीनारी से कार्त्ति) भाग के ब्रह्मपुर (ब्रह्मणी) प्राम के दान का उलटे
ब्रह्मपुर (N) = ?
सिवनीस्क (W) = ?
पवर्कुलवारुक (S) = ?
कोष्ठादिर (E) = कुला, बैनग्या से 36 मीलपर, कार्त्ति से 1 मील
माण्डकर-सूची क्र. 1705; हीराला-सूची क्र. 226; हीरा, C. I. I., III, 245;
स्थान-निधिस्य: मिराशी, NUJ., I. (1935) p. 3

(5) बंतुरु-ताल्स-पत्र, राज्य-वर्ष 23
यह दानपत्र संभवतः विशेष में प्राप्त हुआ था। इसमें दान-विषय प्राम का उलटे नहीं है, परंतु उसकी चूर्णित सीमा वर्गित है।
अन्जनाताक (E) = ?
कोष्ठादिरिक (W) = ?
आरामक (S) = ?
कोश्ताक (N) = ?
इसमें निदित्त कोश्ताक प्राम निरीक्षा के दान-पत्र का कोष्ठाकाण हो सकता है।
मुशरीफ बुबुक, Epi. Ind., XXIV, 52.
(६) तिरोड़ी दान-पत्र, राज्य-वर्ष २२ (कसरी, बलाथट से ८ मील पर तिरोड़ी में प्राप्त)

बेंकट आपरपट में कोसमबङ्क आदि के दान का उल्लेख

कोसमबङ्क = आधुनिक कोसमबङ्क, तिरोड़ी से ६ मील पर

जमीन (E) = जसुनजो, कोसमबङ्क से ३ मील पर

वर्चमानक (S) =

महलक/पहाड़ (N) =?

मुगसीना (W) =?

प्रो. मिरासी ने मतानुसार इसी दान-पत्र में वर्णित नरसंगवारी, आधुनिक नरसंगवारी किने के समय मैलवाड़ी है।

मिरासी, Epi. Ind., XXII, 167

(७) दुविया ताल-पत्र, राज्य-वर्ष २३

(दिनदाना से नैशक दिशा में २० मील पर दुविया प्राम में प्राप्त)

चंदपुर संजिका (चंदपुर तथा तथकती नदियों के संगम) पर स्थित दरभंगगढ़ प्राम तथा विषयपुर (वाँड़ के समय सोनगाँव) में से आसमन (आसमन) बिमारी में कर्मचारी

( = कुरमान्सी ) प्राम के दान करने का उल्लेख

माण्डलखर-सूखी क. १५०१; दीर्घकाल सूखी क. १५०१; कील्कर्त, Epi. Ind., III, 260

(८) बड़गाँव ताल-पत्र, राज्य-वर्ष २५ (बड़गाँव, बरेला चंदा; १९४२ में प्राप्त)

हिरणनदी ( = एह ) के तट पर स्थित मीराबाई से। एकार्ण ( = अर्जुन ) के निवासी बहर भालक को हुड़तिविलास से बेडेलुक प्राम में भूमिदान का उल्लेख

गुप्तार (W); कर्मचारी (N); नीलार (E); कोकिला (S)

आधुनिक स्थान निर्देशित रूप से नहीं जाने जा सकते। प्रो. मिरासी के द्वारा निर्देशित निर्देश द्वारा स्थान ठीक नहीं विदित होते।

मिरासी, Epi. Ind., XXVII, 74

(९) पठाण ताल-पत्र राज्य-वर्ष २७ (पठाण, किला बैलू में प्राप्त)

पठाण (पठाण) राजस्थान से। अस्त्रपत्र (?) नामक प्राम में से भूमि महापुर मिट्टी के पादुका के देवालय में आयोजित समां के द्वारा से देने का उल्लेख

बराहेंट मार्ग = बहुल, पठाण से दक्षिण में १२ मील पर

कोहनागर मार्ग = कोहनागर (?) पठाण से नैचय में ६ मील पर

मिरासी, Epi. Ind., XXIII, 81

(१०) पटना-सदमदाहारा दान-पत्र (खड़न) बालचाट में प्राप्त

सुन्तानि मार्ग के श्री पारवकार प्राम के दान का उल्लेख

श्री पारवकार =

सुन्त्पा = समनपुर?

मिट्टक्कड़ (E) = सुयदर, बालचाट से इशान कोण में २ मील पर

मुख्तारी (N) = सुराज, बालचाट से इशान कोण में २ मील पर
भक्ष्यपुरक (W) = भारती, बालाकांत से बायव्य कोण में ११ मील पर
dरम्भुपुरक (N) = ?
बाललेख, JBORS., XIV, 472; खण्ड-निगम : निराशी, NUJ. 2. (1936), 50.
(११) हुँग तालाब-पट (खण्डित) [चित्र-पत्रम ५ का ११]
इस तालाबपट का पहिया पट बाग में पानावरस तहसील में मोहिज्जा नामक प्राम में मिला था। यह पपुर में सम्बन्ध : प्रावसन द्वितीय के द्वारा प्रचलित किया गया था। यह अच्छी है।
निराशी, Epi. Ind., XXII, 207; वृ. म. इ. सा., खण्ड ३, पृ. १-८

(१२) रामटेक तालाबपट (खण्डित)
रामटेक में नागपुर के समय यह दान-पट प्राम हुआ था, उसके अन्य पट अनु-
भाव है। सम्बन्ध : यह प्रावसन द्वितीय के द्वारा अंकित किया गया था। इस में प्राम का
उदेश्य नहीं है।
हीरालाल सूची का ५; निराशी, NUJ., III, (1937), pp. 20-27.

(२) पृथ्वीपण

(१) बालाकांत तालाब-पट (संमिश्र रूपवर्ण एसिटेरी सोसायटी बंगला, कल्किता)
इस तालाब-पट भव्यता से प्रचलित किया गया था। इसमें बालाकांत बंगला के अन्तन दशा
से उल्लक्षण स्थिति में भाग का उदेश्य किया गया है। यह तालाब-पट भी अच्छी है।
भांडारकर सूची का १५०८; हीरालाल सूची का २५; कीव्हान, Epi. Ind., IX, 270

(४) रद्दसेन प्रश्न

(१) देवेत्तक शिलालेख (चाँदा जिजी में, नागपुर से ५० मील पर देवेक्षन में प्राम)
इसमें रद्दसेन प्रश्न के समय में बिक्करी बाघ में निर्माण की स्थापना होने का वर्णन है।
बिक्करी, आधुनिक चिन्हमार, देवेक्षन से २ मील पर है।
हीरालाल सूची का १६; निराशी, Proceedings 8th Ori. Conf. p. 613

(७) वाकाटक शासक और उनके सामंतों के अन्य लेख

वाकाटक शासक की सीमा पर निरंतरित तंत्र और उनके सामंतों के लेख प्राम है।
(१) अर्जुन शिलालेख (गुफा का १६)
भांडारकर सूची का १४१२; निराशी, Hyderabad Archaeological Series,
No. 16
(२) अर्जुन शिलालेख (गुफा का १७)
भांडारकर सूची का १४१२; निराशी, Hy. Arch Series No. 17
(३) प्रोचक गुफा शिलालेख (वाकाटक देवसेन के समय का)
भांडारकर सूची का १४१२; निराशी, Hyderabad Ar. Series (1952)
द. म. ई. सा., खण्ड ४ पृ. १-८
(VIII) अन्य सामग्री

पवनार (प्राचीन प्रवासी) में रामायण की कथा से आभारित कई शिलालेख के अवशेष पाये गये हैं। संभवतः वे उत्तर-गुजरात या बांगलादेश-राज के प्राचीन होते हैं। अनुसार इसी संग्रह में अधिक खोज की जरूरत है। देखिये, मिराशी, "पवनार पेयील कोठी अवशेष" Mahamahopadhyaya D. V. Potdar Volume, pp. 1-7.

महाराजी के अवशेष गुंट काले के बताये जाते हैं। हां, Antiquities from Mahurjhari, शारदाथर्म वारिक, प. 30-35.

कौड़यपुर में भी इसी समय के अवशेष प्राण होने की आशा है। आ. रा. देशपाड़े, Antiquities from Kaudinyapur, शारदाथर्म वारिक, प. 68.

(IX) दृश्य कोसोल के पाण्डव

पाण्डव वंश के विवरण के रूप में देखिये

मिराशी, "The Pandava Dynasty of Mekala" INDICA, (Silver Jubilee Volume of the Indian Historical Research Institute, St. Xavier's College, Bombay) pp. 268-273; "प्राचीन भारतीय पाण्डवंश," म. इ. सं. से. वैज्ञानिक, वर्ष २१/२, प. १२-१३.

भरतवर्ग

(१) वाह्य ताजप्रम पाण्डव वर्ष २ (रीति राज्य में सोहागपुर समीप वाह्य पाण्डव भारत द्वारा दान करने का उल्लेख। तिथिसार का धौसे यह लेख पौर्णिमा तात्कालिक इंद्रजय का प्रतीत होता है।

भरतवर्ग और अन्य विभिन्न पाण्डव राजाओं का संग्रह हुआ है?

हां, Epi, Ind., XXVII, 132.

इंद्रजय और ईशानदेव

(२) वाह्य दिशालेख (वाह्य गर्भ मंदिर में संकल्पित)

यह बलिक लेख में पाण्डवर्षी इंद्रजय और उसका पुत्र ईशानदेव का उल्लेख पाया जाता है। लेख पूर्णतया नहीं पढ़ा जा सकता।

माण्डलकर सूची क्र. १६५५; श्रीरामकुंड सूची क्र. २०८; माण्डलकर, PR ASI, WC, 1903-04, p. 54.
नवदेव

( ३ ) माँदक ( पुत्र: आरंग ) शिलालेख ( नागपुर संघात्य में संरक्षित )
नवदेव के समय का लेख। भवदेव द्वारा सूर्योपरि रचित बौद्ध देवालय का जीगढ़ार करने
का उदेश्य
माण्डलकर सूची क्र. १६५०; हीरालाल सूची क्र. १७; कौवहानि, JRAS., 1905, p.624.

तीव्रदेव

( ४ ) राजीव ताश्रय; राज्यवर्ष ७ ( राजीव के देवालय में संरक्षित )
श्रीपुर से प्रचलित। तीव्रदेव द्वारा पेट्रोमण्डल मुक्ति में से पिपरीचक्र नामक प्रांगण दान करने का उदेश्य श्रीपुर = सिपुर
पेट्रोमण्डल ( श्रीपुर ) = पेट्रोमण्डल, राजीव के उत्तर में ६ मील
पिपरीचक्र = पिपरी, राजीव के उत्तर में २ मील
माण्डलकर सूची क्र. १६५२; हीरालाल सूची क्र. १७२; फील्ड, C.II, III,291;
स्थल निर्णय: मिराशी, NUJ., II ( १९३६ ), ४८.

( ५ ) बाणोवा ताश्रय; राज्यवर्ष ९ ( सन्कुल, बिहार में प्राप्त ) नागपुर संघात्य में संरक्षित
श्रीपुर से प्रचलित। तीव्रदेव द्वारा सूर्योपरि मार्ग में भक्तिमानी नामक प्रांगण का दान तथा विलयचक्र
प्रांगण में सत के निर्माण का उदेश्य। स्थल निर्णय नहीं हुआ।
माण्डलकर सूची क्र. १६५२; हीरालाल सूची क्र. १७२; हुल्ला, Epi. Ind., VII, 106.

महाशिवगुप्त

( ६ ) सिरपुर, चक्षण देवालय शिलालेख ( रायपुर संघात्य में संरक्षित )
महाशिवगुप्त की माता वास के द्वारा हरि ( विष्णु ) के मंदिर को निर्माण करने का उदेश्य तथा
मंदिर के लिये निम्नलिखित प्रांगण का दान करने का उदेश्य
श्रीपुर = तुरागा सिरपुर के आश्रय में कुम्भकर के निकट
मुखेत = मुखवन तुरागा से ५ मील
नालीपुर = ?
कुम्भकर = कुम्भकर, सिरपुर के आश्रय में १५ मील
वाणपुर = ?
गुर्जुर्मुक्त = गुर्जुर्मुक्त, सिरपुर के निकट में १५ मील
माण्डलकर सूची क्र. १६५४; हीरालाल सूची क्र. १७२; हीरालाल, Epi. Ind., XI, 185.

( ७ ) सिरपुर : मंगेराव देवालय शिलालेख ( क्र. १ से ६ )
( सिरपुर देवालय में संरक्षित )
महाशिवगुप्त के समय में मंगेराव देवालय के लिये माता वागीर देने का उदेश्य
माण्डलकर सूची क्र. १६५५; हीरालाल सूची क्र. १७२
( ८ ) सिरपुर शिलालेख ( तुरागा नामक दिलेष्प्राप्त प्रांगण; रायपुर संघात्य में संरक्षित )
महाशिवगुप्त का उदेश्य
हीरालाल सूची क्र. १८६.
(9) सिरपुर शिलालेख (नदी के तटपर देवालय के द्वार समीप सम्बन्धित)
महाशिव गुप्त के समय का लेख;
हीरालाल सुची क्र. १८७

(10) बारदुला ताप्त-पत्र; राज्य-वर्ष ९ (बारदुला, सारंगदप राज्य में प्राप्त)
महाशिवगुप्त-द्वारा कोशीर-नदिपुर विविध में बटपदक नामक प्राम के दान का उलेख
कोशीर-नदिपुर = नदिपुर, बिहारसपुर किले की सीमा पर, सकती के समीप
बटपदक = बटपदक, बारदुला से ४ मील पर
पा. भ. देसाई, Epi. Ind., XXVII, 289.

(11) लोधिया ताप्त-पत्र
राज्य-वर्ष ५७
(सारंगदप राज्य में सरिया पराण्य में लोधिया प्राम से प्राप्त)
महाशिवगुप्त-द्वारा कोशीर-ङ्गोज़ में बैनपदक नामक प्राम के दान का उलेख
बैनपदक = बैद भारद, गार्सिलास तहसील में बैनपदक जमीनदारों के अन्तर्गत
पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, Epi. Ind., XXVII, 319.

(12) महार-ताप्त-पत्र
(महार, जो बिहारसपुर से भारी कोण में १६ मील दूर है, से प्राप्त)
महाशिवगुप्त के द्वारा तरंजाक भोग में कैलासपुर नामक प्राम बौद्ध भिक्षुओं के 'विहारिक' मठ के लिये दान में देने का उलेख
tरंजाक = तरंजाक, महार से इलाहाबाद कोण में १२ मील पर
cैलासपुर = केसला, महार से भारी कोण में ८ मील पर
प्रो. ए. बि. मिराशी तथा पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, Epi. Ind., XXIII, 113

(IX) पाण्डव वंशीयों के सिकेक, मुहरें (Seals), इत्यादि

(१) 'केसेरी' अभ्यारण्य लोने के सिकेक
बालपुर में प्राप्त, १९२७ ई०
प्रा: महाशिवगुप्त के संग रणकृष्णी के द्वारा प्रचलित; JAHRS, III, p. 181

(२) राजस्थान श्री
बालकेशवर
बालपुर में १९५३ ई० में प्राप्त प्रा: नवी शताब्दी [विजयक्र १३ क्र. ४९]
पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय के द्वारा सुचना-प्राप्त; Nagpur Times, 15 Aug. 1953

(XI) हैंट के देवालय

बड़े आकार के हैंट के बने हुए देवालय इतिहास के लिये पाण्डव शासकों के समय की एक विशेष
देश है। सिरपुर में प्रातं शिलालेख के आधार पर कई स्थित व्यक्तिगतिक की माता वास्ता जो
व्यपार पर्यावरण शताब्दि के प्रारंभ में निर्मित करवाया था। ऐसे नमूने के कुछ मंदिर निर्मित फिनों
शासन में है, जिनके निर्माण-काल भिन्न भिन्न है।
(१) सिरपुर : कृष्ण-मंदिर, राम का मंदिर, तथा अन्य देवालयों के खंडहर
कनिंघम, ASR, VI, 169-80; VII, 168, XVII, 69-70, Plate XIII; XXI, 93.
काश्मीर-भावाध्यक्ष, PR, ASI, WC, 1904, pp 20-23.
लोगहरू, AR, ASI, 1909 10, pp. 11-18, Pl. I-III, fig. I.

(२) खरेद : कनिंघम, ASR, VII, 201-03;
काश्मीर-भावाध्यक्ष, PR, ASI, WC, 1904, pp. 31-32.
लोगहरू, AR, ASI, 1909-10, pp. 11-18; Pl. IV.

काश्मीर-भावाध्यक्ष, PR, ASI, WC, 1904, pp. 28.
लोगहरू, AR, ASI, 1909-10, Pl. V.

(४) कुरवाह : कनिंघम, ASR, VII, 196.

(५) बोरमदेव : कनिंघम, ASR, XXIII, 34; Plate XXI, XXIII.

(६) धनपुर, पेट्रा से उत्तर में ५ मील पर
कनिंघम, ASR, VII, 237.

(XII) शरमपुर के शासकों के लेख

महाराज नरेन्द्र

(१) पिपरुड़ा-ताल्द-पत्र राज्य-वर्ष ३
(सांगरगढ़ राज्य में ठड़कड़ीया से २० मील पर पिपरुड़ा में प्रात)
शरमपुर से प्रचलित। महाराज शरम पुजा नरेन्द्र के द्वारा राहूनेत्र के प्रार्थना पर नन्दपुर भोग में
शरथापद नामक प्राम के दान करने का उदेश
राज्य-वर्ष ३
किन्तु नन्दपुर, महानंद के तत्त्व पर स्थित नन्दगाव ही प्रतीत
होता है। शरथापद, नन्दगाव के समग्र साक्ता नामक प्राम होने की संभाव्यता है।
दीनेश्चंद सरकार, IHQ, XIX, 138-146.

महाजयराज

(२) आरांग-ताल्द-पत्र, राज्य-वर्ष ५
(आरांग में प्रात, नन्दपुर-संस्थालय में संरक्षित)
शरमपुर से प्रचलित। महाजयराज द्वारा पूर्वसूत्र में स्थित प्राम नामक प्राम के दान करने का उदेश
प्राम = पामान, विलासपुर से पूर्व में २० मील पर
वार्धालकर सूची क. १८३८; गीतालाल सूची क. १७५; क्रैं, CII, III, p 191.

महाभूषेन वराज

(३) लाहीयार-ताल्द-पत्र, राज्य-वर्ष २
(राजपुर में १६ मील पर लाहीयार में प्रात; नन्दपुर-संस्थालय में संरक्षित)
शरम्पुर से प्रचलित। महादुर्वेद्य-द्वारा शिक्तिमण्डल में स्थित, तथा शासितक्षेत्र के समीप नवगणक नामक प्राम के दान करने का उल्लेख।

नवगणक = नवन्दा, संशयित से दक्षिण में 3 मील पर
मण्डाकर सूची क. १८७९; हीरालाल सूची क. १७७; कोणी, Epi. Ind., IX, 170.

(४) सारंगगढ़ तालाबर, राज्य-वर्ष ८
श्रीपुर से प्रचलित। महादुर्वेद्य-द्वारा तोलामूल में सिविलियोगिका नामक प्राम के दान करने का उल्लेख लोचन प्रसाद पाठेय, IHQ., XXI, p. 294-95.

(५) बाराण-तालाब-पार, राज्य-वर्ष ८
शरम्पुर से प्रचलित। महादुर्वेद्य-द्वारा तोलामूल में सिविलियोगिका नामक प्राम के दान करने का उल्लेख लोचन प्रसाद पाठेय, Epi. Ind., XXIII, 18.

(६) रायपुर-तालाब-पार
कार्य-वर्ष १०
(नागपुर-संघालय में संतुष्ट)
शरम्पुर से प्रचलित। महादुर्वेद्य-द्वारा सूची क. १८८०; हीरालाल सूची क. १७६; संग्रह, CII. III., 196.

स्थलनिर्णय : हीरालाल, Epi Ind. IX. 281.

(७) सारंगगढ़ तालाबर
(नागपुर संघालय में संतुष्ट)
शरम्पुर से प्रचलित। महादुर्वेद्य-द्वारा तोलामूल में सिविलियोगिका नामक प्राम के दान करने का उल्लेख वाराणसी बाजार के समीप भुजग बाजार के समीप मण्डाकर सूची क. १८८०; हीरालाल सूची क. १७६; हीरालाल, Epi Ind., IX, 281.

(८) सिरिपुर-तालाब-पार
(संपूर्ण संस्कृत नहीं)
हीरालाल-सूची क. १७६, में उल्लेख, अप्रकाशित।

महाप्रवरराज

(९) ठाकुराड्या-तालाब-पार
(नागपुर-संघालय में संतुष्ट)
श्रीपुर से प्रचलित। महाप्रवरराज के द्वारा तुड़राड्या में राज्य के आपातक नामक प्राम के दान करने का उल्लेख तुड़राड्या = तुड़रा, संशयित से पश्चिम में २५ मील पर आपातक = असौंद, महानदी के उत्तर तट पर सेविनारायण से पूर्व में ५ मील पर सेविनारायण दुर्लभी, Epi, Ind, XXII, 6.
महामविवरण

(१०) महाकोशाळ-देविटिक समिति-ताल-पत्र; राज्य-वर्ष ११ (७-८ वीं शताब्दी)
(१९३२ ई० में प्राप्त, विषाणुपुर में संरक्षित)
किताबेका से प्राप्त धातु शान्ति (?) महामविवरण द्वारा चक्कर-सुत्त मंडल नामक भाषण
को पृथुरा-दुधितिग दिशान्त नामक प्राम के दान करने का उल्लेख
किताबेका = केसरिका, पाटना राज्यांतरत्न बोलोगरी से पूर्व में ६ मील पर
पृथुरा = पिठोराह, केसरिका से पूर्व में २० मील पर, समस्तपुर से वायुवं कोण में ४५ मील पर
शिक्षा = सरांगढ़ राज्य में
पं. लोचन प्रसाद पाण्डे, Epi. Ind., XXII, 135.

(XIII) शरमपुर के राजाओं के लिखी

प्रस्तुतालमएः

चौंदी के लिखी

सारलेखापी, महानदी मान्य संगम पर; वालपुर से १० मील पर [विचारक डॉ. रेणु]
पं. लोचन प्रसाद पाण्डे-द्वारा संशोधित, JAHRS., IV, pp. 195-198; IHQ, IX, p. 595
Proceedings, 5th Ori Conf., p. 461.

श्रीरामलाल-पुरी : प्रतिमा-पत्र C.

(XIV) नल राजाओं के लेख

नल वंश के विरुद्ध के लिखी, मिश्रित, मा. इ. सं. म. वै. वर्ष, २० दू. २-२१.

अर्थपति

(१) केसरिका-ताल-पत्र कोरपुट, ओडिशा में प्राप्त
अर्थपति महाराज-वर्ग के प्राचीन

दानश्रेणि सरकार, Epi. Ind., XXVIII, 12

भव्यसमर्पण

(२) श्रीरामलाल-पत्र राज्य-वर्ष ११ (भारत इति-सं. मंडल, हिन्दु, में संरक्षित)
नन्दनवर्ण से प्राप्त। महाराज-वर्ग के प्राचीन और उनके आठ चुड़ौट भ्रमण
को विषयगिर्द नामक प्राम के दान करने का उल्लेख
मालकृतिक
मुक्तिनितिका
विश्वासमूड़ी
शृंगार विरिक
भाषारूप-सूची क्र. १८५५; या. गोस्ये, Epi. Ind., XIX, 102; मा. इ. सं. म. वैमालिक,
वर्ष १, दू. ११५.
(३) पोड़गंग-शिला-वेलक राज्य-नये १२ (पंचवी शाष्टिको का उत्तरायण)
बस्तर राज्य की पूर्व सीमा से ६ मील पर
इस खचित लेख में दिखाया कौन कई दान देने का उद्देश्य तथा भवदरत्वमें पुनः स्थनित भवदरत्वमें के
द्वारा नव वंश की पुनः स्थापना तथा पुर्बको राजविवास के निर्माण कराने का उद्देश्य किया गया है
सी. कुणाम चांद, Epi. Ind., XXI, 153-158,

विलासतुंग
(४) राजीक-शिला-वेलक (राजीक लोचन के मंदिर में संस्करित) (प्रायः ७०० ईसवी)
विलासतुंग के द्वारा-विश्व के मंदिर (= राजी को लोचन) के निर्माण कराने का उद्देश्य
मिरार्थी, Epi. Ind., XXVI, 54.

(१४) नववंशीय राजाओं के सोने के सिके
एडेंगा, कोडेगाँव तहसिल, बस्तर में प्रात
अर्थपति, वसड़ाजा तथा भवदरत के द्वारा प्रचरित [चित्र-फलक ५ क. २४-२६]
सरकारी नामक-खुबी; मिरार्थी, JNSI, II, 29-85; Pl. I, C. 1-7.
भ. ह. सं. मण्डल ब्रमासिक, वर्ष २०, पा ९-२२

५ राष्ट्रकूट-वंश
राष्ट्रकूट वंश के अभ्यन्त के लिये आलंकर, "Rashtrakutas and their times"
Poona 1984. देखिये。

(१) अचलुर-शाखा (२) सहाद-शाखा (३) अन्य शाखाएँ
(१) अचलुर-शाखा

नबराज
(१) पश्चिम-प्राशा-पत्र, शक सं. ६१५ (६७२ ईसवी) [चित्र-फलक ७ क. १२]
(अन्यील से पूर्व की दिशा में १२ मील पर स्थित सागरकुद्म नामक ग्राम से प्राप्त)

पश्चिमांक से नबराज दक्षिणार-द्वारा प्रचलित।
बस्तुपुके, उपनाम तथा अन्य ग्रामों में भूमिका का उद्देश्य।
य. कु. देशपांडे, पराग, वर्ष २ अंक ६ में प्रकाशित; इस ताप-पत्र के पुराण-चित्र की
आवश्यकता प्रतीत होती है
(२) मुख्तारी-तात्त्व-पत्र, शक सं. ६३१ (७०९ ईसवी)
(मुख्तारी-चैत्र में प्राप्त)

नकारक युद्धकर-दारा प्रचलित। जलजीते नामक प्राम के दान करने का उद्देश

किरिणीत्तार (E) = ?
पिपरिका (S) = ?
जलजीता (W) = ?
अर्जनप्राम (N) = ?

स्पष्ट निर्णय नहीं हो सकता।
भान्दारक-सूची क्र. १०८२; हीरालाल-सूची क्र. १६२; हीरालाल, Ind. Ant., XVIII, 230
(१) तिवरबेल-तात्त्व-पत्र (वानार) शक सं. ५५६ (६३१-३२ ईसवी)
(मुख्तारी से १४ मील पर तिवरबेल में प्राप्त। रायबरहूर हीरालाल के पर में संशोधित)

राणूकट नरकार-दारा कवितापुर से प्रचलित। तिष्ठे लेटेक तथा चुर्णलेटक नामक प्राम के दान का
उद्देश। उसके दो अवधारणाओं के द्वारा सारस्वतादि तथा दर्शिवादिन नदियों के तटों पर कार्यक्षेत्र नामक
क्षेत्र के दान का उद्देश।

लिने लेटेक = तिवरबेल, मुख्तारी से १४ मील पर
चुर्णलेटेक = चुर्णलेटेक, तिवरबेल से ५० मील पर
अन्यकोषरन नदी = अंगरेजी नदी तिवरबेल के समाप
कार्यक्षेत्र = कार्यक्षेत्र?

काल का उद्देश और लिपि इत्यादि विसंगतियों के आधार पर यह तात्त्व-पत्र वनवादी माना जाता है।
भान्दारक-सूची क्र. १०८२; हीरालाल-सूची क्र. १६२; हीरालाल, Epi. Ind., XI, 279

(२) समार-शाखा (मान्यकेल)

क्रुष्णाराज प्रथम

(१) मांदूक-तात्त्व-पत्र शक ६९४ (७३२ ईसवी)

नानदुपारी द्वारा से प्रचलित। क्रुष्णाराज के द्वारा उद्योगमत्व में सिख आदिवासी-नान्द गूढ़ में करनेवाले

शाखा को "गणन" नामक प्राम के देने का उद्देश

गणन = गणनीरी
उद्योगमत्व = गणनी उमरावती
नानदुपारी = नानदुपारी?
नागामा प्राम E = नागामा
उम (म) र प्राम S = उमरी
अन्तर्देश प्राम W = अंतर्देश
कपिल प्राम N = बामिलावत

हीरालाल-सूची क्र. १५; मुख्तारी, Epi. Ind., XIV, 121.
गोविंद तुतियाँ

(२) अंजनावती-ताध-पर, शक सं ७२२ (८०० ईसवी) अंजनावती, चौधूर द्वारा प्राप्त
गोविंद तुतियाँ के द्वारा अचलपुर विपथ में स्थित अंजनावती नामक प्राम के १३ भाषाओं को
दान में देने-का उल्लेख

अचलपुर = इलिचपुर
अंजनावती = अंजनावती
संग्रहित E = ? मराठी नाम
गोहोल गोस्वामी S = गोहोल, अंजनावती से दक्षिण में ३ मील पर
सौल-माल-भाम W = सौल, अंजनावती से पश्चिम में २ ३/४ मील पर
अमला, अंजनावती से नैसर्गिक में ५ मील पर
कुयेराम N = कुयेराम, अंजनावती से उत्तर में ३ मील पर
बुद्धपुर = बुद्धपुर, कुयेराम से पूर्व में २ मील पर
बैरागोर (प्रतिवादी भाषा का निवास-स्थान) बांगलागां, अंजनावती से दक्षिण में ३ मील पर
tलेगताक ( " " ) लेगताक, अंजनावती से नैसर्गिक कोण में १० मील पर
मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 8

(३) शिस्वत-ताध-पर, शक सं ७२९ (८०३ ईसवी) शिस्वत, मूलचाप, अचलपुर में प्राप्त
महरकशी से प्रचलित। गोविंद तुतियाँ के द्वारा धाराशिव-निवासी शब्दिक्य भाषा को
सिस्वत तथा मोरण नामक प्रामों के दान का उल्लेख

शिस्वत = शिस्वत, मूलचाप के समाप
माणक (विपथ) = माणक, मूलचाप से पूर्व में ८ मील पर
हिटपुर E = हिटपुर, शिस्वत से पूर्व में २ मील पर
बैरागोर S = बैरागोर, शिस्वत से आगे कोण में ३ मील पर
अयकाटक W = अयकाटक, शिस्वत से पश्चिम में ३ १/२ मील पर
लाखपुर N = लाखपुर, शिस्वत से उत्तर में ५ मील पर
मोरण = ?

मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 204

(४) भारत-दर्शिस-संशोधक मण्डल-ताध-पर, शक सं ७२२ (८१० ईसवी)
महरकशी से प्रचलित। गोविंद तुतियाँ के द्वारा धाराशिव-निवासी शब्दिक्य भाषा को
दान पुर नामक प्राम के दान में देने का उल्लेख

दानपुर = दानपुर, इलिचपुर के दक्षिण में २ मील पर
सुकाटी
तियाडि
इंदुरलिका E = ?
देवभोग तियाडि S = ?
लोहारा-तालुक पत्र, शत्रं. ३३४ (८१२ ईसवी)
(शिलामें कृ. २ के साथ प्रात)
मुक्तापण्ड से प्रचलित। गोविंद तृतीय के द्वारा धाराशिव-निवासी ऋषिपर्यय ब्राह्मण को लोहारा नामक प्राम के दान करने का उद्देश्य

लोहारा = लोहारा, उर्मणा, मुख्तापण्ड से परिक्रमा में ८ मील पर
लोहारा = लोहारा
माधविक = माधवि, लोहारा से भास्य में ३ मील पर
पिपरिक = पिपरिक, लोहारा से ४ मील पर
सामरिक = ?
खेड = ?

मिराश्री, Epi. Ind., XXIII, 212.

कुज्ञराज तृतीय
(६) देवली-तालुक-पत्र, शत्रं. ८३४ (८३० ईसवी) देवली में (कभी से ११ मील) प्रात कुज्ञराज तृतीय के द्वारा, नागपुर-नदिनिर्वर्धन में तालुकपंक्ख नामक प्राम के दान करने का उद्देश्य

नागपुर = नागपुर
नदिनिर्वर्धन = नागर, नागपुर से २० मील पर
तालुकपंक्ख = ?
कठाना नदी S = कठाना नदी
मोहेग्राम W = मोहेग्राम, नागपुर से उत्तर में २० मील पर
बंदीर = मोहेग्राम से इंशाय कोण में २ मील पर
मादाटाडिटर = ?

लीरालाल सूची कृ. ९; भाण्डारकर, Epi. Ind., V, 188
स्पष्टनिर्णय: मिराश्री, N. U. J. (1985),
(७) जुरा प्रशासन

(प्राय: ९.६३-६४ ईसवी)

मेहर राज्य में जुरा नामक प्रमाण में मानवी-द्वारा संशोधित।
मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा के जुरा स्थान में प्राप्त यह लेख, कुणाराज को बेतत्त्र प्रशासन,
कल्प मध्य में है।

कल्पमण्डल राज, Epi, Ind., XIX, 287.

(८) निम्बकुटी-शिलालेख १; खण्डित (चिढ़वाड़ा के दक्षिण में निम्बकुटी प्राम में)

यह शिलालेख प्राम में स्थित देवालय के खंभों पर खुदा है। इसमें राष्ट्रकूट कुण का का नाम
पाया जाता है।

हीरालाल-सूची क्र. १६९; चिढ़वाड़ा गैजेटिवर, प. २२२

(९) निम्बकुटी शिलालेख २; खण्डित (नागपुर-संग्रहालय में संशोधित)

यह खण्डित लेख, जिसमें राष्ट्रकूट कुण का नाम आया है, ठीक तरह से नहीं पढ़ा जा सकता।

हीरालाल सूची क्र. १६९; चिढ़वाड़ा-गैजेटिवर, प. २२२

(३) अन्य शिलालेख

राष्ट्रकूट गोल्डन

(१) बाज़ारीवंद जैन-मृति लेख (१२ वी शताब्दी)

कल्पुरी गयाकल्प के सामने राष्ट्रकूट गोल्डन के द्वारा जास्तिक जिनालय के निर्माण का उल्लेख

भाण्डारकर-सूची क्र. १५८०; हीरालाल-सूची क्र. ४७ कार्यक्रम, A S R, IX, 40;
कालिन्त्र, PR. ASI, WC, 1904, 34, 54.

(२) राघोली-ताम्र-पत्र जयवर्धन (आठवी शताब्दी)

(चालीकट से हूं में ३० मीटर पारोली में प्राप्त; नागपुर-संग्रहालय में संशोधित)

श्रीवर्धनपुर से प्राप्त हुआ। खैल-वंदीय शासन जयवर्धन द्वितीय के द्वारा केतरक बिन्यम में खंडकरा नामक प्राम के दान करने का उल्लेख

श्रीवर्धनपुर =
खंडकरा = खाड़ी; राघोली से पूर्व में ३ मील पर
केतरक = केतरा; राघोली से ६० मील पर

भाण्डारकर सूची क्र. २७; हीरालाल, Epi, Ind., IX, 41.

भवापशील

(३) खामबेड-ताम्र-पत्र (मेहर के समीप खामबेड से प्राप्त) (आठवी शताब्दी)

भवापशील के समय में दामचंदजी नामक योग्यता के द्वारा पंगोलके के समीप स्थित नदिपुर नामक प्राम के दान का उल्लेख

नदिपुर = खामबेड !
व्याख्यान E = बाघोर, खामबेड से इशान्य कोण में १ मील पर
पंगोलके E = पंगोलके, खामबेड से बायाँ कोण में १ एक्ज मील पर
भवापशील S =
चित्रकर N =

मिरार, Epi. Ind., XXII, p. 93-98
(४) ससानियन सिके
(Indo Sassanian Coins)

राष्ट्रवर्ग देखते हुए कई प्रकार के सिके का पता चलता है। किन्तु वह अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके। इस समय में प्रचारित केवल एक मात्र सिके का प्रकार है, जिसका आकार, रूप इत्यादि ससानियन सिके से भिन्न जुड़ता है, और जिनकी संरचना वशत: गतिया के पैरे का होता जाता है। ये तीनों तथा चारों के बनाये गये हैं और उनका एक और अंतर शरीर और दूसरी ओर वह-शरीर का दर्शन होता है।

मध्य प्रदेश में पाये गये ससानियन सिके के प्राथमिक स्थान

(१) बुज्दौला, कांथा के ६ सिके, १३८९ ई भी में प्राचीन
(२) नागपुर, चाँदी के ६ सिके, १३९५ ई में प्राचीन
(३) जबलपुर, चाँदी के २२ सिके, १३०५ ई में प्राचीन
(४) बाळाकोट, चाँदी के १२ सिके
(५) कन्नौज, नागर चाँदी, चाँदी, १९७३ ई में प्राचीन सरकारी नामक-सूची
(६) खूबसुरा, दमोह जिला, १९३१ ई में प्राचीन अंतर सिके का संचय; सरकारी नामक-सूची
(७) मुंगेर, बिहार क्षेत्र में १२१५-१२७ ई में प्राचीन; सरकारी नामक-सूची
(८) लोहारा, मुरितापुर, अन्धकाल १३५०-५२ ई में प्राचीन ४ सिके का संचय; सरकारी नामक-सूची

(५) शंकर-लिपि में उत्कीर्ण लेख

इसी सातवी शताब्दी में उत्तर भारत के कई स्थानों में शंकर-लिपि का प्रचलन बहुत अधिक रहा। इस लिपि के उपयोग में अभित्तिक ठीक तथा स्पष्ट नहीं हो सकता। देशस्थिति के मुक प्रचार के विचार से यह उल्लेखनीय है। कुछ लिखितों के सवाल पर यह गुप्त-काल के लेखों में सम्भित रूप से जा सकते हैं।

मध्य प्रदेश में निम्न-लिखित स्थानों में यह विभाग है।

(१) भादौक, हीरालाल-सूची क्र. २३।
(२) कारीकाली, हीरालाल-सूची क्र. ०७।
(३) रामटेक, टर्न-द्वारा संरचना, JBOAS, Dec. 1933.
(४) निघाँ, हीरालाल-सूची क्र. ३१।
(६) शिलाहर-युपारे, Epi. Ind., XXII, 30.
(७) निकित, कल्नाल-गॉडिया के द्वारा सूचना-प्राप्त
6 कल्चुरी वंश
(१) त्रिपुरी-शाखा (२) रतनपुर-शाखा

कल्चुरी वंश के विवरण के लिये निम्न-सिद्धित सामग्री बहुत उपकारी है
राखलदास बांजार, Haihayas of Tripuri and their Monuments, Memoirs of
the Archaeological Survey of India, 23, Delhi 1931.
बा. वि. मिराशी, Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. IV.
Inscriptions dated according to the Kalachuri-Chedi era
हीरालाल, Kalachuris of Tripuri, ABORI., 1927-28, pp. 280-295.
बा. वि. मिराशी, Coins of the Kalachuri Dynasty, Journal of the Numismatic
Society of India, Vol. III, pp. 21-39

(१) त्रिपुरी-शाखा

लक्ष्मणराज

(१) कारीतलाई-शिला लेख कल्चुरी संतुल ५९३ (८४२ ईस्वी)
(कारीतलाई, कटनी से उत्तर में २९ मील पर)
देशी के महिदा में। यह लेख बालत है, किंतु उसके एक बाद में लक्ष्मणराज का नाम और
समय का उल्लेख आया है
हीरालाल-सूची क्र. ७५; मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 256.
(२) कारीतलाई-शिला-लेख (नागपूर-संप्रदाय में संक्षिप्त)
लक्ष्मणराज के द्वारा खारीबाग-नित्रासी भाषक को मंदिर के लिये दरी-शाखिक नामक प्रामाण के दान
करने का उल्लेख

दरी-शाखिक = दिवी, कारीतलाई से आदेश कोट के में ६. मील पर
चकदहि = चकदहि, कारीतलाई से दक्षिण में ३ मील पर
खारीबाग = ?
अंतरपाट = ?
बटरलिका = ?
धवलगाह में चाँदिपात्तक = ?
माण्डालकर सूची क्र. १५७५; हीरालाल-सूची क्र. ७८; कीलाहार, Epi. Ind., II, 175

(२) छोटी देवरी-शिला-लेख
(छोटी देवरी, जुकेही के पश्चिम में १६ मील पर)
शंकरान ने समय में कई स्थानों में धार्मिक के निर्माण का उल्लेख
माण्डालकर-सूची क्र. १५७६; हीरालाल-सूची क्र. ७६; मिराशी; Epi. Ind., XXVII, 170
सुरीया-शिल्ला-लेख (खबित)
इसमें शंकरगण का नाम अंकित है, ज्ञात होने से पुरा लेख नहीं पढ़ा जा सकता
डान महेशचंद्र चौबे के द्वारा सुचना प्राप्त
मिराशी, Proceedings, All India Ori. Conf. Ahmedabad, 1953; अप्रकाशित

सागर-शिल्ला-लेख
(अन्य स्थलों से प्राप्त सागर-आर्टिफिकल मेस में संरक्षित)
शंकरगण के समय में इण्डूरवेदी के द्वारा धार्मिक स्थान (शिवमंदिर) के बनवाने का उल्लेख
हीरालाल-सूची क्र. ८८; मिराशी, Epi Ind., XXVII, p. 163.

बुधरा-ज़ब्रेव द्वितीय

विलंबी-शिल्ला-लेख
(विलंबी में कटर्मी से ९ मील पर उपवन; नागपुर-संप्रभुवाय में संरक्षित)
(i) केता-वर्धा की पत्नी नोहला-देवी के द्वारा एक विवाह की स्थापना और उसके
खंडों रंगाराश, पोजवी, नागाल, बालधारा पांडे आदि प्राचीन के दान कर्म का उल्लेख।
(ii) नोहला के पूर्व उत्तरातर्जु मात्र के द्वारा धारणा के दान का उल्लेख।

पोजवी = विलंबी से बालधारा की मेन्दी में ९ मील पर
खंडों = केता-वर्धा विलंबी से पूर्व में ६ मील पर
निरधारी = निरधारी, विलंबी से नैनडेव की मेन्दी में १० मील पर
सोहारापुर = सोहारापुर
रंगाराश, नागाल, बालधारा, लक्षजल, गोदपाली, लखनागर, दुर्गबुर, भिन्नानपुर, अंडमान, अग्निभव, आदि अन्य उल्लिखित प्राचीन के आधुनिक स्थानों
का निश्चय नहीं हो सका।

माण्डलकर-सूची क्र. १५३७; हीरालाल-सूची क्र. १६; कविहारी, Epi. Ind., I, २५४
गोड़वाणी देव

पिंवार-शिल्ला-लेख, कलपुर-संवत ७८९ (१०२८ ईस्वी)
(राजौं राज्य में राजौं से उत्तर में २५ मील पर)
गांगेयदेव के समय में असंगा द्वारा लेख करने का उल्लेख
माण्डलकर-सूची क्र. १२२; वर्तमान, A. S. R., XXI, ११३.

कर्णेवद

बनारस-नाथ-पत्र, कल. सं. ७९३ (१०४२ ईस्वी)
(बनारस में प्राप्त, अभी उपवन नहीं)
प्रयाग से अपने पिता गांगेयदेव के आदर्श सिंह पर बनास के ईस अंकित किया हुआ
दान-पत्र में साधन निगरानी को सूची नामक पात्र के दान करने का उल्लेख है
सूची = प्रयाग: दुर्गा, इलाहाबाद के निकट गंगा के द्वारा उत्तर तीर पर
माण्डलकर-सूची क्र. १२२; हीरालाल-सूची क्र. २१; कविहारी, Epi Ind., II, ३०५
(१) गोढळा-ताल्ला-पत्थर, रायबरे ३ (१०४७ ईस्वी)
(मंधापुर तहसील से गोढळा में, हल्लाबाद से ८ मील पर प्रांत)
कलांगरी से। शासक कर्ण के द्वारा, कोशाम गढ़वा में चंपड़ाहा नामक प्रांत के दान करने का उल्लेख
कोशाम = कौशाम, प्रयाग से १४ मील पर
चंपड़ाहा = चन्द्रपाटा, कौशाम से यात्रा करने में ३ मील पर
मान्याकर-सूत्री क. १५७८; हल्ला, Epi. Ind., XI, 142

(२०) रीवा-शिला-देख, कर्ण के समय का; कल. सं. ८०० (१०४९ ईस्वी)
(चौथे चक्रमंत्र-द्वारा १९.३६ ई. में संशोधित)
कर्ण के समय में उनके प्रधान मंत्री के द्वारा शिवालय के निर्माण का उल्लेख। कार्यस्थल
जाल पर प्रकाश दालक देख
निमानी, Epi. Ind., XXIV, 101

(२१) साराक्ष-मूर्ति-देख, कर्ण के समय का; कल. सं. ८१० (१०५८ ईस्वी)
(बनारस से १२ मील पर साराक्ष में प्रांत)
कर्ण के समय में महायान वैदिक का साध-चक्र-प्रतिवेदन नामक विषय के निर्माण का
उल्लेख; मामका-द्वारा जटिल साहित्यिक प्रयोग के लेखन का उल्लेख
मान्याकर-सूत्री, क. १२२५; डा. पीरोल, A.S.I., A.R, 1906-07, p. 100.

(२२) रीवा-शिला-देख, कर्ण के समय का; कल. सं. ८१२; रायबरे ९ (१०६१ ईस्वी)
(रीवा में संशोधित)
कर्ण के समय में ब्रज नामक दो लड़ाईयों में सहायता करने वाले सामान्य के द्वारा
बुलेट नामक शिविर को स्थापना तथा उनकी पल्ली प्रवास (उपनाम नयनवली) के
द्वारा महेश्वरी की मूर्ति को स्थापना करने का उल्लेख।
मान्याकर-सूत्री, क. १२२६; PR,ASI,WC, 1920 21, p. 52.
वानी, MASI., 23, pp. 130-33.

(२३) पारीकोरे-मूर्ति-देख
(विश्वम् में, छुराई रेल्वे स्टेशन से ३ मील पर)
कर्ण के समय में ब्रज-शिल्प के निर्माण करने का उल्लेख
मान्याकर सूत्री क. १५७६; दीक्षित, ASI, AR., 1921-22, p. 80, 115.
(१४) कृष्ण-नाथ-पसार कल. सं. ८२३ (१०६२ ईसवी)
(राजा सम्पूर्ण राज्य की सीमा पर लेखा में प्राप्त)
यास: कृष्ण के द्वारा देवराम पत्रलालगित में से देवराम पंचेट प्राम स्थान दान करने का उद्देश्य
देवराम = देवगद्यन
देवराम पंचेट = ?
भारदारक-सूची क. १२२०; हीरालाल, Epi. Ind., XII, २१०।

(१५) जबलपुर-नाथ-पसार कल. सं. ८२९ (१०६८ ईसवी)
(नागपुर-सम्प्रस्थ-में एक पत्र और दूसरे का प्रतिलिपि उपलब्ध प्राप्त)
यास: कृष्ण के द्वारा जौनपुर में पारीकर नामक प्राम के दान का उद्देश्य
जौनपुर = जबलपुर?
पारीकर = ?
भारदारक-सूची क. १२२४; हीरालाल-सूची क. १२; कौलहौर्म, Epi. Ind, II, ३८।

(१६) निरुक-नाथ-सूची, कल. सं. ९०० (१४६९ ईसवी) (सागर-विजयनगर में संस्कृत)
तीर्थकर की प्रतिमा के मुख्य-निवासी, जसें और जासें के द्वारा निर्माण करने का उद्देश्य।
इस में शासक का नाम नहीं दिया है।

dॉ. दाशित के द्वारा संशोधित, अभ्यासित

गयाकण्ण

(१७) तेवर (निरुक-सूची) शिया-देख, कल. सं. ९०२; (१४६६ ईसवी)
(तेवर में प्राप्त; गयाकण्ण में संरक्षित)
शासक गयाकण्ण और युवराज नरसिंह देव के समय में भार शासन के द्वारा शिच-मंदिर के निर्माण
करने का उद्देश्य।
भारदारक-सूची क. १२२५; हीरालाल-सूची क. १२; कौलहौर्म, Ind Ant., XVIII, २०९।

(१८) बाहरीय-नाम-शृंखला (सारसी शाक्ति)
(जबलपुर से ३३ मील पर बाहरीय में प्राप्त)
गयाकण्ण के सामने राय सुप्रीत गोल्डन के समय में शालिनाय जिनालय में स्थल के निर्माण का उद्देश्य
भारदारक-सूची क. १२४०; हीरालाल-सूची, क. १२; भारदारक, PR ASI., W.C. 1903-४५, ५४।

नरसिंह

(२०) मेघात-शिया-देख; कल. सं. ९०६ (१४६६-५६ ईसवी) (साङ्ग्रास अमेरिका में)
गयाकण्ण की प्रति और राज-माता अड्डेदेवी तथा नरसिंहदेव के समय का शिया-देख।
अड्डेदेवी के द्वारा यादृच्छिक में नागढ़ी नामक प्राम; तथा नरसिंहदेव के दक्षिण में स्थित पहाड़ी
में मकरपाटक नामक; प्राम के दान मट की लपणा; वैधनाय-शिवालय का निर्माण का उद्देश्य
भारदारक-सूची क. १२२३; हीरालाल-सूची क. १२; कौलहौर्म, Epi. Ind., II, १०।
(20) फाल पहाड़-चढान-छेख; कल. सं. ९०८ (११५८ ईसवी)
(नागीद्र राज्य में भूख के निकट)
नरसिंहदेव के समय का शिलालिख
राजस्थान बहालदेव द्वारा 'वाण' नामक पानी की नहर के निर्माण का उल्लेख
माण्डलकर-सूची क. २१३; कीव्हानी, Ind. Ant., XVIII, 212.

(21) अलहागर-शिलालिख; विकम सं. २२१६ (११५९ ईसवी)
(रीवा राज्य में टोस नदी की घाटी में अलहागर से प्राप्त)
कल्याणी शासक नरसिंह और उसके सामूहिक राजकीय संबंध के द्वारा प्रचलित। प्रसिद्धीका
नामक घाट के निर्माण का उल्लेख
माण्डलकर-सूची क. ३०८; कीव्हानी, Ind. Ant., XVIII, 214; काणिचन, ASR., IX, Pl. II.

जयसिंह

(22) जवलपुर-कोतवारी तात्रा-पत्र; कल. सं. ९१८ (११६७ ईसवी)
(जवलपुर के पास प्रायत)
जयसिंह के द्वारा अवरोध के समय अग्र नामक प्राम के दान करने का उल्लेख
माण्डलकर-सूची क. २११३; हीरालाल सूची क. ३७; हीरालाल, Epi Ind., XXI, 91

(23) रीवा-तात्रा-पत्र; कल. सं. ९२६; (११६७ ईसवी)
जयसिंह के सामूहिक कार्यक्रम के द्वारा प्रचलित। अपने स्थानीय चिन्ह के संरचन में
बिरसाहा पत्र में स्थित अलहागर नामक प्राम के दान करने का उल्लेख
कल्याणी कार्यक्रम के समय है।
माण्डलकर-सूची क. २२५; कीव्हानी, Ind. Ant., XVII 224, काणिचन, ASR, XXI 145

(24) जवलपुर शिलालिख; कल. सं. ९२६; (११६७ ईसवी)
(संग्रह नागपुर-संभाला)
जयसिंह के समय में विभाजित द्वारा निर्मित शिलालिख के जिस समष्टि नामक नामकरण विभाजित
टेकमर नामक प्राम; तथा समुद्रपत तथा कंडरलाड़ी तथा बडोह इवादि प्रामों के दान का उल्लेख
नामकरण का उल्लेख : ?
टेकमर = धीरोह; जवलपुर से नैष्ठुप्त कोमना में ६ मीटर पर
समुद्रपत = समंद पिपरीया; जवलपुर से दक्षिण में ४ मीटर पर
बडोह = बडोह
कंडरलाड़ी = शाधम।
माण्डलकर-सूची क. २२४; हीरालाल-सूची क. ६१; मिराथी, Epi Ind., XXV, 131

(25) मेघाग्राट-शिलालिख; कल. सं. ९२८; (११६७ ईसवी)
(मेघाग्राट में काणिचन-द्वारा प्राप्त)
माण्डलकर-सूची क. २१५; काणिचन, ASR., XI, 111.
कीव्हानी, Ind Ant., XVII 217.
(२६) तेवर-शिलाखेल; कड़. सं. १२८ (११७३ ईसवी) (संप्रति अमेरिका में संरक्षित)
विजयसिंह के समय में, महाराज देशारंगित सीक्षा ग्राम के निर्माण के कारण के द्वारा शिलाखेल के निर्माण का उल्लेख
माण्डारकर-सूची के १२४; हीरालाल-सूची के ४२; कीड्हारी, Epi. Ind., II, 18.

(२७) सवंचा दिलाखेल; खंडित (प्रय: ११६०-११८० ईसवी)
विजयसिंह देव के समय का; जिस में केल्हु प्रशासन आया है।
माण्डारकर-सूची के १५८२; कीड्हारी, Ind. Ant., XVIII, 216.

विजयसिंह देव

(२८) कुम्भी-ताप्तार; कड़. सं. १२२ (११८० ईसवी)
(जबलपुर से ईरान कोन में २५ मील पर कुम्भी ग्राम से प्राप्त)
विजयसिंह की माता गोस्वामी देवी के द्वारा संकल्प पहल में चौराही नामक ग्राम के दान का उल्लेख
स्थल-निचर्य नहीं हो सका। ताप्तार अब की अपराप्त है।
माण्डारकर-सूची के २४८; हीरालाल-सूची के ४२; पिट्टेरल, JASB., XXI 116.

(२९) तेवर-शिलाखेल; कड़. सं. ९७२ (१९७२ ईसवी) (तेवर में १९५३ में प्राप्त)
विजयसिंह के समय का यह शिलाखेल के निर्माण को सूचित करता है
दो दृष्टि के द्वारा संशोधित, अक्राशित

(३०) रीवाँ-शिलाखेल; कड़. सं. ९४२ (१९६३ ईसवी)
विजयसिंह के सामने महादेव के द्वारा वीद-धारण पर तत्त्व के बोधन का उल्लेख
माण्डारकर सूची के १२५१; बाणजी, Epi. Ind., XIX, 296; MASI, 23,133-41

(३१) रीवाँ-ताप्तार; भिक्षु संख्या १२५३ (१९६५ ईसवी)
काठैंटी से प्राप्त। विजयसिंह के सामने सत्कुकविवरण के द्वारा पांच ग्रामों को उल्लेख, एवं स्थल-निचर्य नहीं हुआ।
माण्डारकर सूची के ४२; कीड्हारी, Ind. Ant., XVII, 218.

(३२) गोपालपुर-शिलाखेल
विजयसिंह के समय में काश्यप वंशीय महान, जोगला, हरिगं, महाराजी इत्यादियों के द्वारा विशु-मंडिर के निर्माण करने का उल्लेख
माण्डारकर-सूची के १५८२; कीड्हारी, Ind. Ant., XVIII, 218.

(३२) मेघाघाट-शिलाखेल (गोरीशंकर देवाल्य में संरक्षित)
महाराजी गोस्बामी विजयसिंह तथा अजयसिंह का उल्लेख
माण्डारकर सूची के १५८२; हीरालाल सूची के ४२; बाणजी, Haihayas of Tripuri, and their monuments, MASI., 23, p. 142.
(२) रतनपुर शाखा
पुष्पवीर व्रतम

(१) महाकोशाल पुरातत्त्व समिति तात्त्वपं
क़ा. सं. ८२४ (१०६९ ईसवी)
रतनपुर से प्रचालित। सक्त-कोशालिपित महेश्वर द्वारा कौशिक गोश्रिय शासन को असंया नामक प्राम दान करने का उल्लेख

[ कल्पिती शासकों में से यह सबसे प्राचीन तात्त्वक हाल में ही उपलब्ध हुआ है। महेश्वर का अन्य शासकों से समेत इसमें सुधार नहीं है। ]

(२) आमोदा-पाठ-पत्र;
क़ा. सं. ८३२ (१०५९ ईसवी)
( जोगी दे सेना में १० मिल्ल पर आमोदा प्राम के प्राल)
पुष्पवीर के द्वारा केरली नामक शासन को ययानमंडल में बसाहा नामक प्राम के दान करने का उल्लेख

वसहा = वसहा; बिलासपुर से ३२ मिल्ल पर
ययानमंडल = जैनपुर, आमोदा से १० मिल्ल पर
तुमान = तुमान, बिलासपुर के उत्तर से ५२ मिल्ल पर
कोलमंडल = कोलम, पेन्जा जमीनरियाँ में, बिलासपुर की उत्तरी सीमा पर ६० मिल्ल पर

माणदर्कर-सुची क्र. २०२; हीरालाल-सुची क्र. १९६; हीरालाल, Epi. Ind., XIX, 78.

जाज्ञामंडल प्रथम

(३) रतनपुर-शिल्प-खंड;
खंड, क़ा. सं. ८६५ (१११५ ईसवी)
( नागपुर-संस्थालिय में संक्षेपत )
मथ, बरीचा तलाय इत्यादि के जाज्ञामंडल में निर्माण करने का उल्लेख
कोशिडी = कोशिडी, गंजम जिले में
बांडगाज = बांडगाज, चौंदा से ५० मिल्ल पर
काजीका = काजी, बालागाँव जिले में
बांझा =?
तवहरी =?

जाज्ञामंडल = जोगी, पाली रतनपुर से पूर्व में १२ मिल्ल पर
दंडकपुर, नंदालाल, धुकुलो, सहजी, अरुणाकोणशारण, इत्यादि अन्य उल्लिखित स्थान अधि

माणदर्कर-सुची क्र. १२३; हीरालाल-सुची क्र. १९६; हीरालाल, Epi. Ind., I, 34

रतनपुर्य द्वितीय

(४) सिवरी-पारायण-प्रथम;
क़ा. सं. ८७८ (११२३ ईसवी)
रतनपुर के द्वारा अनरक्षी विचय में तिनेगी नामक प्राम के दान करने का उल्लेख
अनरक्षी =?
तिनेगी =?
तुमान = तुमान

हीरालाल-सुची क्र. २१२, हीरालाल, IHQ, III, 31.
(5) सरलोक-ताप्र-पत्र; कल. सं. 880 (१२२८ ईसवी)
जापानी ताप्री के सरलोक प्राम से प्राय (महाकोलक ग्वालियर से संरक्षित)
रन्देश द्वारा अन्नकाली मण्डल में चिन्तातंत्र नामक प्राम के दान करने का उदेश्य
अन्नकाली = ?
चिन्तातंत्र = चिन्तोला, सरलोक के ईशान्य में ८ मील।
हीरालाल-सूची क. २१३; मिराजी, Epi. Ind., XXII, 259.

(6) पारम्परिक-ताप्र-पत्र; कल. सं. 885 (१२२५ ईसवी)
(वित्तस्वर के निकट पारम्परिक प्राम से प्राय)
रन्देश के द्वारा वोल्ड मण्डल में गोरी नामक प्राम के दान करने का उदेश्य
महामहोपाध्याय मिराजी से दूर ना प्राय; अभ्यासित।

(7) कोटगढ-सिल्ला-लेख
(संस्कृत कोटगढ़ प्राम में संरक्षित)
रन्देश के सामग्री वद्राज के द्वारा विकर्खूच में रेतन के मन्दिर तथा वाहिका (अभिधान)
और बग्रम-बागर-सरसु नामक ताप्री के निर्माण का उदेश्य
विकर्खूच = कोटगढ़
मामालकर सूची क. १५६५; हीरालाल-सूची क. २०२।
मामालक, PR, ASI, WC, 1503-04 p. 51, No. 2924.

(8) बकलतार-सिल्ला-लेख (संस्कृत राजपुर-संहाल्य में संरक्षित)
इस लेख में रन्देश द्वितीय तक कलजोरी-शास्त्र तथा सामग्री वद्राज तथा जयसिंह-देव आदि के उदेश्य निम्न हैं।
मामालकर-सूची क. १५६५; हीरालाल-सूची क. २०२; कौलहार, Ind. Ant., XX, 84
मामालक PR, ASI, WC, 1903-05 p. 52 No. 8

प्रथमवेद विंतीय

(9) डैफोरी ताप्र-पत्र; कल. सं. 890 (१२२६ ईसवी)
(डैफोरी में प्राय)
प्रथमवेद के द्वारा विश्व विश्व नामक चाणक को मध्यचातुर्भारी बुढ़ुढ़नी नामक प्राम के दान
में देने का उदेश्य
मध्यचातुर्भारी = संस्कृत विकलस्वर जिला।
बुढ़ुढ़नी = प्राय: डैफोरी
भूकरभारत, Epi. Ind., XXVIII, 146.

(10) कुमाडा-सिल्ला-लेख; कल. सं. 893 (१२२७ ईसवी)
(विकलस्वर जिले में कुछ डांडे के निकट, कुमाडा प्राम में प्राय; वाल्योदा से पश्चिम में ५ मील पर)
प्राय: प्रथमवेद के सामग्री वद्राज के समय का वाहिका लेख।
मामालकर-सूची क. १२२१; हीरालाल-सूची क. २९७; कौलहार, Ind Ant, XX, 84.
(११) विलुप्त-तात्य-पत्र; कला संवत ८९६ (१५५ ईसवी)
(सिवरिनामार्य से आचेर कोण में १० मील पर नागपुर संप्रभाय में संरक्षित)
पृथ्वीदेव के द्वारा देशक नामक मालक को पाण्डरताई नामक ग्राम के
दान करने का अवसर
पाण्डरताई = पाण्डरताई विलासपुर से पश्चिम में ५२ मील पर
नागपुर-संप्रभाय तथा प्रेम हरि-द्वारा सुचना-प्राप्त; अप्रकाशित

(१२) राजीव-शिवाल-खेत; कला संवत ८९६ (१५५ ईसवी)
(राजीव लोचन के मन्दिर में संरक्षित)
पृथ्वीदेव के सातल जगपालदेव के द्वारा सालमा नामक ग्राम के निर्माण तथा इस मंदिर के लिये
सालमा नामक ग्राम के दान तथा कांब्ज़ी में राजाविस्तार के संबंध में कई ग्रामी का
उल्लेख है
बड़ह = बड़ह
महबुब = बदेलबंद में
बॉड़ = सियुरा राज्य में
राठ =
तेम =
तामाल = टमाण
तल्हारी =
सरहद = सोरार
मचका शिखवा = मचका शिखवा
वल्लभ = अभिकुट बस्तर राज्य
कालन =?
कांबो डोंगर = रायपुर से ७७ मील पर
कृषि मुल्ला =?

माण्डरकर-सूची के १६२; दीरालाल-सूची के १६७; कीर्तिकों, Ind. Ant. XVI, 139

(१३) पारगाँव तात्य-पत्र; कला संवत ८९७ (१५६ ईसवी)
(विलासपुर के जिले में पारगाँव से प्राप्त)
पृथ्वीदेव के द्वारा बोड़ महाद ग्राम में गीती नामक ग्राम के दान का उल्लेख
बोड़ = बड़ह, पारगाँव से आचेर कोण में २२ मील पर
gीत = गोर, पारगाँव से १८ मील पर
प्रेम हरि-द्वारा सुचना-प्राप्त; अप्रकाशित

(१४) सिवरिनामार्य मुर्ति-देव; कला संवत ८९८ (१५७ ईसवी)
(नामार्य के मंदिर में संरक्षित)
बाल्सिह और अण्डेरने के पुत्र देवी संप्रभाय में हरि मुर्ति के निर्माण का उल्लेख
माण्डरकर-सूची के १२३; दीरालाल-सूची के २२८, माण्डरकर, PRAS WC. 1903-04, p. 53.
(15) आमोद सप्तरंज - पत्र (१) कलो २०० (१५१९ ईसवी)
(नागपुर-सिंहासन में संस्कृतिकृत)
प्रेमदेव के द्वारा डकार - निवासी पीयु मो और लक्ष्मण नामक श्रामिकों को मध्यप्रदेश में
आवाज नामक प्राम के दान में देने का उठाया
मध्यप्रदेश = बिलासपुर जिले का भाग
आवाज = आसा - माटा, लक्ष्मण जमीन दारियों में
अध्यात्म = ? बुद्ध, जोयद्ध, बोधिशातु के सीमा पर
माण्डाकर-सूची का. १२३३, हीरालाल-सूची का. २००; हीरालाल, I H.Q., I, 409.

(16) कोरी - दिलाल - देह; कलो २०० (१५१९ ईसवी)
(बिलासपुर से आयोज कोरी में १२ मीटर पर कोरी नामक प्राम से वाली)
प्रेमदेव के समय में बुद्धको पुताकेत के द्वारा पंचायतन शिव - मंदिर के निर्माण तथा
सलोगी नामक प्राम के दान का उठाया
सलोगी = सुर्यगी, कोरी से चौथा जो कोरी में ११ मीटर पर
भैरवी, Epi. Ind., XXVII, 176

(17) रतनपुर - सिद्धार्थ - देह; विकर २०३ (१५४९ - ५० ईसवी)
(नागपुर - बिलासपुर में संस्कृतिकृत)
प्रेमदेव के समय में देवगण के द्वारा सामान प्राम में गंगा के निर्माण का उठाया
यह लेख नि. 'सं. १२४३ का माना गया था, विकर संस्कृतिकृत का नि. 'सं. १२०० है
माण्डाकर-सूची का. २२२; हीरालाल-सूची का. १४७; कीर्ति, Epi. Ind., I, 45.
काल - निर्णय: भैरवी, Epi. Ind., XXVI, p. 257.

(18) आमोदा - तात्त्व - पत्र (२) कलो. २०५ (१५५४ ईसवी)
(नागपुर - सिंहासन में संस्कृतिकृत)
प्रेमदेव के द्वारा के शील, पीयु मो और लक्ष्मण नामक श्रामिकों को मध्यप्रदेश में रोजगार नामक प्राम
के दान करने का उठाया
मध्यप्रदेश = बिलासपुर जिले का अंडरा
रोजगार = बुद्ध, लक्ष्मण जमीन दारियों में
माण्डाकर-सूची का. १२९४; हीरालाल-सूची का. २००; हीरालाल, I H.Q., I, 405

(19) रतनपुर - विद्याक्षर - देह; कलो २०० (१५५९ ईसवी)
(नागपुर - सिंहासन में संस्कृतिकृत)
कालिंग लेख का १८-१९ में हादेखार पुरी का उठाया (प्राचीन: हदा प्राम निर्देशित है)
माण्डाकर-सूची का. १२३२; हीरालाल-सूची का. २२५. कालिंग, ASR, XVII.
pl. XX.
(२०) रतनपुर (बालख महादेव) शिखर-केल, कल. स० ९१५ (१९६३-६४ ईस्वी)
(नागपुर-संग्रहालय में संरक्षित)

पृथ्वीदेव और उसके सामन्त श्रद्धारा के समय का लेख

भगवान के द्वारा महादेव में शिव-मंदिर, अन्य स्थलों में १० शिव-मंदिर, बबलुपुर में अंशकाल के
देवालय, रतनपुर में पारदेश के ९ मंदिर, कई बांधों, तथा गोठों में दालव, नारायणपुर में मूर्तियों के
dेवालय, बांधों, चौराहे और तेलास्तूर में दालव, कुमारकोट में शिखर-केल और सदर आदि के निर्माण करने
तथा स्थापना के देवालय के लिए लोकारक नामक ग्राम के दान में देने का उल्लेख है।

महादेव = महादेव, बबलुपुर के नैलखाल कोण में १६ मील पर
बबलुपुर = बबलु, रतनपुर के दक्षिण में १० मील पर
नारायणपुर = नारायणपुर, महानादी के तटपर
बांधों = बांधों, अकेलातारा से बिहारी में ८ मील पर

शेष स्थान अनिवार्य

माणुकर-सुची क. १२२०; हीरालाल-सुची क. २११; भिवाई, Epi. Ind., XXVI, 255.

(२१) महामहेंद्र-शिखर-केल
(बबलुपुर से पूर्व में १५ मील पर)

इस खासियत लेख में पृथ्वीदेव हिंदू और उसके भारत अकादमी का उल्लेख है।

माणुकर-सुची क. १५८५; हीरालाल-सुची क. २०५; बीवेलों, Ind. Ant., XX, 85

(११) पृथ्वीदेव के बना खान तालाब-पति

(१) बांध-ताला-पति

माणुकर-सुची क. १२४६; हीरालाल-सुची क. २२३; हीरालाल, Epi. Ind., XI, 295

(२) घोड़ीया तालाब-पति

माणुकर-सुची क. १२५६; हीरालाल-सुची क. १९५; हीरालाल, Ind. Ant., LIV, 44.

जाज्नदेव

(२२) सिवरानारायण-शिखर-केल: कल. स० ९१९ (१९६८ ईस्वी)

जाज्नदेव द्वितीय के समय में, उनके बंधु के बंधु में से सिवरानारायण का राजाज्ञात में शिखर-केल, नारायणपुर में कुछ दान, बांधों में दालव, पज्जन में अकेला तथा चंद्रचूड़ शिखर-केल के लिए

सोहेज = सोहेज, सिवरानारायण के उत्तर में २० मील पर
pणरिया = पणरिया, सिवरानारायण के आगे कोन में १६ मील पर
बाणार = बाणार, सिवरानारायण के उत्तर में २५ मील पर
pज्जन = पज्जन, गाँव-गाँव तहसील में
चिवोल = चिवोल, सिवरानारायण के पश्चिम में २५ मील पर

माणुकर-सुची क. १२४२; हीरालाल-सुची क. २०३; माणुकर, PR. ASI, W. O., 1904, P. 52-53
(२३) महादेव-शिखर-लेख; कल. सं. ९१९ (१९६८ ईस्वी)

तारक देव के समय में मयदेवालसती के कुम्भी निवासी, और तम्मान में रहने वाले गंगापार के द्वारा 
महादेव में केदार (शिव) मन्दिर के निर्माण करने का उद्देश्य, जिसके कोसमी प्राम राज के द्वारा प्राप्त हुआ था।

महादेव = महादेव, विलासपुर के आधिक्य क्षेत्र में १६ मील पर
कोसमी = कोसम देव, महादेव से ८ मील पर

भाण्डारक-सूची क्र. १२४१; हीरालाल-सूची क्र. २०६; कविकाल, Epi. Ind., I, 39.

(२५) आमोद-तांत्र-पत्र; कल. सं. ९१९ (१९६८ ईस्वी)

अपना प्राण-रक्षण करने के पुरुषार्थ सर्वारो के द्वारा भावना को छूदेकर नामक प्राम के दान 
करने का उद्देश्य

भाण्डारक-सूची क्र. २०२०; हीरालाल-सूची क्र. २०१; हीरालाल, Epi. Ind., XIX, 209

रत्नदेव तुलसी

(२५) खरोंद-शिखर-लेख; कल. सं. ९१३ (१९८२ ईस्वी)

(लक्षणपत्र के देवालय में संक्षिप्त)

रत्नदेव तुलसी के समय में गंगापार के द्वारा लिये गये निम्नलिखित धर्मसंस्थानों का उदेश्य
(खरोंद में) शिवलालय, मठ, शैरी-मण्डप
रत्नपुर में एकत्री देवी का देवालय
वड्ड के अराध्य में शिवलालय तथा मण्डप
हुर्गी में हुर्गी देवी का देवालय

।। में चुंब का मन्दिर
पोसत में शिवलालय
रत्नपुर के उत्तर दिशा में हुर्गी गणपति का देवालय
तिपुरण, निर्गही, उल्लक तथा सेनार इत्यादि प्रामों में तालाब

भाण्डारक-सूची क्र. १२४९; हीरालाल-सूची क्र. १९८; कवितार, Epi. Ind., XIX, 163.

(२६) साहसपुर-मूर्तिश-लेख; कल. सं. ७९४ (१८१२ ईस्वी)

(हुर्ग जिले में हुर्ग से १७ मील पर साहसपुर में संक्षिप्त)

कल्लुरिष-शास्त्री के सामने यशोराज की प्रस्तांति

भाण्डारक-सूची क्र. १२५०; हीरालाल-सूची क्र. २२७; नितिवार, ASR. XVIII, 43.
प्रतापमल्ला

(२७) फेन्ड्रा बंध ताव्र-पत्र; कल. सं. ९६५ (१८८४ ईसवी)
कल्याण बाजार में फेन्ड्रा बंध जाने से प्राप्त
पत्तसार निश्चित से प्रचारित। प्रतापमल्ला के द्वारा अनेकवृ个别 विषय में काया नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख
पत्तसार = परसीड, कॅटा के उत्तर में १ मील पर
anr̥vadī = जांगरी तहसील का अंश
kāyā = कॅटा, पेन्ड्रा बंध के पक्ष में १ ¼ मील पर

मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 1

(२८) विलिगुद-ताव्र-पत्र; कलो सं. ९६६ (१८८५ ईसवी)
विलिगुद के समीप पौनी ग्राम से प्राप्त, राजपूर संहाली में संरक्षित
प्रतापमल्ला के द्वारा हरिदास नामक बालाण को सिरफ नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख
नागपूर-संहाली तथा नागपूर-संहाली तथा नागपूर-संहाली तथा नागपूर-संहाली तथा नागपूर-संहाली तथा नागपूर-संहाली

मिराशी, Epi. Ind., XXIII, 1

कल्लुरी सिके

कल्लुरीओं के सिके के विस्तृत विवरण के लिए निम्न विवरण देखें क्योंकि बहुत उपयोगी हैं।


लोचन प्रसाद पाण्डेय, "Types and legends of Haihaya Coins of Mahakoshala" JAHs., XII, 169.

लोचन प्रसाद पाण्डेय "Haihaya Coins of Mahakoshala" IHQ., XIX, 281.

लोचन प्रसाद पाण्डेय "Silver coins of Haihaya Princes in Mahakoshala " JNSI., III, 41.


कनिशोम, Coins of Medieval India 1894

"A S R., X,

विशिष्ट सिके

नेल्सन राहट, "Gold coins of Gangeyadeva " N. S. (1912), XVII, 101.

लोचन प्रसाद पाण्डेय, " Hanuman type coins of Prithvideva and Jajalladeva " IHQ., XVIII, 375.

लोचन प्रसाद पाण्डेय " Copper coins of Pratapamalla, " IHQ., III, 173.

क्रिपुरी शाखा

इनका प्रसाद राजपूराणारंग, माल्वा, बम्बई राज्य में नामिक, कल्लुरी, देवलगण, मरोल, तुलसी तलाव से
प्राप्त सिके से शून्य दूर प्रदेश तक फ़ैला हुआ माध्यम होता है। मध्यप्रदेश में वे निम्निलिखित स्थानों से
प्राप्त हैं।
पहाड़, जिल्ला बैतह, १९२७ में दान, छंदगुप्त के सिक्कों सहित सरकारी नामक सूची मिलाएँ; JNSI., III, p. 24.
धामोरी, जिल्ला अमरावती; १९२७ में दान १५०० सिक्कों का संचय सरकारी नामक सूची मिलाएँ; JNSI., III, p. 24

गाज़ेपदेव

गाज़ेपदेव के सिक्के, सोना, चाँदी तथा वौं से के मिलते हैं। वे उत्तरप्रदेश के पश्चिमी तथा दक्षिण के सभी जिले में बहुसंख्यक उपलब्ध होते हैं। इसी कारण कल्पनाओं के सबसे प्रथम हांत सिके हैं। सिके के एक और वजी तीन प्रतिमा और दूसरी और विद्युत के चार में तीन पंक्तियों में

(१) श्रीमता
(२) कैलँदा
(३) वः

हैं। अश्वे अश्वे जा सकते हैं। उनका भर्तिन मलिन लिखित अंशों पर आधारित है।

प्रिन्सेप, J A S B., IV (1835) plate L facing p. 668.
प्रिन्सेप, Essays on Indian Antiquities, (1858), p. 291, pl. XXIV.
का. एस. एर, X (1980), p. 21
का. एस. एर, Coins of Mediaval India, (1934), p. 72
रैंडल, Indian coins, (1897), p. 33.
हिन्सेट सिम्थ, Catalogue of Coins in Indian Museum, I,(1906),p.251;plate I, No. 2

मध्यप्रदेश में गाज़ेपदेव के सोने के सिके मलिन लिखित स्थानों में दान उपलब्ध हैं।

प्रिल्लुरी, जत्तलू—श्री. चंद्रचाल सोनी संपाद, तेतर
? जत्तलू—श्री. ए. ए. जोगोकर, बुँआ, संपाद (जत्तलू में खरीदा हुआ सिका)
इलुपुर, रेहरी के समौह, सागर (१९२१ में दान सोने के ८ सिके)
नेपाल राइट, N. S., XVII, (1912), Art 101.

रतनपुर शास्त्र

यह शास्त्र में से केवल चार शास्त्रों के सिके उपलब्ध हैं। वे यह प्रकार के होते हैं।

(१) गाज़ेपदेव सोने का सिका एक और उपलब्ध बोझा और दूसरी और दो या तीन पंक्तियों में श्रीमज्जाक्षेत्र ऐसे अश्वाकर एक और श्रीमज्जाक्षेत्र हन्तनाकृति प्रतिमा और दूसरी और श्रीमज्जाक्षेत्र ऐसे अश्वाकर

tांबे का सिका

(२) रतनपुर इतिहास सोने का सिका एक और संग्रह का चोटा और दूसरी और दो पंक्तियों में श्रीमद्भाव ऐसे अश्वाकर
tांबे का सिका उपरिनिर्देश प्रकार का


(२) पृथ्वीदेव द्वितीय सोने का सिका

बाँदी का सिका

tाँबे का सिका

एक और सवारी का चोड़ा और घुड़सवार दसरी और
dो पंक्तियों में "अग्रमण-प्रतिवाद" ऐसे अक्षर

उपरोक्त प्रकार का

एक और चतुर्दश हनुमान की प्रतिमा बाहे हाल में
gada, सीधे हाथपर पर्वत (?) नीचे देखो लावणे

dो अनुपूर्ण को दबाने वाले, जिसमें से एक बारे के नीचे।

एक और सिंह और दूसरी और तीन पंक्तियों में

"अग्रमण-प्रतिवाद" ऐसे अक्षर

जाज्ञदेव के सोने के सिके दो प्रकार के हैं। एक बड़ा, सिका जगन ६१ प्रेन तक होता है, और
d्वासा होला १५-१५ प्रेन का। दोहे चार सिके प्रायः एक में से सुधार सिके होते हैं। रन्देव द्वितीय
dके सिके भी इसी प्रकार के हैं। उनके ताबे के सिकों में से दोहे और बाद ऐसा भी होता है। दोहे
२३-२५ प्रेन तक और बाद वजन में १०० प्रेन के हैं। पृथ्वीदेव के सोने के सिके, छूटे १५ प्रेन के और
बाद ६२ प्रेन के पाये गये हैं, बिन्दु बाँदी के सिके बहुत पत्ते केले ६ प्रेन के हैं। उनके ताबे के सिके
१०० प्रेन तक के तथा ६८ और ३२ प्रेन के हैं। प्रतापमह जिनके केले ताबे के सिके बाल है, वे २९ से
२८ प्रेन तक के पाये गये हैं।

सिकों का विवरण: कल्पुरी शासकों के सोने के सिकों का विवरण साथ के बड़ों में दिया गया है

<table>
<thead>
<tr>
<th>जाज्ञदेव</th>
<th>रन्देव-द्वितीय</th>
<th>पृथ्वीदेव</th>
<th>प्रासिप्त</th>
<th>वर्ष</th>
<th>रंग्ष्या</th>
<th>परिचय</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१ २ ० ० ० ०</td>
<td>शाहनगर, राज्य</td>
<td>१८६२, (३)</td>
<td>I M C., I, 254-255, pl. XXVI, 11-13</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>१ २८ १ ० ३७ ६०</td>
<td>डलाल सिवार्य, रायपुर, मोरौली, बिलासपुर</td>
<td>१९४०, (१३६)</td>
<td>सरकारी नामक सुत्ति</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>० ० -१२- ० ०</td>
<td>बंजीपुर, बंजारिया, बिलासपुर</td>
<td>१९४०, (१२५३)</td>
<td>सरकारी नामक सुत्ति</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>० ० ० ८ १</td>
<td>बंजीपुर, बंजारिया, बिलासपुर</td>
<td>१९४१, (९)</td>
<td>पं. लोधन प्रसाद पांडेय</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

द्वारा सुचना प्राप्त
रत्नदेव

1940 भगवृद्ध में प्राप्त 15 सिक्कों का संचय; यह सोने के 12 सिक्के उपरिनिरिद्द्द हैं। और शेष 3 रत्नदेव द्वितीय के हैं।

1919 भाजपुर में पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय द्वारा संशोधित

1885 करिब्बा द्वारा संशोधित, CMI, pp. 75-76, No. 45.

1821 करिब्बा द्वारा संशोधित, CMI, pp. 75-76 No. 45.

तलोरा, रायगढ़ में प्राप्त 43 सिक्कों का संचय। पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय

1926 खेळागढ़ में प्राप्त 200 सिक्कों का संचय।

प्रतापमल

1924 भाजपुर में प्राप्त; पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय; IHQ., III, 173-176.

कलचुरी स्थापत्य-कला एवं मूर्ति-कला

असंख्य उदाहरणों की प्राप्ति होने पर भी इस विषय का अध्ययन अभी तक अच्छे हांग से नहीं हो सकता, जैसा हम उवाच कुछ इस मूर्ति-कला या गुणकल्पन मूर्ति-कला के विषय में पढ़ सकते हैं। सबसे अच्छा और विस्तृत विवरण राजस्थान विभाग द्वारा रचित Haihayas of Tripuri and their Monuments, MASI., 23 में किया गया है, किंतु यह केवल त्रिपुरी शाखा के तक महत्त्वपूर्ण है। रत्नपुर शाखा की स्थापत्यकला का परिचय और उनके विविध प्रकार पर अधिक ध्यान केन्द्रित होने बहुत जरूरी है।

त्रिपुरी शाखा:- शासन काल तथा काल-वैश्विक के टूटी से कलचुरी स्थापत्य कला के तीन एंड माना जाता है। इन तीनों काल-हांड के अवशेष मध्यगर्दा बोल्दबंद, विशेषतः राजस्थान में बिके हुए हैं।

उद्भावनेत उनमें से कही अवशेष अभी अच्छे स्थिति में नहीं हैं और अवशेष: होगा उनको तालफर बन दिया है।

मध्यगर्दा में प्राप्त अवशेष

(१) रिथी: सागर-कटनी रेलवे लाईपनर, रिथी स्टेशन से 1 मील पर देवशालय के खण्डम राजम, ASR, XXI, 160, गेंदीवर

(२) सहेला: सागर कटनी रेलवे लाईपनर सेलेवा स्टेशन के समीप, देवशालय के खण्डम भान्नी, MASI., 23.
(१) बरगांव: सूर्या सेशन से ६ मीलपर
कार्यन, ASR., XXI, 101, 163; वांजी, MASI., 23, Plate IX, XVIII a,
XXXIX, b शिलालेख

(४) सिमरा: कटनी के उत्तर में १० मील; देवालयों के खंडहर; शिलालेख;
कार्यन, ASR., XXI, 101, 154., गंडेटेयर प. १७४

(५) बिपुलिर: जबलपुर के वाम पंक्ति में ८ मीलपर तेलर प्रामे के समीप
कार्यन, हस्सियागढ़, कार्यन, चौहान इत्यादि नामोंसे परिचित ८ वर्गों मील का विस्तृत क्षेत्र
कार्यन, ASR., IX, ५४-७७, XVII, ७२.
वांजी, PRASI, WC, ४८९४, p. ५, MASI., 23, pl. XIX-XX, b,
XXI, XXXIV, b, XXXV, XI.
सागर विश्वविद्यालय द्वारा १९५२-५३ खुदाई में राजा कर्ण का एक बड़ा दुर्ग, तथा, गोलखंड मठ
इत्यादि अवशेष प्राप्त हुए हैं।
दौ. दीक्षित, Tripuri Excavation Report

(६) बेड़ानाथ: जबलपुर के पास में १२ मीलपर कलाजुरियों द्वारा निर्मित मन्दिर हुक्काक में ६४
वांजी योगिनी मंदिर
कार्यन, ASR., IX, ६०-६१, XII-XVI,
वांजी, MASI., २३, pl. XXII, a, b, XXIX-XXXIV, pl. LVI, LVII,

(७) नान्द बाण: कैन नरमें स्थित दीप पर देवालय के अवशेष, दांड़ के ईशान्य में ३० मील
कार्यन, ASR, XXI, १६०, pl. XL, XLI,

(८) पनागर: जबलपुर के पास में २४ मील
प्राचीन वराह मूर्ति संरक्षित स्मारक

(९) छोटी देवी: देवालयों के खंडहर शिलालेख
कार्यन, ASR., XXI, १००, १५८, pl. XXVIII, a,

(१०) कारातलाई: कटनी से वारापुरी, देवालयों के खंडहर, और प्राचीन मूर्तियों, शिलालेख

(११) बिहारी: कटनी के ईशान्य में १० मील
कामा कांडला, तथा अन्य देवालयों के खंडहर, शिलालेख
कार्यन, ASR, IX, ३४-३७, pl. VII वांजी, PRASI WC. १९०४ p ३३.
MASI, 23, pl. VII, VIII, XXI a, pl. XXXVII b.

(१२) नंदकारा, कलाजुरी कार्यन मूर्ति शिल्प
AR, ASI, १९३०-३४, pl. LXXVI, b, c.

(१३) मोहा: मोहेशर मंदिर
PRASI, WC; १८९४, p. ६; १९०४, p. ३६.

(१४) मलांडी: वरापुरी
कार्यन, ASR, IX, ४८.
(१५) चन्सॉर, सियानी के समीप
कालिंगम, ASR, VII, 107-118.
(१६) बाह्यरिक, शिलालेख, मूर्ति-शिल्प
PR,ASI, WC, 1904, p. 35; MASI, 23, pl. LII, b.
(१७) बांदकपुर : सागर-कटनी रेले मार्गपर बांदकपुर सेटियाल के उत्तर में १ मील; देवालयों के
खण्डहर
(१८) सागर : सागर के आर्टिकल मेट में एकावत किये हुए और कई अन्य स्थानों से लेये हुए
मूर्ति-शिल्प के अवशेष तथा शिलालेख
कालिंगम, ASR., XXI, 93.
(१९) पोण्डी : देवालय के अवशेष
बानजी, MASI, 23 में उल्लिखित.
(२०) खलनायक : जकलपुर-नागपुर मार्ग के नैक्षेत्र में ३० मील देवालय के खण्डहर
tथा मूर्ति शिल्प के नामते कालिंगम खण्डहर
(२१) कानोहदारारी : कानोहदारारी के देवालय में प्रमाण अवशेष
कालिंगम, PR.ASI, WC, 1894, p 7.
(२२) मदनपुर : कालिंगम, PR.ASI. WC, 1894, p 7.
(२३) गुर्गु दुसङ्गी : सिरों के उत्तर में १२ मील पर मूर्ति-शिल्प के अवशेष
डॉ. महेशचंद्र चौहान, जकलपुर द्वारा संरक्षित
अन्य अवशेष
(२४) अल्हाघाट : राष्ट्रीय राज्य
मूर्ति शिल्प के अवशेष, शिलालेख
कालिंगम, ASR., XXI, 114, plate XXVIII.
(२५) अमरकण्ठक : राष्ट्रीय राज्य
देवालय तथा मूर्ति शिल्प के अवशेष [चित्र १० क्र १७]
कालिंगम, A.S.R., VII, 227-234, pls. XX, XXI.
बानजी, MASI, 23, pl. XIII-XVI. XLIX, LI, LII, a, LV-LVI,
(२६) चन्द्रेश : राष्ट्रीय राज्य देवालय, मठ के अवशेष, तथा शिलालेख
कालिंगम, ASR,XIII,6-11;pls I-IV. PRASI, WC,1921, p.82-85
बानजी, MASI, 23, pl I-IV.
(२७) गुर्गु तथा मसीन : राष्ट्रीय राज्य देवालय तथा मूर्ति-शिल्प के अवशेष
kालिंगम, ASR., XIII, 13; XIX, 85, pl. XX; XXI, 149-153
pl. XXXV.
बानजी, MASI, 23 pl V-VI, pl XXV-XXVI, XXVII,
XXXVII a XXXIX, a ,LIV, a; PRASI, WC, 1921, p. 76-81
(28) परैनी : रीवा राज्य; वराह मूर्ति-शिल्प
कार्यक्रम, ASR., XXI, 158.

(29) सोहागपुर : रीवा राज्य; देवालय तथा मूर्ति शिल्प PR,ASI., WC, p. 91-96.
कार्यक्रम, ASR., VII, 240-45, plate XX, XXI.
बानजी, MASI., 23, pl. X-XII XL-XLV, XLVIIIa LV.

(30) मरई :
बानजी, MASI., 23, pl. XXa, XXXVIII, XLVI, b, XLVII, a,

(31) बैतलाव : रीवा राज्य; देवालय के खण्डहर
बानजी, MASI., 23, pl. XXIV, PR,ASI., WC; 1921, pp. 75-76.

(32) बैजाव : रीवा राज्य; देवालय के खण्डहर
बानजी, MASI., 23, pl. XVIII b; PR,ASI., WC, 1921 pp. 81-82

(33) पाल्रेरे,

(34) सारतार,

(35) सतना, ASI. AR, 1925-26 pl, LIX a-b

(36) मैहर, मूर्ति-शिल्प ASI. AR, 1922-23, pl. XL, C.

(37) जुध्या, MASI., 25, pl. L; PR,ASI., WC, 1921 p. 76.

रतनपुर शाखा

रतनपुर शाखा से संबंधित तथा अन्य मथुरा-युगीन अवशेषों का विवरण

जाजह्पुर (अजगीर-पाली) : देवालय तथा अन्य खण्डहर
PR,ASI., W. C., 1904, p. 29; ASR., VII, 204-07; 217-219;
कोटगढ़ : ASR., VII, 212.

तुम्राण : Ind. Ant., 1924, p. 122.

कुलगढ़ : ASR., VII, 211., Ind. Ant., XX, 84.

सोरार : ASR., VIII, 137-142.

मवका सिहावा : ASR., VII, 145-46.

कोणी : Epi Ind., XXVII, 176.

सिवरी नारायण : ASR., XXI, 94; VII, 196-99; PR,ASI., W. C;
1904, p. 30-31

मलार : देवालय तथा अन्य अवशेष ASR., VII, 204.

नारायणपुर : देवालय ASR., VII, 193-94, Pl. XIX; ASI., AR., 1930-34,
Pl. LXXXVII, a-d. [चित्र पत्तक १० क्र. ३२]

रतनपुर : देवालय तथा अन्य खण्डहर ASR., VII, 214, XVII, 72-78

PR,ASI., W. C., 1904, p. 31-32.

बरोद : देवालय, ASR., VII, 201-203; PR,ASI., W. C. 1904, p 32.

साहसपुर : ASR., XVII, 43, Pl. XXII.

पुजारी पाटी : देवालय ASR., XVII, 68; PR,ASI. WC, 1904, p. 32
यादव साम्राज्य

यादवों का पुरा इतिहास अंग्रेजी से प्रकाशित नहीं हुआ। किंतु कतिपय विवरण शिलालेखों, ताम्रपत्रों और तकालीन घंटों द्वारा दाह होते हैं। कई गैर-इतिहासिक भाषाओं में भाषालेख, आदि की दाह सम्बन्धी विवरण संपूर्ण है। फिर भी उसमें निरंतर खोज द्वारा उपलब्ध सामग्री के संकलित करने की आवश्यकता है।

(१) यादव शिलालेख

सिस्य

(१) बारी टाकी शिलालेख; शक १०९८
हीरालाल सूची क्र. २५१; मिराशी, Epi. Ind., XXI, 127.

(२) अम्बापुर शिलालेख; शक ११३३
हीरालाल सूची क्र. २५१; मिराशी, Epi. Ind., XXI, 127.

क्रण

(३) नान्दगांव शिलालेख; शक ११७७
(खैरबंदी देवलाय में संरक्षित)
हीरालाल सूची क्र. २५३; मिराशी, Epi. Ind., XXVII, 9

म. द. सं. म. नैरामालय वर्ग २८, पृ. ८-११

रामचंद्र

(४) रामदेब शिलालेख; शक १२२२
हीरालाल सूची क्र. ३ मिराशी और कुलकर्णी, Epi. Ind., XXV, 7
मिराशी और कुलकर्णी, सरदेवाई स्मारक प्रंज, पृ. ११५

(५) काता शिलालेख; शक १२२५; छुपमा, फेब्रुवारी १९५४ [विवरणक क्र. १२ क्र. ४८]

(६) लांजी शिलालेख (लांजी के देवलाय के लोंगे)
हीरालाल सूची क्र. २८ अम्बाकाशी

यादव रामचंद्र का शक संवत १२२२ का एक अन्य शिला मध्यकाल की पथिमान सीमा पर पांडववादा
(यथान्तर) से दस मील दूर उनके शिखर में स्थित है।

प. हु. देशापाड़, भारत हिति संस्था म. नैरामालय, वर्ग ९.
... ३७ ...

सिंघण के से नातिकों फोटोग्राफ के नातिकों दानों का उलेख अवंतीकरण शिलालेख क्र. २ में किया गया है। चित्र, दक्षिणपुर ऋषभधाम इतिहासार्थी साहित्याचे, खंड २, पृ. ५६ यह लेख से सिंघण द्वारा चौंड के परमारों के आधार से किया हुआ परमार वाद झांकता है।

(२) यादवकालीन अन्य लेख

(१) ठाणेर शाख ११४५ का शिलालेख; हीरालाल सूची क्र. २१
(२) कोरकन, मण्डरा शिलालेख; मार्कस्कित
(३) सिरपुर, बानिय, शाख १२०४ का शिलालेख; हीरालाल सूची क्र. २५३
(४) सातगंगा, बुलागाणा जैनमूर्तिलेख शाख ११५३; हीरालाल सूची क्र. २६४
(५) मार्केत, पंडीत सिंघण का उलेख किया हुआ मार्केत शिलालेख;
कालिक, ASR, IX, १४६-४२; pl. XXX
देशापंडे, मात. ट्रिया. वैमालिक, वर्ष १९, ८५-८८

(३) चौंड के परमारों के लेख व सिक्के

(१) नागपुर संग्रहालय (अमरकंड?) शिलालेख
उदयपुर के समय का लिख. सं. ११६१ (११०४-०५ ईसा)
हीरालाल सूची क्र. १; क्रिस्टियन, Epi. Ind., II, १८०.

(२) डैगरगंगा शिलालेख; जागेर के समय का; श. १०२४ (देशागुप्त द्वारा संबंधित)
मिलिङ, Epi. Ind., XXVI, १७७

(३) उदयदेव का सिक्का (मध्यप्रदेश में प्रात)
सारकरास काल, Numismatic Supplement, XXXIII (१९२०) p. ८२;
Plate XIII, २
प्रो. मिलिङ के मतानुसार यह सिक्का कल्हुरी शास्त्री गांगेयदेव का है
JNSI, III, p. २५, f. n. ३२

(४) हेमांडपती देवताओं की सूची

[ यादवकालीन हेमांडपती देवताओं का निर्माण निम्नांकित स्थानों में हुआ था। यह सूची मंडलित है।]

नागपुर जिला

१. नागारसाने-नागपुर से १८ मील वायुमें
२. अंगोर-जैनघंगा नदी, मण्डरा से दक्षिण में १० मील
३. मूलाना-नागपुर से आश्रय में १४ मील
४. जालपुर-नागपुर से उत्तर में ३ मील
नागपुर से बागवानी में 16 मील
केदोप—नागपुर से बाग व में 20 मील
परसंपति—नागपुर से उत्तर में 15 मील
रामटेक—नागपुर से ईशान्य में 28 मील, संस्कृत स्मारक
सावनेर—नागपुर से बागवानी में 23 मील
बलहार—नागपुर से बागवानी में 20 मील


cांडवा जिला

पोहाना—कर्ण नदी पर हिंगवात से नैष्ठिक में 16 मील
लंधाग बंगवान, 9,000; बांध से 10 मील दक्षिण में
ढाणगांव—आर्बेस से ईशान्य में 25 मील; शाखा 1135 का लेख, हीरालाल सूची क. 11।
कांगिनाम, ASR, VII, 126


cांडवा जिला

आमगांव—पूर से नैष्ठिक में 22 मील
मोजीगांव—पूर से दक्षिण में 5 मील, संस्कृत स्मारक
चाँदपुर—पूर से अप्रेल में 5 मील
चुक्क—पूर से नैष्ठिक में 6 मील, संस्कृत स्मारक
ओरसी—पूर से दक्षिण में 12 मील, संस्कृत स्मारक
सगर्बी—वरारा से पूर में 8 मील
मढावाडी—वरारा से ईशान्य में 46 मील, संस्कृत स्मारक
मारोटी—पूर से वापस में 2 मील, संस्कृत स्मारक
पालबा—पूर से उत्तर में 22 मील, संस्कृत स्मारक
वागनाक—नागरी रेल्वे स्टेशन से दक्षिण में 2 मील
चेव्वां—रांगी रामानदारी में
नलिंबार—चांडवा से ईशान्य में 24 मील, संस्कृत स्मारक

मंदाला जिला

अलबार—मंदाला से दक्षिण में 17 मील
चकोदी—मंदाला से उत्तर में 40 मील
गोजिस्तेला—आमगांव रेल्वे स्टेशन के निकट
कोरंबी—मंदाला से नैष्ठिक में 3 मील; शिलालेख
पिंगलाई—मंदाला से पास 3 मील पर

बालागाह जिला

मीर
... 89 ...

अकोला जिला

32 अन्सिंग — वाशिम से वायत्त में 15 मील
33 वासी टाकली — अकोला से आरोप में 12 मील संरक्षित स्मारक
किल्ला, Mediaeval Temples, pl. XCIX-XC. शिलालेख शक १०९८
34 गोरेगंगा — अकोला से 8 मील
35 कुटाला — अकोला से उद्धर में 24 मील शिलालेख (?)
36 मोडपुर — अकोला से दक्षिण में 8 मील PR,ASI, WC. 1902., p. 9
37 मिरत — अकोला से उद्धर में 12 मील
38 पांत्रा — वालापुर से दक्षिण में 16 मील
39 पाटलेख — अकोला से दक्षिण में 18 मील
40 पिंजरा — अकोला से आरोप में 20 मील शिलालेख, PR,ASI WC. 1902, p. 2
41 सिपलेख — अकोला से दक्षिण में 11 मील
42 व्याला — वालापुर से पूर्व में 8 मील
43 सीरपुर — वाशिम से वायत्त में 12 मील संरक्षित स्मारक, शिलालेख; शक १२३४
भारद्वाज सूची क्र. १२३४ हिरालाल सूची क्र. २५३ किल्ला, Mediaeval
Temples, pl.CHI. PR,ASI, WC. p.3.

भारतवासी जिला

44 लादुर — आनंदेश देवालय; ASI, AR. 1921-22 pl. IX; [चित्र फलक७ क्र.47]

बुलढाणा जिला

45 बुलढाणा — बुलढाणा से पूर्व में 20 मील शिलालेख शक १२२२; Epi Ind.,XXI, 127.
46 बंजारी — मेडक से नैक्षेत्र में 6 मील
47 बंत्री — मेडक से समीप
48 बाघपुरी — मेडक से वायत्त में 8 मील
49 बिलकुली — बुलढाणा से दक्षिण में 14 मील
50 बिलकुली — पिंडचक राजा के नैक्षेत्र में 7 मील, PR ASI, WC., 1902, p. 7.
51 बुलढाणा — बिलकुली से वायत्त में 14 मील
52 बुलढाणा — बिलकुली से दक्षिण में 17 मील संरक्षित स्मारक, PR ASI, WC., 1902, p 3
किल्ला, Mediaeval Temples, pl. CXII.
53 दुधा — बिलकुली से वायत्त में 13 मील; अतितर संदर्भ देवालय
54 गिरोली — बिलकुली नैक्षेत्र में 30 मील
55 कोटाली — मेडकपुर से दक्षिण में 15 मील; संरक्षित स्मारक PR ASI, WC;
1902, p. 7.
56 होनार — मेडक से दक्षिण में 12 मील; संरक्षित स्मारक; PR ASI, WC. 1902,
p. 10-13; किल्ला, Mediaeval Temples, pl. CIV-CV.
57 महाशे: मलकापुर से पश्चिम में 20 मील
58 नानदेश: बिरली से वायव्य में 10 मील
59 साकेगांव: बिरली से पश्चिम में 8 मील; संरक्षित स्मारक, PR,A SI., WC, 1903. p. 16; कृ. लिस्ट Medieval temples, pl. CX.
60 सातगांव: बिरली से उत्तर में 8 मील संरक्षित स्मारक, PR,ASI, WC, 1902, p. 14-16 कृ. लिस्ट Medieval temples, pls. CVI-CIX.
61 सायलेख: मेहकर से नैहंदग में 30 मील
62 बढानी: मेहकर से उत्तर में 18 मील; PR,ASI, WC, 1902, p. 8.
63 माल: बिरली से वायव्य में 22 मील
64 मासकत: बिरली से पश्चिम में 20 मील
65 मेहकर: बुजुर्गणसे अश्रेष्ठ में 36 मील; संरक्षित स्मारक; PR,ASI, WC, 1902, p. 9
66 स्तैलवड़ा: मेहकर से पश्चिम में 12 मील
67 सिरदेश: मेहकर से पश्चिम में 12 मील संरक्षित स्मारक
68 सौनी: ?
69 बस्तवंद: मेहकर से उत्तर में 16 मील
70 मीनरी: बुजुर्गण से पश्चिम में 16 मील
71 सौदी: मेहकर से पूर्व में 6 मील

वाशीम जिला

72 पौराणिक: उमरखेड़ से वायव्य में 6 मील
73 पुस्तक: वाशीम से नैहंदग में 32 मील

यवतमाल जिला

74 बामाठ: दारवा से दक्षिण में 25 मील
75 दुर्गागांव: दारवा से पूर्व में 2 मील, PR,ASI, WC, 1902 p. 5
76 जवकांव: दारवा से ईशान्य में 9 मील PR,ASI, WC, 1902 p. 5
77 जुराए: बुजुर्ग से दक्षिण में 14 मील
78 कल्पनर: केलापुर तालुका में
79 केलापुर: बुजुर्ग से पश्चिम में 28 मील
80 कुलाड़: केलापुर से वायव्य में 25 मील
81 बाट: दारवा से दक्षिण में 6 मील, गंजातियर p. 229 PR,ASI, WC, 1902 p. 6
82 बररवड़ा: दारवा के पूर्व में 10 मील; गंजातियर p. 229 PR,ASI, WC, 1902 p. 5
83 होजागरा: यवतमाल से 211 मील; संरक्षित स्मारक PR,ASI, WC, 1902. p. 4
84 पांडवरवंद: केलापुर तालुका में
85 पार्थरोट: दारवा के पूर्व में 50 मील; संरक्षित स्मारक; PR,ASI, WC, 1902, p. 4.
86 सोने बरोमा: दारवा के उत्तर में 16 मील
87 बाँड: केलापुर तालुका में
नागपुर : गारपैठी : कोला सुरान पहाड़ में 8 गुफाएं, नागपुर के पूर्व में 32 मील
चंद्रा : मंदक : ASR, IX, 121-131, Pl. XIV, XXI-XXII; संरक्षित स्मारक
देवलवाड़ा : मंदक से पश्चिम में 6 मील ASR, IX, 135
गांवैर : मंदक से दक्षिण में 9 मील; जोबनास गुफा; ASR, IX, 121-31
बुगुस : चंद्रा से पश्चिम में 13 मील
आदापापड़ा : इंदौरी नदी के तट पर, टोपागड़ से दक्षिण में 27 मील
संरक्षित स्मारक

मार्ग : रंगी जमीनदारी में गुहा

मण्ड़रा : बिजली : मण्ड़रा निजी के बायक सीमापर
कचरागड़ : दरेकसा लेवे स्टेशन से 2 मील पर (गोपड़)
गायसुख : मण्ड़रा के उत्तर में 20 मील
कोरम्बी : पौनी से बायक में 3 मील
बालाघाट : सौवैं, मिरो से बायक में 6 मील
कचरागढ़ : पचमढ़ : चुदानाथों और ईतिहासिक कल्लूं का बड़ा समुह
तामिया : पचमढ़ से 20 मील
झटट : पचमढ़ से 40 मील
सोनमढ़ : पचमढ़ से 25 मील


१ दुर्गों की सूची

(१) प्राचीन (२) मुसलमानी दुर्ग (३) मराठा शासकों के दुर्ग (४) गोण्ड दुर्ग
(५) अन्य दुर्ग

(१) प्राचीन दुर्ग : मध्यप्रदेश में ब्राह्मण के अतिरिक्त अन्य प्राचीन दुर्ग विवासम नहीं हैं।
(२) मुसलमानी दुर्ग :

नागपुर : कलमेश्वर : नागपुर से पश्चिम में १६ मील; कलस्त सूची;

बांधिरथ : (कई विद्वानों के मतानुसार गोण्ड राजाओं का)

बर्मा : पवार : बर्मा से आशोत में ५ मील शिलालेख

बौद्ध : खड़ोरा : चौंदा से उत्तर में २६ मील; संरक्षित स्मारक

बजवालु : बाथमागाड़ : बजवालु से वायव्य में २० मील शिलालेखों के अनुसार इनमें कलिप 'झमकते' के हैं। धीरालाल सूची

किंगरिया : बांधिरथ से उत्तर में ३ मील

बर्मा : छिद्रदरा से २४ मील
रायपुर: सरचा: रायपुर से नैनिया में ४४ मील ASR, VII, 133-137
सोरार: बाघेश्वर से पश्चिम में ८ मील, ASR, VII, 137-42
होमी: बाघेश्वर से दक्षिण में १६ मील

सागर: रामनगरा: सागर से अम्मे में १२ मील ASI AR, 1923-24, संरक्षित स्मारक
राहतगढ़: सागर से पश्चिम में २५ मील ASI AR 1921-22 संरक्षित स्मारक
मलवान: सागर से उत्तर में २८ मील

हिलिपुर: गाविलगढ़: दिखाला के समीप; संरक्षित स्मारक
द्वारसाह: जिला: जै. सं. १४२५ में अहमदशाह बहमनी के द्वारा निर्मित फारसी शिलालेख: जै. सं. १४७८ अहमदशाह के राज्यकाल का फारसी शिलालेख: जै. सं. १५७७ नरसिंह द्वारा निर्मित संस्कृत शिलालेख: जै. सं. १५७७ (शाखा १४८१) हिमालारोही का जन्म Epi. Indo-Moslemica, 1297-8, p. 10.
हिमालारोही क्र. २४५, २४६, ASI AR, 1923-24

कैमिया: महिजिया असिर: ASR, IX, 113-121, Pl. XIX.
विद्यांग: तापी नदी पर, बांडा से आश्रय में ३० मील; संरक्षित स्मारक
होराकान्त: मोगा: हरि से २५ मील
होराकान्त: होराकान्त से पूर्व में १२ मील
मंडल: सोहगढ़: मंडल से आश्रय में २५ मील
बेंज़ूल: खरबा: बेंज़ूल से दक्षिण में ५ मील
अकोला: एकलपुर: अकोला से पश्चिम में १६ मील; संरक्षित स्मारक
अकोला: एकलपुर: अकोला से पश्चिम में १६ मील; संरक्षित स्मारक
शिलालेखों का समय: जै. सं. १५७७, १७२७; हिमालारोही-सूची क्र. २४५
नरनाथार: अकोला के उत्तर में १६ मील; संरक्षित स्मारक
१४२५ में दुर्ग की निर्मिति
१४८७ महाबली द्वार की निर्मिति
१५२४ तोपों पर उल्लिखित लेख
ASI, AR, 1922-23, हिमालारोही क्र. २५०
मालेनाट: अकोला से वायव्य में २८ मील
मुसलमानी शिलालेख

मध्यप्रदेश पर मुसलमानी शासन होने पर, उनके कार्यालय लेख फारसी भाषा में खुदे हुए उनके कार्यालय मस्जिदों तथा दुर्गों के अंतर्गत प्राप्त हैं। उनमें से कई लेखों का सूची नीचे दिया जाता है। यह हीरालाल सूची पर आधारित है।

हीरालाल सूची

कराग १२-१३
बाझी: बाझी, निचाली के कवर में खुदेहुए लेख
88 कारादा: सागर, दासी दासी के समय का लेख ई. १५१६
89 लिमालाला: सागर, १२ फारसी लेख, ई. १२९० से लेख १५३२ तक के
90 धामोणी: सागर, मस्जिद के निर्माण का उल्लेख, ई. १६७६
91 ग़ह़ों: सागर, बाझा दासी का खाना का मुहतोला का उल्लेख, ई. १५१६
92 केबाज़ा: सागर, ई. १६४०-१६४२, तथा ई. १५०२ में उखानी के लेख
1०३-१०६, १०९ बड़ीसर: नेमान, अकबर, निकाय, दासी जाना, और आदि मोगल शासकों के लेख
1०८, ११० जाहाल: नेमान के लिखे का लेख १४८०; महेंद्र खान का लेख, ई. १५१२
१४२-१५५, १५ नविराष्ट्र: नेमान, अकबर, निकाय, दासी जाना, और आदि मोगल शासकों के लेख
1४७-१५०, १५६, १५७, १५८ बन्दापुर: नेमान कई लेख १५१० से १५५० तक के
1६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७० सुमार हैल: लेख, बाझाल हजार निकाय का उल्लेख
2४५-२५५, २५६, २५७, २५८ ग़व़िलम: नामात, निकाय के निर्माण का लेख; ई. १७३८ का लेख; ई. १५३३
2५८, २५९, २६० तथा हमदान: ताबलगाह का लेख; ई. १५४०-१५४२ से लेख १७६०-१७६२ तक के
2७० तथा दबांग: ताबलगाह, ताबलगाह का लेख; ई. १५४०-१५५० से १५५० तक के
2७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८ जलाजान: बुलदगाह, मस्जिद के निर्माण का लेख; ई. १६३०
(III) मराठा शासकों के दुर्गे

नागपुर जिल्हा: 
नागरक: रामेकेल से दक्षिण में ५ मील केवल तटबंदी सुरक्षित है।
उरमीद: नागपुर से नैनकुल में २८ मील ASR, VII, 118
बड़ारगांव: नागपुर से पश्चिम में २५ मील
गुंगांव: नागपुर से दक्षिण में २० मील

अकोला जिल्हा: 
बिहिंडा: अकोल से अभीय में १८ मील
हिवरखेड़: अकोल से १५ मील
कुरम: मुख्तारपुर से पूर्व में १५ मील
पंचगोळाहार: अकोल से १७ मील
व्याख्या: अकोला से ८ मील

वर्घी जिल्हा: 
आधी: वर्घी से वायव्य में ५२ मील
विकल: (गड़ी) वर्घी से पश्चिम में १८ मील
सोनेगांव: (गड़ी) वर्घी से पश्चिम में १२ मील
अच्छपुर: वर्घी से आक्षेप में १६ मील
अंजी: वर्घी से वायव्य में ९ मील
सेल्हु: वर्घी से ईशान्य में ११ मील
रोहना: वर्घी से वायव्य में २३ मील
नाचणगांव: वर्घी से वायव्य २१ मील
हिंगणी: वर्घी से ईशान्य में १६ मील (अतराती शासनी)
पवनार: वर्घी से आक्षेप में ५ मील

चौंडा जिल्हा: 
बैरागढ़: चौंडा से ईशान्य में ८० मील संरक्षित स्मारक (प्राचीन) ASR, VII, 127, pl XIII
शंकरपुर: चिमुर से ईशान्य १६ मील

मंडरा जिल्हा: 
प्रतापगढ़: मंडरा से ईशान्य में ४० मील; गोण्ड व मराठा अवशेष; संरक्षित स्मारक
संघरी: मंडरा से आक्षेप में २४ मील
पीली: मंडरा से दक्षिण में १२ मील; किले का दृष्टान्त प्रेक्षणी; संरक्षित स्मारक

जवलपुर जिल्हा: 
विजयरायगढ़: कटनी से ईशान्य में १८ मील
दमोह जिला: दमोह:
युगारा कलाँ: दमोह से बायब्ल में १४ मील
जाटाशंकर: दमोह से बायब्ल में ६ मील संरक्षित स्मारक
कानोड़ा: दमोह से बायब्ल में १४ मील
मारियाडोह: दमोह से उत्तर में १२ मील संरक्षित स्मारक
नरसिंघागढ़: दमोह से बायब्ल में १२ मील. सुसाइन्यानी अवशेष भी है
पुराणेश्वरा: दमोह से उत्तर में ९ मील, चंदरों के समय का
रामनार: दमोह से पश्चिम में ६ मील; शक १८२२
रानगिर: दमोह से उत्तर में १२ मील
सिवनी जिला: आदेशांत: लुधानारैण से पश्चिम में ८ मील
छपारा: सिवनी से उत्तर में २२ मील; गोंड अवशेष भी है
अमरावती जिला: बड़नेवा: अमरावती से दक्षिण में ५ मील, मृदी की बनी हुई गड्ढी
सागर जिला: सागर:
बिनेका: सागर से उत्तर में २४ मील
गढ़कोटा: सागर से पूर्व में २८ मील
रेहवी: सागर से आगे में २८ मील
बंसिवा: सागर से बायब्ल में ६९ मील
बुड़ई: सागर से पश्चिम में १२ मील
बड़ोली: सागर से दक्षिण में ३० मील
बेवरी: बुड़ई से दक्षिण में ६ मील, सागर से दक्षिण में ४० मील
लालवाड़ा: सागर से पूर्व में ८ मील
बिलासपुर जिला: महारा: बिलासपुर से आगे में १६ मील
बुड़दाणा जिला: पिपलनार: बिलासपुर से आगे में १६ मील
बाड़ा: बिलासपुर से दक्षिण में १५ मील (गोंडेशीर)
बेवूल जिला: अनेक: बैतूल से दक्षिण में २० मील
नीलावरी: बैतूल से नैकोल में ३२ मील
होंगावाड़ा जिला: बागरा: होंगावाड़ा से पूर्व में १६ मील
निमाइ जिला: भामागढ़: बांडवा से पूर्व में ८ मील
रायपुर जिला: कांगरी: आरंग से उत्तर में १२ मील
(IV) गोड शासकों के दुर्ग
नागपुर जिला: विवाह: नागपुर से उत्तर में १८ मील संरक्षित स्मारक
विवाह: नागपुर से ईशाव्य में १६ मील
जलालशैला: कांगरी से पश्चिम में १४ मील
पारसिवनी: नागपुर से उत्तर में १६ मील
पाटलोंगवाड़ी: नागपुर से बायब्ल में १६ मील
साकेश: नागपुर से बायब्ल में २२ मील
चांदा जिल्ला: चांदा:
वालापुर: चांदा से आपस्थ में ८ मील
मंडक: चांदा से वायम्य में १६ मील
बंदूनखेड़ा: टिपुवंश के समीप
Pौलसाग: वैरागढ़ से नैक्कार्य में २० मील
टिपुवंश: वैरागढ़ से पूर्व में ३८ मील ASR, VII, 130-32

मंडला जिल्ला: मंडला:
प्रतापगढ़: मंडला से नैक्कार्य में ४० मील संरक्षित स्मारक

वालापाट जिल्ला: छांजी: मंडला से आपस्थ में ९० मील
सोंसार: मऊ से पूर्व में ७ मील
हदा: मंडला से नैक्कार्य में ८० मील

जवलपुर: मुज्जमखाल: जवलपुर से पश्चिम में ६ मील संरक्षित स्मारक
ASR. XVII, 51-53

मंगराड़ा: बिलेकी के उत्तर में ६ मील

दमोह:
हदा: दमोह से ईशान्य में २७ मील संरक्षित स्मारक
जटांकर: हदा से वायम्य में ७ मील संरक्षित स्मारक
पंचमगढ़: दमोह से वायम्य में २६ मील
सिंगोरगढ़: दमोह से आपस्थ में २८ मील संरक्षित स्मारक,
ASR, IX, 48-50

कोटा: दमोह से ईशान्य में २२ मील

राजनगर: संरक्षित स्मारक

सागर:
धामोणी: सागर से उत्तर में २९ मील संरक्षित स्मारक
शाहागढ़: सागर से ईशान्य में ३० मील
gadephera: सागर से ईशान्य में ५ मील झांसी शासको का
गौरिश्रम: सागर से दक्षिण में २८ मील
जयसिंगमगढ़: सागर के नैक्कार्य में २१ मील झांसी शासको का
खुरड़: सागर से पश्चिम में ३२ मील
एरण: खुरड़े से पश्चिम में १८ मील संरक्षित स्मारक
gadaskota: सागर से पूर्व में २८ मील
"मिठोरिया: सागर से उत्तर में १८ मील
रमना: गंडा कोटा से जंगल में; झांसी
महीराड़ोह: हदा से उत्तर में १० मील

मंडला: रामनगर: मंडला से पूर्व में १० मील
नरसिंधुर: चौरागढ़: नरसिंधुर से नैन्द्र्य में २० मील संरक्षित स्मारक।
चंपथा: नरसिंधुर से बायर्ग में १४ मील।
भिलार: नरसिंधुर से बायर्ग में २५ मील।
बीतूल: अमखा: बदनूर से १८ मील।
छिदवाड़ा: देवगड़: संरक्षित स्मारक।
दुग: धमखा: दुग से उत्तर में १८ मील संरक्षित स्मारक।
बग्ना: सेलू: बग्ना से ईशान्य में ११ मील, मंजेटेयर।
सीवानी: सोनगड: जुलनादोंन के नैन्द्र्य में २० मील; मंजेटेयर।
यवतमाल: दुग: यवतमाल से आंफ्य में १ मील।

(५) अन्य दुर्गें

नागपुर: कारोल: नागपुर से बायर्ग में १६ मील।
केलोर: नागपुर से बायर्ग में ३० मील।
धापेवाड़ा: नागपुर से बायर्ग में २५ मील।
बग्ना: केशवर: बग्ना से ईशान्य में १७ मील; ASR, IV, १४०।
केशवर: आर्मी से ५ मील।
बायफड: बग्ना से पश्चिम में १२ मील।
चंदा: भेमोराड़ा: चंदा से पश्चिम में ६२ मील।
सेनांव: बोरा से बायर्ग में १३ मील।
रिपाड: बैरागड़ के पूर्व में २४ मील; कौंत्व, ASR, VII, १३१-३३।

मुरुङांक: बहालपुर: चंदा से दक्षिण में ३ मील।
जबलपुर: बालाकोरी: कटनी से नैन्द्र्य में ९ मील (किस्मत सूची।)
दमोह: देवगढ़: दमोह से दक्षिण में १९ मील।
दुग: सोररार: दुग से दक्षिण में १३ मील।
बौद: बालोर से दक्षिण में २२ मील।

भिलासपुर: अजमेरगढ़: अमरकूट के समीप ASR, VII, २१९।
बच्चाई: जोंगार: जोंगार से बायर्ग में २४ मील ASR, VII, २११।
बिहार: सितरी नारायण से दक्षिण में ११ मील।
अकल्पना: भिलासपुर से दक्षिण में १७ मील ASR, VII, २११।
कोसगढ़: चंद्री जमीनदारी में भिलासपुर से ६० मील; ASR, XIII, १५६।
कोटगढ़: जोंगार से बायर्ग में २२ मील संरक्षित स्मारक ASR, VII, २१२।
कोखी: अकल्पना से पश्चिम में ५ मील संरक्षित स्मारक ASR, VII, २१३।
वालागढ़: पाली से उत्तर में २ मील ASR, VII, २१८।
हेंड्रा: अमरकूट से पूर्व में १८ मील।
रतनपुर: भिलासपुर से उत्तर में १६ मील।
बस्तर : गड़बुड़ : सराईपुर से दक्षिण में 15 मील; संरक्षित स्मारक
बैतुरगढ़ :
कुशीगढ़ :
कोनारगढ़ : संरक्षित स्मारक

नेमाड़ : पुनासा : खंडवा से उत्तर में 33 मील
छिंदवाड़ा :
सोसर : छिंदवाड़ा से नैन्दली में 34 मील

सागर : बरेड़ा : सागर से नैन्दली दिशा में 37 मील
वरोशिया कलङ्क : सागर से उत्तर में 30 मील
बिलहर : सागर से दक्षिण में 17 मील
धामोनी : सागर से उत्तर में 29 मील
दुर्राख : खुरद से 9 मील पर
गगा कोटा : सागर से पूर्व में 28 मील
gगतोला : सागर से पश्चिम में 22 मील
dीरापुर : सागर से उत्तर में 47 मील
cटकनेगढ़ : सागर जिला की उत्तरी सीमा पर
भालाथोन : सागर से पश्चिम में 40 मील
नरसिंहगढ़ : सागर से पश्चिम में 6 मील
पिठोलिया : सागर से वायव्य में 12 मील
राजवंश : सागर से दक्षिण में 27 मील
sानीश्वर : सागर से पूर्व में 12 मील
शाहगढ़ : सागर से उत्तर में 43 मील

बालाघाट : हड़ा : बालाघाट से आगरा में 12 मील
नरसिंहपुर : भुवन : नरसिंहपुर से आगरा में 11 मील
रायपुर :
बमर : लवन से वायव्य में 9 मील
gुड़सिंहनी : सिपुर से नैन्दली में 8 मील
gीथपुरी : सिपुर से पश्चिम में 2 मील
रायपुर : इ.स. 1460 में बना हुआ
sाकराख : सिपुर से पूर्व में 36 मील
gड़बुड़राल : रायपुर से पूर्व में 18 मील
cुरग : सिपुर से पूर्व में 211 मील
सिवनी : छपारा : सिवनी से पूर्व में ६ मील  
सोनगढ़ : लखनादीन से मैक्कल में २० मील  
जवलपुर : अमाना : सिहोरा से बायब्य में १२ मील  
अमोदा : लैंगामाफाद से उत्तर में २० मील  
बरगी : जवलपुर से दक्षिण में १४ मील  
हरिद्वार : कटनी से ईशान्य में २० मील  
कनवारा : कटनी से उत्तर में ९ मील  
सलीवां : कटनी से पश्चिम में ११ मील  
यवतमाळ जिला : कलब्राह : यवतमाळ से ईशान्य में १५ मील  
रावेरी : गांगा से दक्षिण में २ मील  
वर्धा जिला : नाचणगंगा : वर्धा से ३० मील  
वाईफाल : वर्धा से पश्चिम में १२ मील  
सोनेगांव : वर्धा से ११ मील  
चौंदा जिला : चन्द्र : चौंदा के उत्तर में ४८ मील  
खटोरा : चौंदा से उत्तर में मील  
सिरोत्चाय : चौंदा से आप्सू में ११६ मील  
अकोला जिला : माना : सुत्तिजापुर से पूर्व में ७ मील
पुरातत्त्वीय अवशेषों की सूची

१ नागपुर जिला

भद्राला : हेमाडपंती मंदिर
भंगोरा : हेमाडपंती मंदिर
उवाली : बृजकार शवस्थान
उमरेड़ : मराठा दुर्ग
कन्केश्वर : ग्रामीणसाधिक अवशेष; दुर्ग
काटेश्वर : ग्रामीणसाधिक अवशेष; दुर्ग
केळेश्वर : हेमाडपंती मंदिर, दुर्ग
कोराडी : बृजकार शवस्थान
कोहली : बृजकार शवस्थान
गारपौली : गुढ़ा
गुमागंड : दुर्ग
गोंडेश्वर : बृजकार शवस्थान
घोरार : बृजकार शवस्थान
जलाल्लेखा : दुर्ग
जािजुर : हेमाडपंती मंदिर
जुनपाणी : बृजकार शवस्थान
टाकठाट : बृजकार शवस्थान
भोपेवाड़ा : दुर्ग
नगरथन : प्राचीन नाम मंदिरस्थ, बाकाटक
राजवाड़ा : तापवाड़ों का प्रासिस्तन्; मराठी दुर्ग
नवैनगंड : ग्रामीणसाधिक अवशेष
नवन्दुर : गुजरालीन मुहरों का प्रासिस्तन्
नागपुर : बाकाटक तामपास्त्रों में उद्योजित

२ वर्धि जिला

आलिपुर : दुर्ग
आंजी : दुर्ग
आधि : दुर्ग
केलखर : दुर्ग के लिये प्रसिद्ध
दायेगंड : बाकाटक तामपास्त्र का प्रासिस्तन्
ढांगा : गुढ़ा
पोहनाम : हेमापंती मंदिर; वायफाय : दुर्ग के लिये प्रसिद्द
विसुर : दुर्गा
विरुष : दुर्गा
रोहणा : दुर्गा
हिमण्याग्नि : (प्राचीन नाम उक्तिपं) आहत-
सुदाराम का प्रतिष्ठापन,
हिमणी : दुर्गा के लिये प्रसिद्द

3 भंडरा ज़िला
काखरग : गुहा
कोरस्वी : यादवकालीन लेख, गुहा
तिलोता त्यारी : उत्तराकार शवस्थान
मिप्पठगांव : उत्तराकार शवस्थान
पीती : प्राचीन गुहाओं का प्रतिष्ठापन; शाखवाने-
कालीन लेख; दुर्गा

4 चांदा ज़िला
अमगांव : हेमापंती मंदिर
कनसारी : मधुयुगीन सिक्कों का प्रतिष्ठापन
केडारार : उत्तराकार शवस्थान
खोटरा : दुर्गा
सरवाई : हेमापंती मंदिर
शियर : प्राचीन गुहाओं का अवशय
गांवरार : प्राचीन गुहा
शुभास : गुहा
शैली : हेमापंती मंदिर
शैली : उत्तराकार शवस्थान
विलुल : हेमापंती मंदिर
बंडमलेहा : दुर्गा
बांडपुर : हेमापंती मंदिर
बांडा : (प्राचीन नाम बाँघान) प्राचीन गुहाओं का प्रतिष्ठापन,
शाखवाने सिक्कों का प्रतिष्ठापन, गौंड दुर्गा तथा
राजवानी, सुस्मानी अवशय
शाखपापड़ा : गुहा
सीधांग : दुर्गा
होली : प्राचीन गुहाओं का अवशय
दादारी : रोमन सिक्कों का प्रतिष्ठापन
देवदासाशाखा : दुर्ग, गुहा
देवेक : मातृकाकैन शिलालेख, बाकाडक लेख
५ वालाघाट जिल्ला

शुंगेरिया : प्राचीन तात्र अवजारों का प्रागतिस्थान
तिरोडी : वालाघाट तात्रपत्रों का प्रागतिस्थान
बालाघाट : वालाघाट तात्रपत्र का प्रागतिस्थान
भरां : हेमांक्ती मंदिर
राघोली : शैलवंशी राजा के तात्रपत्रों का प्रागतिस्थान

६ जचलपुर जिल्ला

अमाना : दुर्ग
अमोदा : दुर्ग
कारीतखाबऱ्य : कलबुरी शिलालेख, मध्यपुराण शिलास्मृति
कुड़म : प्रागतिविज्ञान अवशेष
कुड़ण : गुस्तकालिन मंदिर
कुड़ा : कलाबुरी तात्रपत्रों का प्रागतिस्थान
गोपालपुर : कलबुरी लेखों का प्रागतिस्थान, मध्यपुराण अवशेष, बौद्ध बौद्ध लेखों का प्रागतिस्थान
गुर्जर-दुर्गारी : कलबुरी शिलास्मृति
ढोंगरी-देवरी : कलबुरी अवशेष तथा लेख
जबलपुर : (बड़ा सिमण बहादुर) प्रागतिविज्ञान अवशेष
जबलपुर : प्राचीन नाम जीलोपत्र (?) गुस्तकालिन सिक्कों का प्रागतिस्थान, कलबुरी लेख तथा शिलास्मृति
सिंगाबूङ्ग : गुस्तकालिन मंदिर
तिरूपु (तेवर) : प्रागतिविज्ञान अवशेष, आह्वान मुद्रा, प्राचीन नाम गण-राज्य की मुद्राएँ, मूर्तिकालिन अवशेष, शातवन्ध मुद्रा तथा भाराशेखर, रोमन घुमन पात्रों, कुष्माण सिक्कों इत्यादियों का

७ सागर जिल्ला

पर्यटन : (प्राचीन नाम अर्कियन) आह्वान मुद्राओं, प्राचीन गण-राज्य की मुद्राओं का प्रागतिस्थान, शातवन्ध कालिन शिलालेख, गुस्त शिलालेख तथा शिलास्मृति; दुर्ग
<table>
<thead>
<tr>
<th>दरभंग</th>
<th>कल्याण</th>
<th>हेमराठी</th>
<th>बुधगढ</th>
<th>भावनगर</th>
<th>विजयपुर</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
</tbody>
</table>

8 दमोह जिला

<table>
<thead>
<tr>
<th>दमोह</th>
<th>दुर्ग</th>
<th>कानवारा</th>
<th>दुर्ग</th>
<th>कानवारा</th>
<th>दुर्ग</th>
<th>कानवारा</th>
<th>दुर्ग</th>
<th>कानवारा</th>
<th>दुर्ग</th>
<th>कानवारा</th>
<th>दुर्ग</th>
<th>कानवारा</th>
<th>दुर्ग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
</tbody>
</table>
9 मांडला जिल्ला

कुंकुर मठ: मच्चुर्गुरू जैन (?) देवाराय
रामनगर: गोंडु दुर्गी

10 सितवनी जिल्ला

अदेगाँव: मराठी दुर्गी
छपारा: मराठी दुर्गी
चन्दोसर: कल्बुरी शिलाचवेश
खबनादौं: प्राचीन मणी
दिघोरी: गुड़ा

11 होशंगाबाद जिल्ला

उमरिया: प्रागैतिहासिक अवशेष
सिद्धिया: प्राचीन सुदृढ़ का प्राचीनतावाद
जामुनिया: प्राचीन सुदृढ़ का प्राचीनतावाद
जोगा: दुर्गी
शोंबीवाड़: प्रागैतिहासिक अवशेष
जामुनिया: प्राचीन सुदृढ़ का प्राचीनतावाद
tामिया: प्रागैतिहासिक गड़र, गुफा
पचमड़ी: प्रागैतिहासिक गड़र, गुकारीन लेब,

12 नरसिंहपुर जिल्ला

चवरपथा, चौरागड़, बड़वार, चढ़ई: दुर्गों के नरसिंहपुर: और नरसिंहपुर तद्भव अन्य क्षेत्र:
विभिन्न प्रसिद्ध

13 इतिहासिक पुर जिल्ला

इतिहासिक: (प्राचीन नाम अकलुपुर) गुकारीन सिक्कों का प्राचीनतावाद, दक्षिण-कलिया में गुफासंचय, शहर; मुसमानी दुर्गी
मंजिश: गुफे के लिये प्रसिद्ध
१४ बैतूल ज़िला
अटर : दुर्ग
भत : दुर्ग
लेख : मुक्तमानी दुर्ग
जैरी : गुहा
गोपालतावार : गुहा
शरम : गुहा
तिरक्केड़ : राजकूट तामपत्रो का प्रासिष्टन
पाठरा : गुहा
नगरिचारी : गुहा

नेवा दांगाव : प्राचीन गढ़
पश्चिम : गुजराती सिखों का प्रासिष्टन, बाबाक
तामपत्र तथा कल्पुर्थी सिखों का प्रासिष्टन
बैतूल : गुजरात के समकालीन तामपत्रो का प्रासिष्टन
भोपाल : गुहा
मौड़ीया-कप : प्राचीन गढ़
भैलखेड़ी : दुर्ग
मुरालतार : राजकूट तामपत्रो का प्रासिष्टन
लालबाड़ी : गुहा

१५ छिन्दवाड़ा ज़िला
हृत्या : राजकूट तामपत्रो का प्रासिष्टन
देवगड़ : दुर्ग

निघिरी : राजकूट कालिन लेख तथा मध्ययुगीन शिलालेख
सौर : दुर्ग

१६ रायपुर ज़िला
अंश : गुजरात कालिन जैन देवालय, शरमुर के
समकालीन तामपत्रो का प्रासिष्टन
कुंसल : मध्ययुगीन दुर्ग
कांठदा : दुर्ग
कुर्बी : पाण्डव चंद्र राजाओं के समकालीन इंटे
के देवालय
खादरी : कल्पुर्थी अवशेष
खारियार : शरमुर राजाओं के लेख का प्रासिष्टन
खिरत : कुमायूंक के सिखों का प्रासिष्टन
गाड़-कुलधरी : दुर्ग
मध्ययुगीन दुर्ग
मिरचपुरी : दुर्ग
मन्दिर : दुर्ग
नरुङ्गी : नवी शाताची के ब्रह्म अवशेष
तारापुर : आहत-मुदारा का प्रासिष्टन
झाल सिवनी : कल्पुर्थी सिखों का प्रासिष्टन
देवभालोड़ : कल्पुर्थी कालिन अवशेष
जैरी : दुर्ग

नरायणपुर : कल्पुर्थी कालिन देवालय
पेंड़ावर : कल्पुर्थी लेखों का प्रासिष्टन
चावर : आहत सुदारों का प्रासिष्टन
बोरमुदा : पाण्डव-चंद्र के समकालीन देवालय
राजीव : पाण्डव, नवी शाताची के लेख का
प्रासिष्टन, समकालीन देवालयों का
सम्म
रायपुर : शरमुर राजाओं के लेख का प्रासिष्टन
मध्ययुगीन दुर्ग
सरपुर : दुर्ग
माँजरा : दुर्ग
सिरपुर : पाण्डव चंद्र राजाओं के राजधानी;
इंटे के देवालय शिलालेख, सूर्वी-शिला
अयटर अवशेष
सिराबा : मध्ययुगीन गुहा
सोनलिती : बाजार शाताची
सोरार : दुर्ग
१७ बिलासपुर ज़िला

अकटारा : आहत-मुद्राओं का प्राप्तिस्थान,
ललितारी लेख, दूरी
अजमिरगढ़ : दूरी
अब्बार : कलदुरी अवशेष; दूरी
अमोदा : कलदुरी तामपन का प्राप्तिस्थान
अनिमार : शातवहन कालिन काट लंभ-लेख
कुगडा : कलदुरी लेख तथा अवशेष
कोटगढ़ : कलदुरी लेख तथा अवशेष
कोनी : कलदुरी लेख तथा शिलालेख
कोटम : दूरी
कोरा : दूरी
कोसगढ़ : कलदुरी लेख तथा शिलालेख, दूरी
खरेद : इस देवालय शिलालेख तथा अन्य अवशेष
छोटीया : कलदुरी लेख
बचवेस : रोमन सिक्कों का प्राप्तिस्थान
जानगढ़ पाठी : कलदुरी देवालय तथा अन्य अवशेष, गुड़ा
ठठरी : आहत-मुद्राओं का प्राप्तिस्थान
केरकोणी : (प्राचीन नाम बुकुतुनी) कलदुरी तामपन का प्राप्तिस्थान
तुम्मन : कलदुरी बंग का आध्यात्म, कलदुरी शिलालेख

१८ दुर्ग ज़िला

मूलनी : प्रागैतिहासिक अवशेष
कादबाजर : इतिहास शिलालेख
कावशाहात : इतिहास शिलालेख
बिरचीसर : इतिहास शिलालेख
दुर्ग : शातवहन कालिन लेख, बाकाटक तामपन का प्राप्तिस्थान, दूरी
<table>
<thead>
<tr>
<th>झिल्ली</th>
<th>बांकापुर और नाटक के नेदारों के तालाब, नीरकोंल</th>
<th>नंदगंगा</th>
<th>यादव कल्याण शिलालेख तथा बासु-शिलालेख</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>मोहनपुर</td>
<td>सुबमन पुर का प्राचीनता, यादव कल्याण अवस्था</td>
<td>बेलोरा</td>
<td>बांकापुर मंदिर</td>
</tr>
<tr>
<td>बालराम</td>
<td>कल्याण सिखों का प्राचीनता</td>
<td>बजरु</td>
<td>दुर्ग</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>अकोला जिल्ला</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>अलसिग</td>
</tr>
<tr>
<td>कृत्तिका</td>
</tr>
<tr>
<td>कुरुपा</td>
</tr>
<tr>
<td>मोरावार</td>
</tr>
<tr>
<td>तन्दड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>बिहिइंडा</td>
</tr>
<tr>
<td>नारायण</td>
</tr>
<tr>
<td>निरंजना</td>
</tr>
<tr>
<td>पाटल</td>
</tr>
<tr>
<td>पाटलभोल</td>
</tr>
<tr>
<td>पांडेय</td>
</tr>
<tr>
<td>पिँपीर</td>
</tr>
<tr>
<td>पंचगोपाल</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>चुरूदार्गा जिल्ला</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>आमदपुर</td>
</tr>
<tr>
<td>रंगिन</td>
</tr>
<tr>
<td>रंगीरी</td>
</tr>
<tr>
<td>कोटाली</td>
</tr>
<tr>
<td>साम्राज्य देव</td>
</tr>
<tr>
<td>गिरोही</td>
</tr>
<tr>
<td>बिरहू</td>
</tr>
<tr>
<td>विंचार</td>
</tr>
<tr>
<td>विंचारेदिश</td>
</tr>
<tr>
<td>दुहा</td>
</tr>
<tr>
<td>भोज</td>
</tr>
</tbody>
</table>
राजमेर : हेमाधिपति मंदिर
काठम्या : हेमाधिपति मंदिर
कालिंग : यादव सिक्हों का प्रासिकान, युग्ध, दुर्ग व 
वाली अवशेष
कुंजुद : हेमाधिपति मंदिर
जचच्छागंग : हेमाधिपति मंदिर
जुम्बु : हेमाधिपति मंदिर
झाडगंगा : हेमाधिपति मंदिर
तपेना : हेमाधिपति मंदिर
बांडरी : हेमाधिपति मंदिर
दुधगंगा : हेमाधिपति मंदिर
नेवर : हेमाधिपति मंदिर
पाठराव : हेमाधिपति मंदिर

पांडरवेल : हेमाधिपति मंदिर
यवतमाल : हेमाधिपति मंदिर
वालक : हेमाधिपति मंदिर
वालर्नद : हेमाधिपति मंदिर
वाहारा : हेमाधिपति मंदिर
वाज : हेमाधिपति मंदिर
सॉन बरोदा : हेमाधिपति मंदिर
दुर्ग : दुर्ग
रादारी : दुर्ग
ढोकी : प्रागैतिहासिक अवशेष
परस्मार : प्रागैतिहासिक अवशेष

शुद्धिपत्र

<table>
<thead>
<tr>
<th>श्रृंख</th>
<th>पंक्ति</th>
<th>अशुद्ध</th>
<th>शुद्ध</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>३</td>
<td>१</td>
<td>पहिले हांसियाँ की</td>
<td>पहिले हांसियाँ की</td>
</tr>
<tr>
<td>३</td>
<td>२२</td>
<td>नर्मदा की घाटी</td>
<td>नर्मदा की घाटी</td>
</tr>
<tr>
<td>३</td>
<td>२९</td>
<td>जिलों में</td>
<td>जिलों में</td>
</tr>
<tr>
<td>४</td>
<td>१५</td>
<td>गुहायोयो</td>
<td>गुहायोयो</td>
</tr>
<tr>
<td>१६</td>
<td>११</td>
<td>मंदिरी</td>
<td>मंदिरी</td>
</tr>
<tr>
<td>१८</td>
<td>१०</td>
<td>खिलार्यार</td>
<td>खिलार्यार</td>
</tr>
<tr>
<td>६२</td>
<td>२२</td>
<td>हिंदौरियार</td>
<td>हिंदौरियार</td>
</tr>
</tbody>
</table>
इतिहास-पूर्व काल के हथियार

1. पूर्व-पापण कालीन कुल्हाड़ी; होरंगाबाद
2. पूर्व-पापण कालीन कुल्हाड़ी; होरंगाबाद
3. उत्तर-पापण कालीन चमकरकाख़ा, बुराधाना, सागर
4. उत्तर-पापणाख़ा; त्रिपुरी
5-7. ताप्पाख़ा, खुंगेरीया, बालापाट
8. ताप्पूरीस शम्बल, खुंगेरीया
9 चित्रान्वित गहर : होरंगावाद
१० बृहत्-पापाण-निर्मित श्रव-स्थान: पिंपलगाँव, भंडारा

११ सिंचणपुर के गहरों में प्राचीन चित्रों के कुछ नमूने
मध्य प्रदेश में प्राचीन होनेवाले सिका
(ईसा से पूर्व ३०० से लेकर ई.स. ८०० तक के)

मैयूँ काल

१२ आहत-मुद्रा मैयूँ काल

१३ परण में प्राचीन धर्मपाल का सिका

१४ त्रिपुरी गण-राज्य का सिका

शातवाहन-काल

१५ सिरी सातकर्गी का सिका त्रिपुरी

१६ सातकर्गी सिका तन्हाला

१७ आपितक का सिका वालपुर

१८ सरमन सिका, चकरवेळा

१९ सरमन सुष्मय पदक : खोलापुर, अकोला

शातवाहनोत्तर-काल

२० '... यथन' का सिका, त्रिपुरी
गुस्त-काल

21 चंद्रगुत की सुवर्ण-मुद्रा: हरद्रा

22 चंद्रगुत की सुवर्ण-मुद्रा: सक्कौर

उष्मिद्रितांक मुद्रायें

23 कुमार गुस्त की मुद्रा, खैराल

24-25 नल महद्वत वर्मन की मुद्रायें
P.डँगा, वस्तर

26 नल वराहराज की मुद्रा,
P.डँगा, वस्तर

27 प्रतापमात्र की मुद्रा
वैगुना आकार

राष्ट्रकूट-काल

28 इंडो-ससानियन सिक्का
३० वाकाटक प्रवर्तन के
ताम्रपत्रों से संलग्न
ताम्रपत्र
(५ वीं शताब्दी)
पाठ
वाकाटक-वटमानस
कम्प्राय-विचारित:
राजा: प्रवर्तनस्य
शासनं रिपुशासनम्

२९ सेमरसाल में प्राप शिलालेख
(दूसरी शताब्दी)
31 वाकाटक प्रवरसेन का दुग तालापत्र
5 वीं शताब्दी

32 नाभाराज युद्धासुर के पश्चात तालापत्र का एक पत्र
शक संवत 615
३३ बघोरा में प्राप्त शिला-देख और चित्र

३४ यमुना
गुप्त कालीन मंदिर : तिगराउँ, जबलपुर

३५ कलचुरि शिल्प
पुराता, जबलपुर से प्राप्त
३६ जिन पार्ष्वनाथ
कलुदुर्ग शिल्प; जबलपुर में संरक्षित
२७ पातालेश्वर देवालय : अमरकेटक

३८ विष्णु मंदिर, नारायणपुर, ज़िला रायपुर
कल्चुरि-मुद्रा

३९ गांगेयदेव का सिका

४०-४१ जाजहदेव के सिके

४२-४३ रतनदेव के सिके

४४-४५ पृथ्वीदेव के सिके

४६ प्रतापमह का सिका
यदृच्छिक सर्वप्रथम विक्रय हुए सब संबंधितों के साथ नाम दिया जाय तदर्थ होगा जो काबे देव चारानाथादेव के नामानुसार

४८ यादव रामचंद्र का काटा शिलालेख
शक सम्वत् १२२७

४९ यादव रामचंद्र का पत्र वर्णक
कलम्ब से प्राप्त

५० वाल केसरी की मुहर (Seal)
वालपुर में प्राप्त
५१ मुसलमानी वास्तु-शिल्प : विमलासा, सागर
By The Same Author

(i) महाराष्ट्रांतील भाचैन ताडापट व शिलालेख
   (Selected Inscriptions from Maharashtra)
   Rs. 3

(ii) Etched Beads in India
   Rs. 10

(iii) दक्षिणभारत मध्ययुगीन इतिहासाची लाचने (खंड ४ था)
   Rs. 5

(iv) Explorations at Karad
   Rs. 5

(v) Excavations at Brahmapuri Kolhapur: 1945
   Rs. 30

(vi) Some Beads from Kondapur
   Rs. 12

(vii) मध्ययुगेश के पुरातत्त्व की उपरीत्याळ

(viii) Tripuri Excavation Report: 1952
   Rs. 6